हिन्दी सांध्य दैनिक

प्रखर पूर्वांचल

अखबार नहीं आंदोलन

RNI:UPHIN/2016/68754 www.prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

गाजीपुर से प्रकाशित व वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र, मऊ, बलिया, आजमगढ़, भदोही, मिर्जापुर, जौनपुर, लखनऊ, प्रयागराज, गोरखपुर, कुशीनगर, महाराजगंज तथा देवरिया से प्रसारित

वर्षः 6, अंकः 224, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00, आमंत्रण मूल्य 2.00 31 जनवरी, 2022 दिन सोमवार गाजीपुर/वाराणसी

सीएम योगी का अखिलेश जयंत की जोड़ी पर निशाना

कहा– ये दो लड़कों की जोड़ी दंगा कराने आई है

हापुड़। उत्तर प्रदेश में चुनाव को लेकर नेता लगातार जनता से आशीर्वाद मांग रहे हैं। सभी पार्टियों की ओर से पुरजोर कोशिश की जा रही है। इसी कड़ी में सीएम योगी चुनाव प्रचार करने के लिए धौलाना (हापुड़) पहुंचे। यहां उन्होंने जनता से अगले कार्यकाल के लिए आशीर्वाद मांगा। इसके साथ ही उन्होंने पहले की सपा सरकार पर जमकर निशाना साधा। सीएम ने कहा कि वर्तमान में भारत के प्रथम स्वतंत्र समर में धौलाना के क्रांतिकारियों ने भी अपने आप को बलिदान किया था। पिलखुवा के नगरवासियों का अभिनंदन करता हूं। योगी ने कहा कि फर्क साफ है लोग कहते हैं कि क्या फर्क साफ है। सपा सरकार में दंगा वादी काम था। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के अंदर आपको यह फर्क स्पष्ट देखने को मिलता होगा। 2017 से पहले कोई सुरक्षित नहीं था बेटियां स्कूल नहीं जा पाती थीं। अराजक मंजर था। विकास की योजनाएं ठप पड़ी थीं। गरीबों को शासन की योजनाएं नहीं मिल पाती थीं। विकास का पैसा इत्र वाले के घर में कैद हो जाता था। हर तीसरे दिन बंद रहता था।

लखनऊ में दंगे होते थे लेकिन दंगाइयों खिलाफ कार्रवाई नहीं होती थी। सीएम ने मुजफ्फरनगर के गौरव और सचिन की हत्या का भी जिक्र किया। सपा के संरक्षण में पलने वाले गुंडों ने सचिन और गौरव के निर्मम हत्या की थी। दो लड़कों को जो जोड़ी है ना वह दंगा कराने को आई है। किराना और मुजफ्फरनगर में कितनी गर्मी है शांत हो जाएगी मैं तो मई और जून की गर्मी को भी शांत कर देता हूं। वैक्सीन एवं खाद्यान्न के मामले में गरीबों को गुमराह करने का प्रयास किया। नौजवानों के लिए नौकरी निकलती थी चाचा भतीजा वसूली के लिए निकलते थे। पारदर्शिता के साथ यूपी के नौजवानों को नौकरी मिल रही है। गंगा एक्सप्रेसवे बनने पर 6 घंटे में हापुड़ का पापड़ प्रयागराज पहुंच जाएगा।

भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने हाथरस में जनसंपर्क के दौरान अखिलेश पर साधा निशाना

हाथरस। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने रविवार को उत्तर प्रदेश के जनपद हाथरस में प्रत्याशियों के लिए जनसंपर्क कर वोट मांगे। चामड़ गेट क्षेत्र में जनसंपर्क के दौरान अध्यक्ष की एक झलक देखने के लिए शहरवासियों की भीड़ लग गई। इस दौरान भाजपा अध्यक्ष ने सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव पर हमला बोला और भाजपा शासन की उपलब्धियां गिनाईं। विधानसभा चुनाव में प्रचार के लिए भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा डोर टू डोर संपर्क कर रहे हैं। इसके अलावा पार्टी के कार्यकताओं और शहर के प्रबुद्ध लोगों से बातचीत की। कोविड गाइड लाइन को देखते हुए कार्यक्रम सीमित हैं। सार्वजनिक रूप से रोड शो व रैली जैसा कोई बड़ा आयोजन नहीं किया है। इससे पहले राष्ट्रीय अध्यक्ष नड्डा पुलिस लाइन स्थित हैलीपेड पर हैलीकाप्टर से पहुंचें। यहां उतरने के बाद वे शहर में भ्रमण कर डोर टू डोर संपर्क शुरू कर दिया। वे पत्थर बाजार, चावड़ गेट, किला गेट, नयागंज व अन्य इलाकों में दुकानदारों और घरों पर जाकर लोगों से मिले। इसके बाद वे आगरा रोड स्थित अग्रवाल सेवा सदन में भाजपा के सभी फ्रंटल संगठन के पदाधिकारियों से संवाद करेंगे। इसमें युवा मोर्चा, किसान मोर्चा, पिछड़ा वर्ग मोर्चा, महिला मोर्चा व अल्पसंख्यक मोर्चा के पदाधिकारी भाग लेंगे।

बिहार : पुरबिया एक्सप्रेस का इंजन व डिब्बा दो भागों में बंटा, यात्रियों में मची अफरा-तफरी

बेगूसराय। बिहार के बेगूसराय जिले में एक बड़ा रेल हादसा होने से टल गया। सहरसा से दिल्ली जाने वाली पुरबिया एक्सप्रेस ट्रेन का इंजन और डिब्बा दो भागों बंट गया। इस हादसे के बाद यात्रियों के बीच में अफरा-तफरी मच गई। लोहिया नगर गुमटी के

पास यह हादसा हुआ है। सूचना मिलने के बाद मौके पर रेलवे अधिकारी पहुंच चुके हैं। जानकारी के अनुसार पुरबिया एक्सप्रेस ट्रेन कपलिंग टूटने की वजह से दो पार्ट में बंट गया, जिसके बाद यात्रियों में अफरा-तफरी मच गई। यह हादसा बेगूसराय स्टेशन के ठीक पहले हुआ है। इसकी सूचना ट्रेन के ड्राइवर और गार्ड ने वरीय अधिकारियों को दी, जिसके बाद मौके पर पहुंचे रेलवे के अधिकारियों और कर्मियों द्वारा दो भागों में बंटी ट्रेन को जोड़ने का काम शुरू किया गया है।

भ्रष्टाचार एक दीमक की तरह किसी भी देश को खोखला बना देता है इससे छुटकारा पाने के लिए अपने कर्तव्यों को दे प्राथमिकता : मोदी

नई दिल्ली। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने आज अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' के 85वें एपिसोड के जरिए देश को संबोधित किया। पीएम मोदी का साल 2022 में यह पहला 'मन की बात' कार्यक्रम था, जो आज महात्मा गांधी की पुण्यतिथि के मौके पर 11 बजे की जगह 11.30 बजे शुरू हुआ।? कार्यक्रम में पीएम मोदी ने अपने मन की तमाम बातों को साझा करते हुए भ्रष्टाचार के मुद्दे पर भी बात की, उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार एक दीमक की तरह है, जो देश को खोखला बना देता है, जिससे छुटकारा पाने के लिए उन्होंने देशवासियों से अपने कर्तव्यों को प्राथमिकता देने की बात कही।

भ्रष्टाचार पर बोले पीएम मोदी– प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' में भ्रष्टाचार रूपी दीमक से छुटकारा पाने के लिए,देशवासियों को साथ आकर इसके खिलाफ काम करने को कहा। 'मन की बात' रेडियो प्रसारण में, पीएम मोदी ने कहा कि एक करोड़ से अधिक बच्चों ने उन्हें पोस्टकार्ड के माध्यम से अपने 'मन की बात' भेजी है, जो देश के कई हिस्सों और यहां तक कि विदेशों से भी आए हैं। पीएम मोदी ने बताया कि उत्तर प्रदेश की एक लड़की ने अपने पोस्टकार्ड में लिखा था कि वह 2047 तक भ्रष्टाचार मुक्त भारत देखना चाहती है। पीएम मोदी ने जिस पर अपनी

प्रतिक्रिया देते हुए कहा, 'आपने भ्रष्टाचार मुक्त भारत की बात की है। भ्रष्टाचार एक दीमक की तरह है जो देश को खोखला कर देता है। इससे छुटकारा पाने के लिए 2047 का इंतजार क्यों करें? यह एक ऐसा काम है जो देश के सभी लोगों को, आज के युवाओं को मिलकर करना है, इसे जल्द से जल्द करना है।' प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए कहा? की सभी देशवासियों को अपने कर्तव्यों को प्राथमिकता देना बेहद जरूरी है। उन्होंने कहा, 'जहां कर्तव्य की भावना है, जहां कर्तव्य सर्वोच्च है, वहां भ्रष्टाचार नहीं हो सकता।'

बिहारः टूट की कगार पर महागठबंधन, विधान परिषद चुनाव अकेले लड़ने के मूड में राजद

पटना। बिहार में विधान परिषद चुनावों के लिए अब अधिक समय शेष नहीं रह गया है। ये चुनाव इस साल मार्च-अप्रैल में हो सकते हैं और इससे ठीक पहले कांग्रेस और राष्ट्रीय जनता दल (राजद) का महागठबंधन टूटने की कगार पर पहुंच गया है। ऐसा इसलिए क्योंकि राजद नेता तेजस्वी यादव ने कांग्रेस के साथ मिलकर चुनाव लड़ने से इनकार कर दिया है। तेजस्वी के इस रुख पर कांग्रेस ने कहा है कि पार्टी सभी 24 सीटों पर अकेले चुनाव लड़ने में सक्षम है। 2016 में इन 24 विधान परिषद सीटों पर हुए चुनाव में कांग्रेस ने चार सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे और इनमें से केवल एक सीट पर उसे जीत नसीब हुई थी। इस बार चुनाव में कांग्रेस ने छह सीटों की मांग की थी, जिस पर राजद के साथ सहमति नहीं बन पाई। पिछले साल अक्तूबर में कुशेश्वरस्थान और तारापुर में हुए विधानसभा उपचुनाव में भी राजद और कांग्रेस ने अलग चुनाव लड़ा था और दोनों ही पार्टियों ने अपने-अपने प्रत्याशी खड़े किए थे।

पेगासस जासूसी कांड से जुड़े विवाद पर सुप्रीम कोर्ट में नई याचिका दाखिल, शीर्ष अदालत से लगाई यह गुहार

नई दिल्ली। पेगासस जासूसी कांड से जुड़े विवाद पर अमेरिकी अखबार की एक रिपोर्ट ने संसद के बजट सत्र से ठीक पहले देश की सियासत को फिर गरमा दिया है। वहीं पेगासस के कथित उपयोग पर सुप्रीम कोर्ट में एक नई याचिका दायर की गई है। इस याचिका में सर्वोच्च अदालत से न्यूयार्क टाइम्स की रिपोर्ट का संज्ञान लेने और 2017 में इजरायल के साथ रक्षा सौदे की जांच का आदेश देने की मांग की गई है। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि भारत ने 2017 में इजराइल के साथ दो अरब अमेरिकी डालर के रक्षा सौदे के हिस्से के रूप में पेगासस स्पाइवेयर खरीदा था। अखबार में कहा गया है कि 2017 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की इजरायल यात्रा के दौरान उनकी वहां के तत्कालीन प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के साथ मैत्रीपूर्ण बैठकों के बाद स्पाइवेयर खरीद का सौदा हुआ। इस दावे को लेकर विपक्षी दलों ने सरकार पर हमला बोल दिया है। वहीं अधिकारियों का कहना है कि पेगासस मामला पहले से सुप्रीम कोर्ट के पास है। शीर्ष अदालत ने सुप्रीम कोर्ट के सेवानिवृत्त जज आरवी रवींद्रन की निगरानी में मामले की जांच के लिए एक समिति का गठन किया है।

कार ने बाइक को मारी टक्कर महिला की दर्दनाक मौत, दो घायल

प्रखर चंदवक, जौनपुर। आजमगढ़ वाराणसी मार्ग पर गोनौली गांव के पास तेज रफ्तार स्विफ्ट डिजायर कार ने बाइक को पीछे से जोरदार टक्कर मार दी जिससे कार की चपेट में आने से महिला की दर्दनाक मौत हो गई वहीं महिला सहित दो घायल हो गए। टक्कर इतनी तगड़ी लगीं की महिला कार में फशकर डेढ़ सौ मीटर तक घसीटती चली गई। सूचना पर पहुंची पुलिस घायलों को सीएचसी पहुचाने के साथ कार को कब्जे में ले लिया और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। क्षेत्र के अखईपुर गांव निवासी सलमान खान (18)पुत्र अजीम घर की महिलाओं राजिया खातून (38) व फूलजहां (25)को चंदवक से दवा दिलवाकर घर वापस बाइक से जा रहा था कि आजमगढ़ वाराणसी मार्ग पर गोनौली गांव के पास तेज रफ्तार स्विफ्ट डिजायर कार पीछे से जोरदार टक्कर मार दी जिससे बाइक चला रहा सलमान व राजिया खातून गिरकर घायल हो गए वहीं फूलजहां कार में फशकर घसीटते हुए डेढ़ सौ मीटर तक चली गई जिससे उसकी मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई।सूचना पर पहुंची पुलिस घायलों को सीएचसी पहुचाने के साथ ही शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।कार को कब्जे में लेकर आवश्यक कार्रवाई कर रही है।

केमिकल फैक्ट्री में भीषण आग तीन बच्चों सहित चार की मौत

जयपुर। राजस्थान के जयपुर जिले में रविवार सुबह एक केमिकल फैक्ट्री में आग लगने से तीन बच्चों सहित चार लोग जिंदा जल गए। मृतक बच्चों की उम्र दो से आठ साल की है। आग इतनी भीषण थी कि बच्चों को बचाने गए युवक की भी मौत हो गई। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस, फायर ब्रिगेड और सिविल डिफेंस की मदद से करीब साढ़े तीन घंटे बाद आग पर काबू पाया जा सका। आग बिजली का शार्ट सर्किट होने के कारण लगने की बात सामने आई है। पुलिस के अनुसार, आग धुलारावजी गांव में शंकर लाल की केमिकल फैक्ट्री में लगी। आग में जिन चार लोगों की मौत हुई, वह आग में बुरी तरह से फंस गए थे, जिससे उन्हें बाहर नहीं निकला जा सका। मृतकों में तीन साल की गरिमा, दो साल की दिव्या, आठ साल की जिया, 25 साल का रमेश और 45 वर्षीय पार्वती शामिल है। बच्चों के माता-पिता फैक्ट्री में नौकरी करते थे। वह फैक्ट्री के बाहरी हिस्से में काम कर रहे थे और बच्चे अंदर थे। बच्चों को आग से सुरक्षित बाहर निकालने के लिए फैक्ट्री मालिक का रिश्तेदार रमेश अंदर गया, लेकिन वह खुद बुरी तरह से झुलस गया। उसकी अस्पताल में उपचार के दौरान मौत हो गई। जिला प्रशासन ने जांच के आदेश दिए हैं। एक समाचार एजेंसी के मुताबिक, राजस्थान में जयपुर के जामवा रामगढ़ में रविवार को तारपीन के तेल कारखाने में आग लगने से तीन बच्चों और एक व्यक्ति की मौत हो गई। आग पर काबू पाया गया। यह जानकारी सीओ शिव कुमार ने दी। गौरतलब है कि इससे पहले दिसंबर, 2021 में राजस्थान के कोटा शहर में एक केमिकल फैक्ट्री में भीषण आग लगी थी। आग की खबर के बाद से कोटा प्रशासन के बीच हड़कंप मच गई। यह फैक्ट्री कोटा - झालावाड़ रोड स्थित सिटी माल के पीछे रोड नंबर 3 पर स्थित थी। आग इतनी भयानक ती कि पूरी फैक्ट्री जलती नजर आई।

गोवा चुनाव : चिदबंरम ने टीएमसी पर साधा निशाना, कहा 'राकांपा-शिवसेना से गठबंधन नहीं, लेकिन वे फिर भी दोस्त रहेंगे'

पणजी। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पी चिदंबरम ने रविवार को गोवा विधानसभा चुनाव को लेकर पार्टी की तैयारियों पर बात की। उन्होंने कहा कि गोवा के लिए कांग्रेस का शिवसेना या राकांपा से गठबंधन नहीं हो पाया, जबकि उन्होंने इसके लिए काफी कोशिशें कीं। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा कि गठबंधन न हो पाने के बावजूद इन दोनों पार्टियों की कांग्रेस के साथ दोस्ती रहेगी और वे आगे साथ काम करने के मौके तलाशती रहेंगी।

चिदंबरम को गोवा में विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस की तरफ से वरिष्ठ चुनाव प्रेक्षक की जिम्मेदारी सौंपी गई है। उन्होंने राज्य चुनाव में तृणमूल कांग्रेस के कूदने को लेकर भी निशाना साधा। चिदंबरम ने कहा कि टीएमसी ने कांग्रेस के साथ कोई गठबंधन नहीं किया, जबकि उन्हें इसका प्रस्ताव भी दिया गया था। लेकिन उस पार्टी (टीएमसी) ने कांग्रेस नेताओं को लालच देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। कांग्रेस के इस वरिष्ठ नेता ने साफ किया कि उन्हें पार्टी नेतृत्व की तरफ से टीएमसी से चर्चा करने का कोई निर्देश नहीं मिला लेकर हुए सवाल पर चिदंबरम ने कहा कि इसका फैसला सभी प्रत्याशियों से चर्चा के बाद ही लिया जा सकता है। सीएम सभी की सहमति के बाद ही तय होगा।

है। उन्होंने कहा, "मुझे भरोसा है कि पार्टी नेतृत्व ने सभी तथ्यों और हालात को देखते हुए अपनी नीति तैयार की है।" गोवा के लिए कांग्रेस की तरफ से मुख्यमंत्री पद का दावेदार घोषित किए जाने को चिदंबरम ने कहा कि गोवा के विधानसभा चुनाव कांग्रेस-गोवा फॉरवर्ड पार्टी और भाजपा के बीच हैं। उन्होंने भरोसा जताया कि कांग्रेस इन चुनावों में आसानी से बहुमत हासिल कर लेगी।

घाटी में मुठभेड़ : कश्मीर में आईईडी हमलों का मास्टरमाइंड था आतंकी जाहिद

श्रीनगर। सुरक्षाबलों ने घाटी में अलग-अलग मुठभेड़ों में लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद के पांच आतंकियों को मार गिराया। इसमें जैश का स्थानीय सरगना जाहिद वानी समेत एक पाकिस्तानी आतंकी भी शामिल है। शनिवार शाम को जम्मू-कश्मीर के पुलवामा और बडगाम जिलों में दो जगहों पर मुठभेड़ हुई थी। आईजीपी कश्मीर विजय कुमार ने बताया कि पहली मुठभेड़ दक्षिण कश्मीर के पुलवामा के नायरा इलाके में हुई। इसमें चार आतंकी मारे गए। दूसरी घटना मध्य कश्मीर के बडगाम जिले के चरार-ए-शरीफ इलाके में हुई, यहां एक दहशतगर्द ढेर कर दिया गया। पुलवामा मुठभेड़ में मारे गए चारों आतंकी जैश के थे। मुठभेड़ स्थल से हथियार और गोला बारूद बरामद किया गया है। बडगाम के चरार-ए-शरीफ में हुई मुठभेड़ में लश्कर-ए-तैयबा का आतंकवादी मारा गया। मुठभेड़ स्थल से एक एके-56 राइफल सहित आपत्तिजनक सामग्री बरामद की गई। आईजी ने बताया कि जैश कमांडर जाहिद वानी सहित पांच आतंकवादियों का मारा जाना सुरक्षाबलों के लिए एक बड़ी सफलता है। पिछले 12 घंटों में पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादी संगठनों लश्कर और जैश के खिलाफ ऑपरेशन चल रहा था। आईजी विजय कुमार ने बताया कि कश्मीर में 11 मुठभेड़ों में आठ पाकिस्तानी सहित 21 आतंकवादी मारे गए हैं। आतंकवादियों के खात्मे से युवाओं के संगठन में जुड़ने में कमी आएगी। इससे घाटी में शांति और विकास को बढ़ावा मिलेगा। पुलिस महानिदेशक दिलबाग सिंह ने बताया कि लंबे समय से जैश आतंकी जाहिद वानी की तलाश चल रही थी। इनपुट मिलने के बाद तलाशी अभियान शुरू किया। मुठभेड़ के दौरान पुलवामा में जाहिद वानी और पाकिस्तानी आतंकवादी सहित 3 अन्य को मारा गिराया गया। इसके अलावा अन्य ऑपरेशन में बडगाम में स्थानीय आतंकवादी मारा गया।

भाजपा ने ही गोवा में किया विकास, गांधी परिवार के लिए यह सिर्फ एक छुट्टी मनाने की जगह : अमित शाह

पणजी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह रविवार को एक दिवसीय दौरे पर गोवा पहुंचे हैं। जहां वह जनसभाओं को संबोधित और घर-घर जाकर चुनाव प्रचार भी करेंगे। दाबोलिम हवाई अड्डे पर भाजपा के गोवा चुनाव प्रभारी देवेंद्र फडणवीस, केंद्रीय मंत्री श्रीपद नाइक, गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सदानंद शेत तनवड़े और अन्य ने अमित शाह का स्वागत किया। पोंडा विधानसभा की एक जनसभा में बोलते हुए अमित शाह ने कहा कि भाजपा ने ही गोवा में विकास किया है। गांधी परिवार के लिए गोवा सिर्फ एक छुट्टी मनाने की जगह है। हमने राज्य का बजट 432 करोड़ (2013-14) से बढ़ाकर 2,567 करोड़ (वर्ष 2021) कर दिया है। पूर्व मुख्यमंत्री दिगंबर कामत ने बुनियादी ढांचे के विकास पर कुछ नहीं किया था। हमने वही किया जो हमने वादा किया था। वह पार्टी उम्मीदवारों के समर्थन में पोंडा में एक जनसभा को संबोधित करने से पहले दक्षिण गोवा के बोरिम गांव में साईं बाबा मंदिर में दर्शन किए। भाजपा के एक वरिष्ठ पदाधिकारी ने कहा कि शाह सांवोर्देम निर्वाचन क्षेत्र में घर-घर जाकर प्रचार में भी हिस्सा लेंगे जिसके बाद वह वहां एक जनसभा

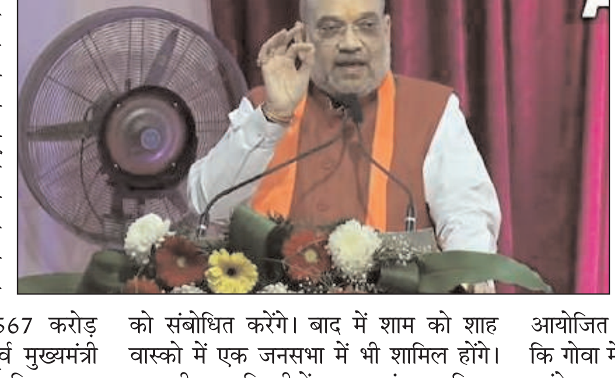

को संबोधित करेंगे। बाद में शाम को शाह वास्को में एक जनसभा में भी शामिल होंगे। साथ ही कहा कि तीनों जनसभाएं 50 प्रतिशत बैठने की क्षमता के साथ घर के अंदर होंगी और इन आयोजनों के दौरान कोरोना से संबंधित सभी प्रोटोकाल का पालन किया जाएगा। भाजपा ने पोंडा, सनवोर्डेम और वास्को विधानसभा क्षेत्रों से क्रमशः रवि नाइक, गणेश गांवकर और दाजी सालकर को उम्मीदवार बनाया है। पार्टी ने गोवा के सभी 40 विधानसभा क्षेत्रों में अपने उम्मीदवार उतारे हैं। बता दें कि भारतीय चुनाव आयोग ने पिछले हफ्ते पांच चुनावी राज्यों में फिजिकल रैलियों और रोड शो पर प्रतिबंध को 31 जनवरी तक बढ़ा दिया था, लेकिन पहले चरण के निर्वाचन क्षेत्रों में अधिकतम 500 लोगों के साथ सार्वजनिक सभा की अनुमति दी थी। हालांकि, इसने राजनीतिक दलों को अधिकतम 300 लोगों या हाल की क्षमता का 50 प्रतिशत की इनडोर बैठकें आयोजित करने की छूट दी थी। गौरतलब है कि गोवा में अभी भाजपा की सरकार है। यहां कांग्रेस, आम आदमी पार्टी और तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) आदि प्रमुख पार्टियां विधानसभा का चुनाव लड़ रही है। भाजपा का मुकाबला इन्हीं तीन पार्टियों से है।

कांग्रेस ने कहा, देश गांधीवादी विचार धारा पर चलेगा, हिंदूवादी पर नहीं

नई दिल्ली। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 74वीं पुण्य तिथि के मौके पर रविवार को कांग्रेस पार्टी की महाराष्ट्र इकाई के अध्यक्ष नाना पटोले ने कहा कि देश के लिए महात्मा गांधी की विचारधारा राह दिखाने वाली रोशनी की तरह है। हमारा देश राष्ट्रपिता गांधी के दिखाए रास्ते पर चलेगा न कि हिंदुत्व की राह पर। नाना पटोले ने आगे कहा कि गांधीवादी विचार हमारे देश की जड़ों में समाए हुए हैं और उन्हें कोई भी कभी भी समाप्त नहीं कर सकता है। वहीं, तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने एक ट्वीट में लोगों से अनुरोध किया कि वह प्रेम और भाईचारे के साथ देश को एकजुट करने में योगदान दें। उन्होंने लिखा, आइए हम शपथ लें कि भारतीय जमीन पर नाथूराम गोडसे के वंशजों और उनके विनाशक विचारों के लिए कोई जगह नहीं है। वहीं, प्रदेश के राज्यपाल आरएन रवि ने महात्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका की सराहना की।

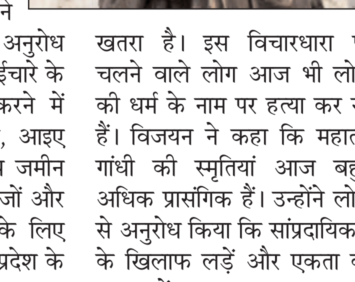

केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने रविवार को कहा कि गांधीजी की मृत्यु की वजह बनने वाली सांप्रदायिक विचारधारा हमारे देश के लिए आज सबसे बड़ा खतरा है। इस विचारधारा पर चलने वाले लोग आज भी लोगों की धर्म के नाम पर हत्या कर रहे हैं। विजयन ने कहा कि महात्मा गांधी की स्मृतियां आज बहुत अधिक प्रासंगिक हैं। उन्होंने लोगों से अनुरोध किया कि सांप्रदायिकता के खिलाफ लड़ें और एकता को बढ़ावा दें।

चिंतन मनन

एयर इंडिया की वापसी

नमक से सॉफ्टवेयर तक का कारोबार करने वाले टाटा समूह ने कर्ज में डूबी सरकारी एयरलाइंस कंपनी एयर इंडिया की 100 फीसदी हिस्सेदारी 18 हजार करोड़ रुपए में खरीद ली है। 27 जनवरी को करीब सात दशक बाद एयर इंडिया की टाटा ग्रुप में घर वापसी हो गई है। इसके कायापलट के लिए टाटा ग्रुप ने व्यापक योजना बनाई है। लेकिन इस योजना को धरातल पर उतारने के लिए उसके पास विशेषज्ञता नहीं है। घाटे में चलने के बावजूद एयर इंडिया के पास काफी परिसंपत्तियां है। लंदन के हीथ्रो एयरपोर्ट पर उसका अपना स्लॉट है। 130 विमानों का बेड़ा और साथ में हजारों ट्रेंड पायलट और क्रू। टाटा समूह को देश के हवाई अड्डों पर 4400 घरेलू और 1800 अंतरराष्ट्रीय लैंडिंग और पार्किंग स्लॉट्स और विदेशों में 900 स्लॉट्स मिलेंगे। इसके अलावा एयर इंडिया के पास करोड़ों डॉलर का रियल इस्टेट है। अब टाटा ने महाराजा को उसका पुराना गौरव लौटाने के लिए व्यापक योजना बनाई है। जानकारों का मानना है कि आने वाले दिनों में एयर इंडिया अंतरराष्ट्रीय एयरलाइन कंपनियों के लिए बड़ी चुनौती पेश कर सकती है। लेकिन यह सब इतना आसान भी नहीं है। एयर इंडिया के विमान पुराने पड़ चुके हैं और उसे सरकारी कार्यशैली से बाहर निकालना भी टाटा के लिए बड़ी चुनौती है। अभी एयर इंडिया देश की सबसे बड़ी इंटरनेशनल एयरलाइन है। लेकिन विदेशी एयरलाइंस की ज्यादा मार्केट हिस्सेदारी है। कोरोना महामारी के आने से पहले विदेशी एयरलाइन कंपनियां एयर इंडिया से ज्यादा सवारियां ले जा रही थीं। विशेषज्ञों का मानना है कि एयर इंडिया की चमक वापस लाना आसान नहीं है। लेकिन अगर टाटा ऐसा करने में कामयाब रहा तो इंटरनैशनल ट्रैफिक में एयर इंडिया के लिए बहुत संभावना है। भारत-अमेरिका रूट्स पर एयर इंडिया की सफलता इस बात का साफ संकेत है कि भारतीय एयरलाइन कंपनियों के लिए डायरेक्ट फ्लाइट्स की मांग है। लेकिन इसके लिए उन्हें यात्रियों की उम्मीदों पर खरा उतरना होगा। साथ ही युवाओं को आकर्षित करने के लिए एयर इंडिया को अपनी इमेज में बदलाव करने की जरूरत है। हवाई यात्रियों में युवाओं की तादाद बहुत अधिक है। अगर एयर इंडिया युवाओं को अपनी तरफ आकर्षित करने में सफल रही तो यह भारतीयों की पसंदीदा एयरलाइन बन सकती है। अभी अंतरराष्ट्रीय यात्रियों में 53 फीसदी संख्या युवाओं की है और अगले पांच साल में यह संख्या 60 फीसदी से ऊपर पहुंच जाएगी। युवाओं की जरूरत एयर इंडिया की मौजूदा सेवाओं से बिल्कुल अलग है। युवाओं को लुभाने के लिए एयर इंडिया को एक मॉडर्न, टेक्नोलॉजी ड्रिवन, इनोवेटिव और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील एयरलाइन बनना होगा। उसे अपनी पुरानी छवि से बाहर निकालना होगा। टाटा ग्रुप के लिए एयर इंडिया का कायापलट करना आसान नहीं है क्योंकि उसके पास इसके लिए विशेषज्ञता नहीं है। एयर इंडिया के कायापलट के लिए टाटा ग्रुप को बाहर से किसी को लाना होगा। लेकिन किसी विदेशी को कमान सौंपना आसान नहीं होगा क्योंकि इसमें महारत रखने वाला कोई व्यक्ति शायद ही भारत आना चाहेगा। एयर इंडिया के पास 40,000 कलाकृतियों का कलेक्शन है जिसमें स्पैनिश कलाकार सल्वाडोर डाली का गिफ्ट किया हुआ एशट्रे भी शामिल है। भारत का विमानन क्षेत्र 20 फीसदी की सालाना दर से बढ़ रहा है। विश्लेषकों का कहना है कि भारतीय बाजार की पूरी क्षमता का दोहन अभी तक नहीं हो पाया है। विशेषज्ञों का कहना है कि एयर इंडिया में टाटा समूह के लिए काफी संभावनाएं हैं। सरकार पहले भी एयर इंडिया को बेचने की कई बार कोशिश कर चुकी थी, लेकिन इसके लिए खरीदार नहीं मिले थे। सरकार ने इस बार एयर इंडिया को बेचने की शर्तों में काफी बदलाव किए थे। साल 2001 में तत्कालीन अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने एयर इंडिया में 40 फीसदी हिस्सेदारी बेचने की कोशिश की थी। उस वक्त लुफ्तहांसा एयरलाइंस, ब्रिटिश एयरवेज और सिंगापुर एयरलाइंस ने इसे खरीदने में दिलचस्पी दिखाई थी।

काम में खलल!

पूछने दो उनको ।
पूछना है काम ।।
काम में खलल ।
कर देता बदनाम ।।
ठीक नहीं ये सार्वजनिक।
ऐसे भड़क जाना ।।
कौन सा है मकसद ।
होगा फिर बताना ।।
संयम ही है गहना ।
ना यह जाना भूल ।।
हो कितनी भी गड़बड़ ।
टूटे ना उसूल ।।
वरना फिर हास्यास्पद ।
स्थिति को प्राप्त ।।
करना था कुछ और ।
होते पर समाप्त ।।

–कृष्णोन्द्र राय

अमर जवान ज्योति को बुझाकर जज्बात और यादें को घुमिल करने की कोशिश

विश्व के सबसे बड़े प्रजातंत्र भारत , भारत की राजधानी व ऐतिहासिक शहर दिल्ली,दिल्ली की धरोहर इंडिया गेट 'इण्डिया गेट पर अवस्थित अमर जवान ज्योति। केन्द्र सरकार द्वारा नेता जी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा लगाना अच्छी बात है, लेकिन सरकार के द्वारा अमर जवान ज्योति अखण्ड ज्योति स्वरूप मशाल को बुझा कर आजाद हिन्द फौज के संस्थापक नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की प्रतिमा स्थापित करने की खबर से प्रत्येक देश प्रेमी के लिए आर्शचय की बात है । परिणाम स्वरूप सियासी राजनीति के गलियारे में सता पक्ष व विपक्ष के मध्य वाक्य युद्ध छिड़ गया है। सता पक्ष नेता जी के नाम पर अपनी राजनीति चमकाने का स्वर्णिम अवसर के रूप में अपने पक्ष व समर्थकों का दिल जीतने का भरसक प्रयास कर रहा है वही दुसरी ओर विपक्ष इसे भारतीय को इतिहास बदलने का प्रयास बता रही है। इस संदर्भ में विपक्ष ने सरकार से यह प्रशन कर रही है क्या -केन्द्र सरकार दो स्थानों पर हमारे अमर जवानों के नाम ज्योति जला सकती थी । इस संदर्भ में आम आदमी पार्टी राज्यसभा सांसद डा सुशील गुप्ता ने पंजाब के विधान सभा चुनावी जनसम्पर्क अभियान के दौरान कही।सुशील गुप्ता ने कहा कि हम सरकार के इंडिया गेट पर सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा लगाए जाने का स्वागत करते है, लेकिन भारत के गुमनाम सैनिक की श्रद्धांजलि का प्रतीक, अमर जवान ज्योति को बुझा कर वॉर मेमोरियल की ईटरनल फ्लेम मे मिलाने का विरोध भी करते है । वे मानते है कि ज्योति से ज्योति तो जलाई जाती है लेकिन एक 50 बर्षो से जलती अखण्ड ज्योति को बुझा कर दुसरी ज्योति जलाई जा रही गई। भारत का इतिहास इसे कभी माफ नही करेगा ।

आप को बता दे दिल्ली के दिल मे 50 वर्षों से जलती आ रही अमर जवान ज्योति,जो भारत के गुमनाम सैनिक की

श्रद्धांजली स्वरूप अखण्ड जलता मशाल सम्मान का प्रतीक भी है जिसे बुझा कर वॉर मेमोरियल की ईटरनल फ्लेम मे मिला दिया गया है, ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या हम दो जगह पर शहीदों को श्रद्वाजंलि देने के लिए अमर जवान ज्योति को जला कर नहीं रख सकते। सरकार के पास इसके लिए समय या इच्छा शक्ति की कमी है।

जैसा कि विदित है कि इंडिया गेट जिसे पहले भारतीय वॉर मैमोरियल कहा जाता था 90,000 सैनिकों को समर्पित है। जिन्होंने ब्रिटिश इंडिया आर्मी मे 1914-1921 के बीच शहादत दी। ब्रिटिश आर्मी के 13,300 सैनिक और अफसरों के नाम इंडिया गेट पर लिखे हुए हैं। 1972 मे बांग्लादेशी स्वतंत्रता युद्ध के बाद इंडिया गेट के अंदर काले मार्बल पर उल्टी राईफल और सैनिक की हेलमेट के साथ अमर जवान ज्योति का निर्माण हुआ और इसका उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा किया गया था।गुमनाम वीर सैनिक को श्रद्धांजलि का प्रतीक अमर जवान ज्योति पिछले 50 वर्षों से लगातार जल रही थी। आर्मी,नेवी और एयरफोर्स के एक सैनिक 24 घंटे अमर जवान ज्योति की निगरानी पर तैनात रहते थे।जो साधारण भारतीयों को अपने सैन्य बल के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए बहुत ही भावात्मक व प्रेरणा स्थल रहा है।केन्द्र में सतारूढ़ भाजपा सरकार ने पिछले 50 वर्षों की दो पीढ़ियों के जज्बात और यादों के प्रतीक को कल बुझा दिया गया है।जिसे २० जनवरी को 400 कदम दूर राष्ट्रीय समर स्मारक की ईटरनल फ्लेम मैं अमर जवान ज्योति का स्थानांतरण कर दिया गया। भारतीय के सच्चे राष्ट्र प्रेमी में अफसोस है की वीर सैनिको की याद को बिना किसी विशेष वजह से खत्म कर दिया गया। बडे संख्या मे पटर्यक इंडिया गेट के आस-पास पिकनिक मनाना, बोट राइडिंग करना, चिल्ड्रंस पार्क में खेलना और राजपथ पर आइसक्रीम खाना यह सब हमारे बचपन का हिस्सा है।अमर जवान ज्योति को जलते देख सभी अनगिनत सैनिकों का स्मरण किया जाता है जिन्होंने देश की रक्षा और आजादी के लिए अपनी जान की कुबार्नी दे दी।

विपक्षी राजनीति दल के नेताओ ने आरोप लगाया कि मोदी सरकार इतिहास बना तो नहीं सकती, हां इतिहास मिटाने का काम जरूर कर रही है।

आम जनता के मन मे सवाल उठ ना स्वाभाविक है कि कौन सा देश है जो अपने वीर सैनिको के नाम दो अखण्ड ज्योति को जलाये नही रख सकती नहीं।सता की नशा में केन्द्र की भाजपा सरकार भारत के इतिहास को बदलने की कोशिश की जा रही है और 2014 के पहले के राष्ट्रीय चिन्हों को खत्म करने का प्रयास हो रहा है।

जहाँ तक नेताजी सुभाष चंद्र बोस की इंडिया गेट पर प्रतिमा लगाए जाने के प्रसास केन्द्र सरकार का एक सहारणीय कदम है जिसका प्रत्येक भारतीय सच्चे दिल से स्वागत करने के लिए आतुर है।नेता जी सुभाष चन्द्र बोस को भारत ही नही वरन आजादी के पूर्व स्वतंत्रता संग्राम व आजाद हिन्द फौज को अमर कहानी अविस्मरणीय है।नेता जी सुभाष चन्द्र बोस के 125 वी जयंती 23 जनवरी को देश भर कई कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे है।भारत इन दिनों अपनी आजादी के 75 वी वर्ष गाढ पर आजादी के अमृत महोत्सव मना रही है।इण्डिया गेट पर नेता जी के आदम कद की प्रतिमा लगना प्रत्येक भारतवासी के लिए गर्व की बात है। अतः मे नेता जी की जयंती पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं । फिलहाल आप हम यह कहते हुए विदा लेते है। ना ही काहूँ से दोस्ती ' ना ही काहूँ से बैर 'खबरी लाल तो मांगे सबकी खैर ॥

बेटियों के हक में हर दिन बात होनी चाहिए...

हर साल की भांति इस वर्ष भी 24 जनवरी को राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया जाएगा। इतना ही नहीं लड़कियों की तरक्की के बड़े-बड़े वादे और दावे किए जाएंगे और बेटियों के सम्मान में कसीदे भी पढ़ें जाएंगे। तमाम राजनेता जादुई जिन्न की तरह लड़कियों की सुरक्षा, शिक्षा और सम्मान के लिए बड़ी-बड़ी योजनाओं की घोषणाएं करते नही थकेंगे। यहां तक कि बेटियों के सम्मान में पोस्टर और विज्ञापन तक लगाए जाएंगे। पर सवाल यह उठता है कि क्या बालिका दिवस मनाने भर से बालिकाओं की स्थिति सुधर जाएंगी। निसंदेह इसका जवाब ना में ही होगा, क्योंकि ऐसा कोई दिन नहीं होता जब लड़कियों पर हो रहे अत्याचार मीडिया जगत की सुर्खियां न बनते हो। लैंगिग असमानता, बलात्कार, दुर्व्यवहार और ऐसे अनगिनत अपराध बालिकाओं के हिस्से में हर भोर की पहली किरण के साथ लिख दिए जाते है। जिससे समाज के हर वर्ग की लड़कियों को जूझना पड़ता है। वैसे तो हमारे देश में 2008 में महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा बालिकाओं में फैली लैगिंग असमानता और अधिकारों के प्रति जागरूकता को बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय बालिका दिवस की शुरूआत की गई थी। तब से ही प्रतिवर्ष 24 जनवरी को बालिका दिवस के रूप में मनाया जा रहा है और आज ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहां लड़कियों ने अपने हुनर का लोहा न मनवाया हो पर विडंवना देखिए कि आज भी लड़कियों के साथ दुर्व्यवहार हो रहा है। भले ही आज समाज में महिला समानता का ढिंढोरा पीटा जा रहा हो लेकिन ऐसा कोई क्षेत्र नजर नहीं आता जहां बेटियों को बराबरी का अधिकार दिया गया हो। हमारे अपने देश में एक तरफ तो लड़कियों को देवी मानकर पूजे जाने की प्रथा है तो वहीं दूसरी तरफ जब अपने घर में बेटियां पैदा होती है तो मातम पसर जाता है। बेटियों को अभिशाप समझा जाता है। अब जरा आंकड़ों पर ही गौर करे तो जून 2020 में संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनएफपीए) द्वारा जारी वैश्विक आबादी की स्थिति 2020 की रिपोर्ट में 2013 से 2017 के बीच करीब 12 लाख लड़कियां के जन्म के समय ही लापता होने की बात कही गई। वही भारत में भी प्रतिवर्ष चार लाख 60 हजार लड़कियां जन्म के समय ही लापता हो जाती है। यही वजह है कि हमारे देश में लिंगानुपात की गहरी खाई बन गई है। यूएन की रिपोर्ट की माने तो हमारे देश में प्रत्येक वर्ष 7,50,000 लड़कियों को मां के पेट में ही मार दिया जाता है। देश में गर्भपात के आंकड़ो में पिछले वर्ष की तुलना में 80 प्रतिशत वृद्धि हुई है सो अलग। ऐसे में भले ही कन्या भ्रूण हत्या में पंजाब हरियाणा और राजस्थान जैसे राज्य अग्रणी रहे हो, लेकिन अमूमन पूरे देश में कन्याभ्रूण हत्या की तस्वीरे चौकाने वाली ही है।

उल्लेखनीय है कि मेलिंडा गेट्स ने कहा था कि, "जब आप किसी लड़की को स्कूल भेजते हैं, तो इस भले काम का असर हमेशा के लिए रहता है।" इतना ही नहीं उनका यह भी कहना था कि यह पहल पीढ़ियों तक जनहित के तमाम कार्यों को आगे बढ़ाने का काम करती है, स्वास्थ्य से लेकर आर्थिक

लाभ, लैंगिक समता और राष्ट्रीय समृद्धि तक। अब सोचिए अगर एक बालिका के स्कूल जाने मात्र से इतनी चीजें समृद्ध होती है, फिर आज की इक्कीसवीं सदी में भी हमारी सोच दकियानूसी क्यों? क्यों आज भी अधिकांश बच्चियां स्कूलों का मुंह देखने से वंचित रह जाती हैं? और जो स्कूल का मुंह देखती भी हैं वह आगे की पढ़ाई जारी क्यों नहीं रख पाती हैं? ऐसे में एक बात तो स्पष्ट है कि इस एक दिन दिवस मना लेने से स्थिति में बदलाव नहीं आने वाला। उसके लिए समग्र स्तर पर और सामाजिक चेतना का विकास करना जरूरी है।

मालूम हो कि आज विश्व भर में जलवायु परिवर्तन की गूंज सुनाई दे रही है। साथ ही साथ इससे होने वाले आर्थिक और सामाजिक नुकसान की भी चर्चा आम बात हो गई है। पर इन समस्याओं से भी बड़ी समस्या है आधी आबादी के साथ हो रहे लैगिंक दुर्व्यवहार, लेकिन इसपर चर्चा न होना एक दुःखद एहसास कराता हैं। बता दें कि वर्ष 2030 तक विश्व के लगभग सभी देश एक सुर में गरीबी उन्मूलन, भुखमरी, असमानता और लैगिंक न्याय जैसी तमाम बुराइयों को समाप्त करने की बात करते है। लेकिन जलवायु परिवर्तन के कारण उपजे संकट से इन लक्ष्यों को प्राप्त करने की राह को और कठिन बना दिया है। महिलाओं को कभी धर्म-परम्पराओं के नाम पर तो कभी आर्थिक विषमता के नाम पर लैगिंक भेदभाव का सामना करना पड़ता है और तो और जलवायु परिवर्तन ने लैगिंक समस्या को और विकराल बना दिया है। जलवायु परिवर्तन ने स्वच्छ भोजन , पानी यहां तक की समानता के अधिकार को भी प्रभावित किया है। जिसका असर हर वर्ग की महिलाओं पर साफ देखा जा रहा है।

वहीं बात कोविड-19 महामारी के दौर की करे तो आज इस वैश्विक महामारी में ऑनलाइन प्लेटफार्म का चलन बढ़ गया है। साथ ही कनेक्टिविटी और ऑनलाइन सुरक्षा के मामले ने भी लिंग विभाजन को और अधिक गहरा किया है। मालूम हो कि लड़कियों को इंटरनेट और डिवाइस के लिए आर्थिक और सामाजिक बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है। ये सच है कि वक़्त बदल रहा है लेकिन आज भी समाज में महिलाओं और बालिकाओं की स्थिति में कोई खास सुधार नहीं हो रहा है। एक आंकड़े के माध्यम से भारत में बालिकाओं की स्थिति को समझें तो लड़कियों की साक्षरता दर, उनके साथ भेदभाव, कन्या भ्रूण हत्या देश में आज भी एक बड़ी समस्या है। इतना ही नहीं साक्षरता दर भी एशिया में सबसे कम है। एक सर्वे के मुताबिक, भारत में 42 फीसदी लड़कियों को दिन में एक घंटे से कम समय के लिए मोबाइल फोन इस्तेमाल की इजाजत दी जाती है। अब सोचिए इस वैश्विक महामारी के दौर में शिक्षण संस्थान तक ऑनलाइन हो गए है। वहां लड़कियों के साथ इस तरह का व्यवहार कहाँ तक न्यायोचित है?

वैसे हिन्दू आदर्श के अनुसार स्त्रियाँ अर्धांगिनी कही गई हैं और इसी स्त्री का एक रूप बालिकाएं होती है। मातृत्व का आदर भारतीय समाज की विशेषता है। संसार की ईश्वरीय शक्ति दुर्गा, काली, लक्ष्मी, सरस्वती आदि नारी शक्ति, धन, ज्ञान का प्रतीक मानी गईं हैं तभी तो अपने देश को हम भारत माता कहकर अपनी श्रद्धा प्रकट करते हैं। फिर भी बात स्त्री के किसी भी रूप की हो वह अपेक्षित है, जो कहीं न कहीं मन को ठेस पहुँचाती है। आखिर में एक आंकड़ा आप सभी के बीच और साझा करें तो आज भी दुनिया भर में लगभग 132 मिलियन लड़कियां प्रारम्भिक शिक्षा तक ग्रहण नहीं कर पाती है। फिर आप सोच सकते हैं कि बालिकाओं की दशा वैश्विक मंचों पर कैसी है और इस सोच में परिवर्तन बहुत जरूरी है, क्योंकि दुनिया के रंगमंच में स्त्री और पुरुष की भागीदारी एक समान है यह हम और हमारा समाज जितना जल्दी समझ लें उतना ही बेहतर होगा। वैसे भारतीय परिवेश में मोदी सरकार के आने के बाद बालिकाओं की सामाजिक और शैक्षणिक स्थिति कुछ हद तक बेहतर हुई है, लेकिन शत-प्रतिशत सफलता इस दिशा में अभी मीलों दूर ही मालूम पड़ती है।

छोटे बच्चों और किशोरों में अलग हैं ओमिक्रोन के लक्षण, ऐसे पहचानें

ओमिक्रोन ने दहशत फैला रखी है. भले ही शुरूआत से ही इस वायरस को माइल्ड और कम घातक बताया जा रहा है. लेकिन इसके लक्षण दिखते ही मन में डर आ जाता है. इस वायरस ओमिक्रोण के साथ एक अच्छी बात यह है कि इसके लक्षण सभी जगहों पर और ज्यादातर लोगों में एक जैसे ही हैं. शुरूआत गले में जलन या खराश के साथ होती है और बाद में नाक बंद होना, जुकाम होना, सिर दर्द की समस्या और फिर बुखार आने की दिक्कतें होने लगती हैं.

हालांकि बच्चों में भी कोरोना के यही लक्षण दिख रहे हैं. लेकिन बहुत छोटे बच्चों और किशोरों में बहुत थोड़े-से अंतर के साथ बिहेव कर रहा है. जैसे, छोटे बच्चे गले में खराश या जलन की शिकायत नहीं कर सकते. वे सिर्फ रोते हैं या जो बच्चे बोलने लायक हैं वे गले में दर्द बताते हैं. इसके बाद इन्हें जुकाम-खांसी की समस्या होती है और फिर फीवर आता है. वहीं किशोरों में गले की जलन के बाद सर्दी-जुकाम के साथ ही कंपकपी के साथ तेज बुखार आने की समस्या देखने को मिल रही है.

विश्व स्वास्थ्य संगठन लगातार इस वायरस के बारे में सूचना जारी कर रहे हैं ताकि आप अपना और अपने परिवार का ध्यान रख सकें. किसी भी परिवार में बच्चे और बुजुर्ग इस वायरस से जल्दी प्रभावित हो सकते हैं. इसलिए इनके साथ अपना भी पूरा ध्यान रखें. आपको किन बातों पर सबसे अधिक फोकस रखना है, यहां जान लें...

कोरोना का यह वेरिएंट ओमिक्रोण भी सांस के जरिए सबसे अधिक तेजी से फैल रहा है. इसलिए परिवार में सभी को सख्ती के साथ मास्क के उपयोग की आदत डाल दें. इस वायरस को कंट्रोल करने का दूसरा तरीका है हाइजीन. कोई भी बाहर से आया सामान छूने पर हैंडवॉश करें या

फिर हैंड सैनिटाइजर का उपयोग करें.

सांसों को दुरुस्त रखने का तीसरा और आसान उपया है गर्म पानी. बहुत तेज नहीं लेकिन गुनगुना से थोड़ा गर्म पानी अपनी डेली लाइफ में शामिल करें. बाहर से आने के बाद हाथ-मुंह धोकर गर्म पानी या काढ़ा जरूर पिएं. सर्दी का मौसम है तो कोल्ड-कफ हो जाना आम बात है. लेकिन कोरोना संक्रमण के बीच हम इन मामूली समस्याओं को भी अफॉर्ड नहीं कर सकते. इसलिए खुद को सर्दी से बचाकर रखें और गर्म कपड़ों का सही उपयोग करें. सही डायट के साथ आप अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ा सकते हैं. जब इम्यूनिटी स्ट्रॉन्ग होती है तो कोई भी बीमारी आपको अपनी चपेट में आसानी से नहीं ले पाती. और अगर बीमारी लग भी जाए तो ज्यादा दिन तक टिक नहीं पाती है.

दिन में एक बार हल्दी वाला दूध जरूर पिएं और परिवार में सभी को पिलाएं. साथ ही तुलसी का काढ़ा भी हर दिन एक बार जरूर पिएं. ये रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के साथ ही इंफेक्शन को खत्म करने में बहुत सहायक होते हैं.

घरों में कैद होने के बाद एक्सर्साइज और योग के अतिरिक्त हमारे पास ऐसा दूसरा विकल्प नहीं बचता है, जो हमारे शरीर को स्ट्रॉन्ग, हेल्दी और ब्लड सकुर्लेशन को मेंटेन रखने में मदद करे. इसलिए अगर आप वॉक नहीं कर पा रहे हैं तो योग और एक्सर्साइज जरूर करें और बच्चों को भी कराएं. लोगों की भीड़ से हमेशा बचना चाहिए, चाहे वह घर के भीतर हों या बाहर। आपके और आपके बच्चों के लिए घर में रहना बहुत महत्वपूर्ण है। अगर आपके बच्चे में किसी तरह के लक्षण दिखाई देते हैं, तो आपको केवल इमरजेंसी में ही बाहर निकलना चाहिए। पेरेंट्स के लिए शांत रहना भी बेहद महत्वपूर्ण है। छोटे बच्चे अपने पेरेंट्स की चिंता, बैचेनी और परेशानी को पहचान लेते हैं और उन्हें महसूस कर सकते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि पेरेंट्स को यह समझना चाहिए कि वह तनावपूर्ण स्थिति में कैसे व्यवहार करें। उन्हें अपनी बेचैनी को कम करने के लिए बच्चों के अच्छे इलाज और उनकी बेहतर देखभाल पर ध्यान लगाना चाहिए। इसके अलावा खराब स्थितियों के बारे में बहुत ज्यादा चिंतित नहीं होना चाहिए।

आयुर्वेद के अनुसार प्रतिश्याय खांसी के लिए --

१ नीबू को आग में सेंक कर उसके रस को शहद में मिलाकर लेने से खरास में कमी होती हैं।

२ पान के पत्ते क स्वरस और समान मात्रा में शहद लेकर खाने से गले में सूजन और नाक का बहने में आराम लगता हैं। लवंगादि वटी,सितोपलादि चूर्ण ,तालीसादि चूर्ण ,अष्टांगवालेह ,कंटकार्यादि अवलेह ,वासावलेह ,ऐलादी वटी ,चंद्रामृत रस ,कफकेतु रस ,द्राक्षदारिष्ट अणुतेल स्थिक प्रयोगार्थ भी लाभकारी होता हैं।

वर्तमान में आयुर्वेद औषधियां भी बहुत लाभकारी होती हैं।

दिल्ली का गुड़ियाघर

बच्चों क्या आपने दिल्ली का गुडियाघर देखा है? दिल्ली के नेहरू भवन में स्थापित यह विशाल गुडियाघर आप बच्चों को चाचा नेहरू का उपहार है. इस गुडियाघर की शुरुआत तो प्रसिध्द कार्टूनिस्ट के शंकर पिल्लै ने की थी, उनकी कोशिशों के बिना गुडियाघर नहीं बन सकता था, पर चाचा नेहरू के भी प्रयासों के बाद आज ये संसार के मशहूर संग्रहालयों में गिना जाता है।

कार्टूनिस्ट शंकर नेहरू जी के साथ रहने वाले पत्रकारों के समूह में थे जब नेहरू जी प्रधानमंत्री थे। वे चाचा नेहरू के साथ देश विदेश जाते और वहां से तरह तरह की गुडियाएं इकट्ठी करते। जब उनके पास 500 गुडियां इकट्ठी हो गयीं तब उन्होंने उन्हें देश भर के बच्चों को दिखाना चाहा और उन्होने देश के कई स्थानों पर बच्चों के चित्रों के साथ इन गुडियों की प्रर्दशनियां भी आयोजित कीं। लेकिन इस प्रयास में उन्हें कई कठिनाईयों का सामना करना पडता था। बार बार बांधने, खोलने और यहां से वहां ले जाने में उन गुडियों की टूटफूट हो जाती जिससे शंकर को बहुत दुख पहुंचता।

ऐसे ही एक बार चाचा नेहरू दिल्ली में उनकी प्रदर्शनी देखने बिटिया इंदिरा के साथ पहुंचे। तब शंकर ने गुडियों को हुए नुकसान के बारे में उन्हें बताया। तब चाचा नेहरू ने उन्हें सुझाव दिया कि क्यों न इन गुडियों का कोई स्थायी संग्रहालय बना दिया जाए। तब इसके बाद जब दिल्ली में चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट के भवन का निर्माण हुआ तब उसका एक भाग गुडियाघर के लिये सुरक्षित कर दिया गया।

बहादुरशाह जफ़र मार्ग पर बने इस भवन में यह गुडियाघर 5185 वर्गफीट स्थान में फैला है, जो दो हिस्सों में बंटा है। हर 1000 फीट की लम्बाई में दीवारों पर 160 से ज्यादा कांच के केस बने हुए हैं। एक हिस्से में इंग्लैण्ड, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड और अन्य यूरोपीय देशों की गुडियाएं प्रदर्शित की गई हैं, वहीं दूसरे हिस्से में ऐशियाई देशों, मध्यपूर्व, अफ्रीका तथा भारत की गुडियाएं सजा कर रखी गई हैं।

इस गुडियाघर की शुरुआत 1000 गुडियों से हुई थी आज यहां देशविदेश की 6500 गुडियाओं का संग्रह है। अगर आप दिल्ली जाएं तो इसे देखना न भूलना।

ऐसा स्कूल जहां छात्र सब्जियां उगाते हैं

आमतौर पर अगर तुम स्कूल के बारे में सोचोगे तो क्या। स्कूल जहां बच्चे पढ़ाई करते हैं। शिक्षा प्राप्त करते हैं। लेकिन क्या कभी तुमने ऐस स्कूल देखा है। जहां बच्चे पढ़ाई के साथ-साथ सब्जियां भी उगाते हैं। आओ आज हम तुम्हें इसके बारे बताते हैं।

अमेरिका में कोलोराडो स्थित सोपरिस एलिमेंट्री स्कूल के छात्र स्कूल में ही अपने लिए सब्जियां उगाते हैं। इस स्कूल के पांचवें ग्रेड के एक शिक्षक ने स्कूल में ग्रीनहाउस के लिए योजना बनाने में मदद की है। इस कार्यक्रम को वहां के स्थानीय बैंक और व्यापारियों का समर्थन मिला। एक फाउंडेशन ने इस योजना के लिए 5000 अमेरिकी डॉलर का कर्ज भी मुहैया कराया। इस स्कूल ने अपने यहां एक सोलर हीट सिस्टम भी लगाया है, ताकि सर्दियों में ग्रीनहाउस में पौधों को गर्मी प्रदान की जा सके। इसमें 400 बच्चे नियमित रूप से पौधों की देखभाल करते हैं। पिछले महीने स्कूल के छात्रों ने सब्जियों की पहली फसल काटनी शुरूकी थी। इसमें खीरा, मूली और पालक आदि शामिल थे।

11 साल की एक छात्रा हनाह जुल कहती है कि फसल काफी अच्छी है। हम इसे उगाने के दौरान ढेर सारी मस्ती भी करते हैं। स्कूल के एक शिक्षक का कहना है कि स्कूल के बगीचे ने बच्चों को घरों में पौधे लगाने के लिए प्रेरित किया है।

शुतुरमुर्ग की बेवकूफी

बहुत पहले की बात है जब ईश्वर सृष्टि के निर्माण में अब भी व्यस्त थे। ईश्वर का एक सहयोगी था वह संसार को अग्नि देने के पक्ष में नहीं था। उसे लगता था कि इस अग्नि से सांसारिक जीव स्वयं का ही ना नष्ट कर लें। पर आग तो पांच तत्वों में एक है और उसे संसार को देना आवश्यक था तो उन्होंने निर्णय लिया कि आग तो दे दी जाए संसार को लेकिन शुतुरमुर्ग को आग की रखवाली के लिये तैनात कर दिया जाए ताकि कोई आग से न खेल सके। उसने सोचा कि जो भी शुतुरमुर्ग जैसे बहुत वफादार और अनुशासन प्रिय जानवर से किसी तरह आग ले जाने में सफल भी हो गया तो वह इतना चतुर अवश्य होगा कि आग को संभाल लेगा। उसने शुतुरमुर्ग को जरूरी हिदायतें दीं और वह अपने इंतजाम से संतुष्ट हो कर स्वर्ग लौटकर दूसरे रचनाओं के काम में लग गया।

शुतुरमुर्ग ने आग को खूब छिपा कर रखा अपने एक पंख के नीचे। लेकिन जो पहला आदिमानव था उसे पता चल गया कि वह आग को कहां छिपा कर रखता है और उसे अनुमान हो गया कि वह छिपा कर रखी गई आग कितनी काम की चीज है। वह आग पाना चाहता था, वह उसमें अपना भोजन पकाना चाहता था, उसकी गर्मी से वह रातों को अपनी गुफा गर्म करना चाहता था, और उसके प्रकाश से डरावने शिकारी जानवरों को भी वह अपने से दूर रख सकता था। कितना अच्छा होगा उसके और उसके परिवार के लिये कि उनके पास थोडी सी आग हो। आदिमानव ने सोच समझ कर शुतुरमुर्ग से आग चुराने की योजना बना ली।

अगले दिन आदिमानव जो कि जानवरों से बात करना जानता था शुतुरमुर्ग के पास पहुंचा, उसे विनम्रता से अभिवादन किया, शुतुरमुर्ग ने उसे घूर कर शक की निगाहों से देखा।

ओह महान और बुध्दिमान शुतुरमुर्ग जीसारे पक्षियों के महाराज, मेरे पास आपके लिये एक अच्छी खबर है।

सच! वह क्या ? शुतुरमुर्ग ने रुचि ली।

ओह विशाल, भव्य पक्षी, मैं ने कल रात एक सपना देखा, वह यह कि आप उड सकते हैं।

शुतुरमुर्ग को लगा वह मजाक बना रहा है तो उसने आंखें तरेर कर उसे देखा।

वो कैसे?

मैं सपने में जाना कि आपको उडने का उपहार मिल सकता है अगर आप एक उपाय करें।

क्या।

अगर आप सुबह सूर्योदय से पहले तेज हवा में अपने पंख फैला कर खडे हो जाएं और सपने में मैंने जाना कि आप अपनी आंखें बन्द कर लें और दौड क़र बाज की तरह उपर उठ कर उडने का प्रयास करें तो उडान आपको उपहार में मिल जाएगी।

शुतुरमुर्ग को एक यही बात तो अखरती थी कि सबसे बडा पक्षी होने के बावजूद भी वह उड नहीं पाता, जबकि उसके पंख इतने बडे और शक्तिशाली हैं। वह इस बात को मानने के लिये विवश हो गया, क्योंकि यही तो उसकी प्रिय इच्छा थी।

अगले ही दिन वह सूर्योदय के पहले एक ऊंची पहाडी पर ठंड में आखें कस कर बन्द करके और पंख फैला कर खडा हो गया। उसे खडे ख़डे ज़ब कुछ देर हो गई तो आदिमानव चुपके से आया और उसके पंखों के नीचे से आग चुरा ली और तेज रफ्तार में भाग खडा हुआ। शुतुरमुर्ग पूरे दिन खडा रहा पर उडना उसे नहीं मिला उपहार में।

इस तरह आदिमानव ने हम मानवों को आग लाकर दी जो कि इतनी काम की चीज़ है, पर ईश्वर के सहयोगी को जो डर था कि आग का गलत इस्तेमाल न हो वह गलती कभी कभी इन्सान कर बैठता है। हमें उसकी हिदायत याद रखनी होगी कि हम कितने भी समझदार हो जाएं किन्तु इस आग से दुनिया ही न नष्ट कर बैठें।

खैरहां उस दिन शुतुरमुर्ग बडा दुखी हुआ कि उडना तो उसे आया ही नहीं और उसकी बेवकूफी से उससे आग और छिन गई। तब से इस सदमे से उसका दिमाग कमजोर हो गया और याददाश्त कमजोर हो गई।

जी करता जोकर बन जाऊं

जोकर मुझे बना दो जी
मोटी तोंद लगा दो जी
नाक गाल को खूब सजा कर
गोर्लगोल गेंदें चिपका कर
बन्दर जैसे दाँत दिखाकर
रोतों को भी खूब हंसाकर
हंसा–हंसा कर आंसू लाऊं
जी करता जोकर बन जाऊं
जोकर मुझे बना दो जी
मोटी तोंद लगा दो जी
तरह तरह के खेल दिखाकर
उल्टा सीधा मुंह बना कर
कानों में चप्पल लटका कर
छोटी सी एक पूंछ लगाकर
बच्चों का टट्टू बन जाऊं
जी करता जोकर बन जाऊं
जोकर मुझे बना दो जी
मोटी तोंद लगा दो जी

मेजर के साथ गंगूबाई, विक्रांत रोणा, जयेश भाई

क्या फरवरी में फिल्में रिलीज होंगी? क्योंकि साल की शुरुआत, जिसके प्रति इंडस्ट्री में बड़ा उत्साह था, बड़ा निराशाजनक हुई। तीन बड़ी फिल्में आरआरआर, राधे श्याम और पृथ्वीराज की प्रदर्शन की तिथि अनिश्चित काल तक के लिए टाल दी गई। कोरोना के प्रकोप ने बॉक्स ऑफिस के बादशाहों की घिग्घी बांध दी। क्या फरवरी में कोरोना का प्रकोप सांस लेंने देगा? क्या मेजर के साथ गंगूबाई, विक्रांत रोणा और जयेश भाई आएंगे?

मेजर, मेरे देश की धरती- फरवरी के दूसरे हफ्ते में, फिल्म गहराइयां ओटीटी पर रिलीज होगी। बड़े परदे पर दो फिल्में मेजर और मेरे देश की धरती प्रदर्शित हो रही है। चेहरों के साथ ग्रामीण पृष्ठभूमि वाली फिल्म है। मेजर बायोपिक एक्शन फिल्म है। यह 2008 के आतंकवादी हमले में मृत मेजर संदीप उन्नीकृष्णन के जीवन पर है। शशि किरण टिक्का के निर्देशन में इस फिल्म में मेजर की भूमिका अदिवि सेष ने की है। अदिवि, तेलुगु फिल्म अभिनेता है। बाहुबली द बिगिनिंग में वह भद्रा की भूमिका कर चुके है।

शाबाश मिथु बीफोर यू डाई- फरवरी के पहले शुक्रवार यानि 4 फरवरी को फिल्म लूप लपेटा डिजिटल माध्यम से स्ट्रीम होगी तथा दो फिल्में यानि शाबास मुथु और बिफोर यू डाई प्रदर्शित होंगी। शाबास मुथु भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कैप्टेन मिताली राज के जीवन पर है। इस बायोपिक फिल्म में अभिनेत्री तपसी पन्नू ने मिताली की भूमिका की है। निर्देशक राहुल ढोलकिया फिल्म परजानिया और रईस का निर्देशन कर चुके है। बताते दें कि तपसी पन्नू की फिल्म लूप लपेटा डिजिटल प्लेटफार्म से स्ट्रीम होने जा रही है। 4 फरवरी को प्रदर्शित होने वाली दूसरी फिल्म निर्देशक सुवेंदु घोष बिफोर यू डाई कहानी कैंसर मरीज और उसके परिवार के इस गंभीर परिस्थिति का सामना करने की है। फिल्म में जरीना वहाब, पुनीत राज, काव्य कश्यप, आदि है।

जयेश भाई के मुकाबले विक्रांत

नही बहुत उत्साह- यह फिल्में बॉक्स ऑफिस को उत्साहित करती नही लगती। बॉक्स ऑफिस को दरकार होती है, उन फिल्मों की, जिनका दर्शकों को बेसब्री से इंतजार हो। ऐसी फिल्में बड़े बजट मशहूर फिल्मकारों की बड़े सितारों के साथ फिल्में ही हो सकती है। इसीलिए बॉक्स ऑफिस देखना चाहेगा कि मेजर अपने साथ गंगूबाई, विक्रांत और जयेश भाई को लेकर आयेगी? दर्शकों की यह इच्छा गंगूबाई काठियावाड़ी के साथ पूरी हो सकती है। संजय लीला भंसाली निर्देशित और अलिया भट्ट की गंगूबाई की भूमिका वाली यह फिल्म 7 जनवरी को प्रदर्शित होने जा रही थी लेकिन, एसएस राजामौली की फिल्म आरआरआर के सामने आ जाने के बाद, गंगूबाई को फरवरी तक के लिए टाल दिया गया था। यह फिल्म 18 फरवरी 2022 को प्रदर्शित हो रही है। गंगूबाई को अकेले प्रदर्शित होने का मौका मिल रहा है। भंसाली के कारण यह फिल्म दर्शकों को आकर्षित कर सकती है।

फिर भी बड़ा सवाल- बड़ा सवाल है कि क्या मेजर गंगूबाई, विक्रांत और जयेश भाई को लेकर आएगा? क्या यह फिल्में अपनी निर्धारित तारीखों में प्रदर्शित होंगी। जनवरी का हाल देखने के बाद कोई भी फरवरी से उम्मीद नही लगा रहा। अगर कोरोना का प्रकोप कम नहीं हुआ तो इन सभी फिल्मों को अगली तारीखों का इंतजार करना होगा। ध्यान रहे कि हॉलीवुड सुरक्षात्मक रुख अपनाये हुए है। फरवरी में हॉलीवुड की कोई भी बड़ी या चर्चित फिल्म प्रदर्शित नही हो रही है। फरवरी में प्रदर्शित होने वाली फिल्मों में मून फॉल 4 फरवरी, मेरी मी और डेथ ऑन नील 11 फरवरी को, अनचार्टेड 18 फरवरी और द गॉड फादर 25 फरवरी को प्रदर्शित हो रही है। द गॉड फादर री रिलीज हो रही है। शंका बनी रहना स्वाभाविक है। फिर भी मेजर के साथ गंगूबाई, विक्रांत और जयेश भाई का इंतजार रहेगा।

परन्तु, निगाहें फरवरी के चौथे हफ्ते में प्रदर्शित होने वाली दो फिल्मों पर होगी। 25 फरवरी को रणवीर सिंह की गुजराती युवक की भूमिका वाली फिल्म जयेश भाई जोरदार प्रदर्शित होने जा रही है। पिछले साल क्रिकेट पर कबीर खान निर्देशित फिल्म '83 के लुढ़क जाने के बाद, रणवीर इस सोलो रिलीज़ पर काफी भरोसा कर रहे थे। लेकिन उनकी उम्मीद पर घड़ों पानी फेर दिया विक्रांत रोणा ने। कन्नड़ सुपरस्टार किच्छा सुदीप की फंतासी फिल्म ने हिंदी दर्शकों को आकर्षित किया है। अल्लू अर्जुन की फिल्म पुष्पा द राइज पार्ट 1 के बाद, लगता है कि दक्षिण की फ़िल्में बढ़िया मनोरंजन दे सकती है। इसीलिए दुनिया के 55 देशों में 14 भाषाओं में प्रदर्शित हो रही जयेश भाई जोरदार से ज्यादा जोरदार साबित होने जा रही है। लगता है कि हिंदी फिल्म इंडस्ट्री को दक्षिण की फिल्मों से टक्कर मिलने जा रही है। ■

बालीवुड

जल्द शुरू होगी पुष्पा 2

तेलुगु फिल्म इंडस्ट्री से पक्की खबर है कि अल्लू अर्जुन की 2021 की सबसे बड़ी हिट फिल्म पुष्पा द राइज पार्ट 1 को अब जल्दी शुरू किया जाएगा। पहले फिल्म का टाइटल पुष्पा द राइज पार्ट 2 रखा जाना था। परन्तु अब फिल्म को पुष्पा द रूल टाइटल के साथ

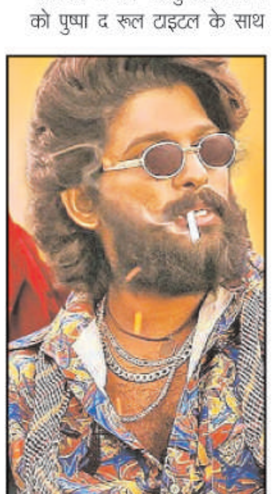

बनाया जाएगा। पुष्पा द राइज को हिंदी बेल्ट में आशातीत बड़ी सफलता मिली थी। इसलिए पुष्पा के दूसरे हिस्से को हिंदी बेल्ट के लिए स्क्रिप्ट में बदलाव किये जा रहे है। फिल्म के कुछ दृश्य फिर से लिखे जा रहे है। अब फिल्म के नायक पुष्पा और खलनायक फहद फाजिल के बीच टकराव काफी गहरा होगा। यह शारीरिक भिडंत में तो होगा ही मानसिक टकराव भी खूब होगा। इनकी भिडंत के दृश्य बढ़ाए जा रहे है। चर्चा है कि हिंदी दर्शकों में अल्लू अर्जुन का जादू छाया हुआ है इसलिए इसमें किसी ए लिस्टर बॉलीवुड एक्टर की जरूरत नहीं। अफवाह है कि कई बड़े बॉलीवुड सितारे पुष्पा 2 में शामिल होंगे।

सामंथा की ऊ ऊ

अल्लू अर्जुन की फिल्म पुष्पा द राइज पार्ट 1 का गीत ऊ बोलेगा या ऊ ऊ बोलेगा साला, फिल्म को हिंदी बेल्ट में हिट बनाने वाला बड़ा कारक है। इस गीत में अल्लू अर्जुन के साथ तेलुगु फिल्म स्टार सामंथा प्रभु अपनी मादक देह को कामुक ढंग से थिरका रही है। 10 लाख से अधिक लोगों द्वारा देखा जा चुका गीत विवादों में आ चुका है। कहा जा रहा है कि यह गीत सभी पुरुषों को लम्पट बताने वाला है। इसके बोलों में कामुकता और घटियापन है। इस गीत की धुन देवी श्रीप्रसाद ने तैयार की है गीत के बोल चन्द्रबोस ने लिखे है। संगीतकार इस गीत को हर पुरुष पर आरोप नहीं मानते। उनका कहना है कि इस गीत में संदेश है।

अक्षय की सेल्फी

पिछले दिनों अक्षय कुमार और इमरान हाशमी के सेल्फी लेते हुए चित्र जारी हुआ। यह चित्र इन दोनों की प्रमुख भूमिका वाली फिल्म सेल्फी का था। इस टाइटल के सुनते समय सहसा रोचक प्रसंग याद आ जाता है। जब अक्षय कुमार की फिल्म ओएमजी ओह माय गॉड का निर्माण शुरू हुआ तब इस इस फिल्म का टाइटल

सेल्फी रखा गया था। सीक्वल फिल्म का यह टाइटल वर्किंग नही था। क्योंकि ओह माय गॉड 2 में समाज और खुद पर गहरी दृष्टि डाली गई थी। लेकिन, बाद में सेल्फी को ओह माय गॉड 2 में बदल दिया गया। जब ओह माय गॉड को सेल्फी के रूप में बनाया जा रहा था, तभी निर्देशक राज मेहता ने अपनी अक्षय के साथ फिल्म का टाइटल सेल्फी ही रखा था। अक्षय और हाश्मी की मुख्य भूमिका वाली यह फिल्म मलयालम भाषा की कॉमेडी ड्रामा फिल्म ड्राइविंग लाइसेंस की रीमेक थी। सुपरस्टार और ट्रांसपोर्ट अधिकारी के टकराव की इस दिलचस्प कहानी सुपरस्टार, ट्रांसपोर्ट अधिकारी के परिवार के साथ सेल्फी खिंचाने से मना कर देता है। इस पर अधिकारी उसके विरुद्ध षड़यंत्र करता है।

झमेले में सलमान

सलमान खान झमेले में फंसे लगते है। उनके पनवेल फार्महाउस के पड़ोसी केतन कक्कड़ ने अपने सोशल मीडिया एकाउंट्स से अभिनेता पर सनसनीखेज आरोप लगाए है। उन्होंने अपने सोशल मीडिया पर लिखा है कि सलमान खान के फार्महाउस में कई एक्टरों की लाशें दफन है तथा इस फार्महाउस से बच्चो की तस्करी भी की जाती है। इस पर सलमान ने अपने वकील के माध्यम से कक्कड़ को कारण बताओ नोटिस दिया है कि क्यों नही अवमानना की कार्यवाही की जाए। बताया जाता है कि कक्कड़ और सलमान के बीच सम्पति को लेकर विवाद है। आरोप है कि सलमान खान ने कक्कड़ के फार्महाउस का रास्ता बंद कर रखा है।

वेब-शो 'चिड़िया उड़' में जैकी

डिज्नी प्लस हॉटस्टार के पारिवारिक क्राइम ड्रामा वेब शो 'आर्या' की दूसरी किस्त में अपनी दौलत की भूमिका में बेहद सराहे गए, सिकंदर खेर अपने अगले प्रोजेक्ट 'चिड़िया उड़' से फिर सामने होंगे । हरमन बावेजा और विक्की बाहरी द्वारा निर्मित यह शो एमएक्स प्लेयर पर स्ट्रीम होगा। इसका निर्देशन मराठी निर्देशक

रवि जाधव करेंगे, जो बैंजो, छत्रपति शिवाजी और टाइमपास डुओलॉजी जैसी सफल फिल्में देने के लिए जाने जाते है। शो में स्लमडॉग मिलियनेयर फेम मधुर मित्तल भी अहम भूमिका में होंगे। जैकी श्रॉफ के साथ 2019 की स्लीपर हिट, रोमियो अकबर वाल्टर में काम कर चुके है, सूत्रों की माने तो वेब-शो में सिकंदर अपने करियर की सबसे चुनौतीपूर्ण भूमिका कर रहे है।

■ अ.कां.

टीवी

लीड किरदार निभाएंगे विजयेंद्र

सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन के आगामी शो मोसे छल किए जाए में विजयेंद्र कुमेरिया अरमान ओबेरॉय का किरदार निभाने जा रहे हैं। विजयेंद्र कहते हैं, मैं बेहद उत्साहित हूं। किरदार में बहुत-से शेड्स हैं और मैं पूरे दिल से इसकी तैयारी कर रहा हूं। अरमान के दो चेहरे हैं और वो बहुत हेरफेर करता है।

ग्रेट इंडियन फैमिली की कहानी

नया शो सब सतरंगी फैमिली ड्रामा है। मोहित कुमार शो में मनु का लीड रोल निभा रहे है। दयाशंकर पांडे, जयश्री अरोड़ा, पुरू छिब्बर एवं सत्यजीत शर्मा भी प्रमुख किरदारों पर नजर आयेंगे। 'सब सतरंगी' का प्रसारण सोनी सब पर 7 फरवरी से शाम 7:30 बजे से शुरू होगा। मनु दादी का लाडला है, जो परिवार की मुखिया है। इस किरदार को जयश्री अरोड़ा निभा रही है। वह 73 साल की उम्र में भी कामयाब लाइफ इंश्योरेंस एजेंट है। दया शंकर पांडे मनु के पिता श्याम बाबू की भूमिका में है। पुरू छिब्बर टेलीविजन पर वापसी कर रहे है।

'बोमन रिश्तों को समझते है' -हिरानी

मल्टीटैलेंटेड अभिनेता बोमन ईरानी रिश्ते निभाने में कोई कसर नहीं छोड़ते। उनकी प्रोडक्शन हॉउस 'ईरानी मूवीटोन' अपनी तीसरी वर्षगांठ मना रहा है, जिसमें जानेमाने हस्तियां शामिल हुए और जश्न का हिस्सा निर्देशक राजकुमार हिरानी भी बने । हिरानी

कहते है- बोमन अपने काम के प्रति बहुत अधिक समर्पित है। बोमन का काम के प्रति डेडिकेशन और रिश्तों की अहमियत को कायम रखने की मै तारीफ करता हूं। प्लान करना और सही समय पर पहुंचना उनके परफैक्शन की जितनी तारीफ करे कम है ।

साकिब ने जीत लिया दिल

साल 2021 में साकिब सलीम ने फिल्म '83' में मोहिंदर अमरनाथ का किरदार निभा कर शानदार प्रदर्शन किया वो रुचिर अरुण द्वारा निर्देशित 'तीन तिगाड़ा' में प्रवासी और चोर के रूप में है। यह कहानी अमेजॉन प्राइम के नए एंथोलॉजी 'अनपॉज्डः नया सफर' की पांच कहानियों में से है । साकिब बहुत उत्साहित हुए कि यह कई लोगों के जीवन और महामारी को उजागर करता है ।

विद्युत ने 'आईबी ७१' की शूटिंग

एक्शन सुपरस्टार विद्युत जामवाल अपने प्रोडक्शन हाउस 'एक्शन हीरो फिल्म्स' के बैनर तले बतौर निर्माता अपनी पहली फिल्म 'आईबी71' की शूटिंग में व्यस्त है सेट से विद्युत जामवाल और अभिनेता दिवाकर धयानी की तस्वीर सामने आयी है, जिसमें दोनों बात करते हुए दिखाई दे रहे है । 'आईबी 1' जासूसी थ्रिलर फिल्म है जिसे राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्ममेकर संकल्प रेड्डी और विद्युत पहलीबार साथ मिलकर बना रहे है। जामवाल इसमें खुफिया अधिकारी की भूमिका निभा रहे है। निर्देशन संकल्प रेड्डी कर रहे है , जिन्होंने 'गाज़ी' परोसा था ।

परिणीति की आंखें नम

कलर्स का शो 'हुनरबाज-देश की शान', कंटेस्टेंट्स के जीवन से जुड़ी प्रेरणादायक कहानियां है। कोलकाता के रहने वाले 15 साल के सुकदेव ने अपनी बहन का ख्याल रखने का इरादा बताया। उन्होंने अपनी आर्थिक स्थिति के बारे में भी बात की। अपनी तंगहाली बयां करते हुए उन्होंने आगे बताया है कि वह ना सिर्फ अपने परिवार की किस्मत बदलना चाहते है। परिणीति चोपड़ा को अपने छोटे भाइयों की याद आई और वह इमोशनल हो गईं। उन्होंने कहा, मैं भी बड़ी बहन हूं और मेरे दो छोटे भाई है। मैं उनके लिये मां हूं। मैं उन्हें बच्चों की तरह मानती हूं।

रोहित ने दाढ़ी रखी

जीटीवी के 'भाग्य लक्ष्मी' निस्वार्थ लड़की लक्ष्मी की कथा है। रोहित सुचांती ने खुलासा किया कि वह क्लीन शेव लुक बनाए रखना पसंद करते है लेकिन वह दाढ़ी वाले लुक को बनाए है। रोहित ने कहा-मैने हाल ही में दाढ़ी रखना शुरू किया है इससे पहले मैं हमेशा क्लीन शेव हुआ करता था। मैं क्लीन शेव वाले 19 साल के बच्चे की तरह दिखता हूं। इसलिए, पर्याप्त परिपक्व दिखने के लिए, मुझे इस दाढ़ी को बनाए रखने की जरूरत है लेकिन मुझे क्लीन शेव लुक अच्छा भी लगता है।

द कपिल शर्मा शो में शार्क

द कपिल शर्मा शो में अशनीर ग्रोवर, अमन गुप्ता, अनुपम मित्तल, पीयूष बंसल, गजल अलग, निमता थापर और विनीता सिंह प्रतिष्ठित शार्क का स्वागत किया। कीकू शारदा, रोशेल राव और चंदन प्रभाकर होंगे। भारतपे के एमडी और संस्थापक ने अपने मजेदार जवाबों के साथ शो को 'द अशनीर ग्रोवर शो' में बदल दिया! लेंसकार्ट के संस्थापक पीयूष बंसल और अशनीर ग्रोवर का जवाब हंसने के लिए निश्चित है! किकू शारदा वकील के रूप में शार्क को 'डिस्को दीवाने' में डांस मूव्स से मंच पर आग लगा दे!

विदाई तकलीफदेह है- सायंतनी

सोनी सब के 'तेरा यार हूं मैं' अपने अंतिम पड़ाव पर है । शो ने 350 से ज्यादा एपिसोड्स पूरा किया। राजीव बंसल (सुदीप साहिर) और दलजीत बग्गा (सायंतनी घोष) रिलेशनलशिप बनाये रखना चाहते हैं या हमेशा के दूर जाना चाहते है। इस शो को शुरूआत से ही दर्शकों का भरपूर प्यार और तारीफ मिली है और इसका एक प्रमुख कारण है इसकी अनूठी कहानी, जिसमें प्रोग्रेसिव पैरेंटल रिलेशनशिप, रिमैरिज और जिंदगी में आगे बढ़ने जैसे बेहद संवेदनशील विषयों पर रौशनी डाली गई। सायंतनी ने कहा- जिंदगी में कई चीजों से विदाई लेनी होती है और यह विदाई वाकई दुःखदाई है। मैं मिस करूंगी, बेहद भावनात्मक रूप से जुड़ गई थी। यह खट्टा-मीठा पल है मुझे अंदर से कुछ खालीपन सा महसूस हो रहा है।

राजेश को हार्ट अटैक

सोनी सब के शो 'वागले की दुनिया- नई पीढ़ी नए किस्से' में राजेश वागले (सुमीत राघवन) को हार्ट अटैक आता है और उनकी जान खतरे में हैं। राजेश वागले परफॉर्म नहीं कर पा रहा है और वह बैंक घोटाले में भी पीड़ित रह चुके है। राजेश वागले की भूमिका निभा रहे सुमीत राघवन ने कहा, मुझे राजेश के दर्द से सहानुभूति है और अक्सर हम इंसान जिंदगी की भागमभाग में फंसे रहते है। हालांकि, कोई इन अप्रत्याशित परिस्थितियों का अनुमान नही लगा सकता लेकिन यह बहुत जरूरी है कि आप अपनी और अपने परिवार की जिंदगी के लिए समय निकालें।

मेम साहब नंबर वन में प्रिया रघुवंशी

लखनऊ की प्रिया रघुवंशी ने छोटे परदे पर बड़ा धमाल मचाया है। प्रिया रघुवंशी जी गंगा पर प्रसारित होने वाले भोजपुरी के पहले रियलिटी शो मेमसाब नंबर वन 'चलनी के चालन बबुनी' में नजर आएंगी। 13 सप्ताह तक चलने वाले इस भोजपुरी रियलिटी शो के लिए देशभर की 16 लड़कियों को चुना गया है। कार्यक्रम का संचालन प्रसिद्ध भोजपुरी अभिनेता चिंटू पांडे कर रहे है। जबकि भोजपुरी अभिनेत्री पाखी हेगड़े और रिंकू घोष निर्णायक की भूमिका में दिखेंगे। काजल राघवानी और रानी चटर्जी गेस्ट के तौर पर इस शो का हिस्सा होंगे। प्रिया रघुवंशी प्रसिद्ध नृत्यांगना हैं। भरतनाट्यम के साथ नृत्य की कई अन्य विधाओं में उन्हें महारथ हासिल है। कई प्रतिष्ठित मंचों पर उन्हें सम्मानित किया गया है। प्रयाग संगीत समिति द्वारा आयोजित राष्ट्रीय नृत्य प्रतियोगिता की वो सेकंड रनर अप रही है। हाल ही में प्रिया रघुवंशी को यूपी महोत्सव में यूपी महिला रत्न से सम्मानित किया गया है। उन्होंने लखनऊ महोत्सव में नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। अब सबकी नजर भोजपुरी रियलिटी शो पर है, जहां प्रिया अपना हुनर दिखाने पहुंची है। प्रिया कुशीनगर महोत्सव आयोजन समिति की सांस्कृतिक प्रकोष्ठ की भी सदस्य हैं, उनकी सफलता पर आयोजन समिति ने खुशी जाहिर करते हुए नम्बर वन होने की शुभकामना दी ।

कन्नड़ कॉमेडी- एडवेंचर वन कट टू कट'

अमेजॉन प्राइम वीडियो ने कन्नड़ कॉमेडी ड्रामा वन कट टू कट के ट्रेलर का अनावरण किया। दानिश सैत की मुख्य भूमिका वाले इस कॉमेडी एडवेंचर को 3 फरवरी को 240 से अधिक देशों एवं क्षेत्रों में स्ट्रीम किया जाएगा। यह व्यंग्यात्मक कॉमेडी आर्ट एवं क्राफ्ट के टीचर गोपी के इर्द-गिर्द घूमती है, जिसे दानिश सैत ने निभाया है। पढ़ाने के पहले दिन ही गोपी को अपना स्कूल बचाने का काम करना पड़ता है, जिसे कट्टरपंथी सोशल मीडिया कार्यकर्ता बंधक बना लेते हैं। वामसीधर भोगराजू द्वारा निर्देशित और पीआरके बैनर तले अश्विनी पुनीत राजकुमार और गुरुदाथा तलवार द्वारा प्रोड्यूज की गई इस फिल्म में प्रकाश बेलावाड़ी, संयुक्ता होर्नाड, विनीत 'बीप' कुमार और संपत मैत्रेय भूमिकाएं निभा रहे हैं।

■ माया

शांत और दृढ़ विश्वास खूबियां हैं

फिल्म 'अंतिमः द फाइनल ट्रुथ' का आज रात 8 बजे जी सिनेमा पर वर्ल्ड टेलीविजन प्रीमियर हो रहा है। मेगास्टार सलमान खान बहादुर दिल के पुलिस इंस्पेक्टर राजवीर सिंह के रूप में गैंगस्टर राहुल्या के साथ हैं। सलमान खान ने अपने विचार व्यक्त किये।

आयुष के साथ काम - मैं आयुष के ट्रांसफॉर्मेशन को देखकर दंग रह गया, उन्होंने अपना 100% दिया है। अपनी रेंज दिखायी है। किरदार में शारीरिक और मनोवैज्ञानिक रूप से वे पूरी तरह से प्रतिबद्ध थे। आयुष को मेहनत करते हुए देखना आश्चर्यजनक था। मुझे काफी संभावनाएं दिख रही हैं। आयुष बहुत उत्साही लड़का है ।

किरदार के बारे - मैं थोड़ा विचाराधीन था। मैंने पहले भी पुलिस वाले की भूमिका निभाई है लेकिन राजवीर शांत स्वभाव और आक्रामकता दिलचस्प है जो मेरे लिए बिल्कुल नया था। मजाकिया ताकतवर पुलिस वाले की मेरी छवि को तोड़ते हुए महेश ने ऐसे चरित्र के बारे में सोचा वह चुलबुल पांडे या राधे की तरह नही है, उसकी मानसिकता अधिक सरल है और वह न्याय लाने के लिए प्रेरित है। वह अपनी शक्ति को जानता है। मेरा सिख कॉप लुक और बोली निभाते वक्त मैं पूरी तरह से इमोशन्स जाहिर नहीं कर रहा हूं ।

सफल होने के लिए महत्वपूर्ण - जो फिल्में कहानी की जटिलताओं को सबसे सरल तरीके से खोजती है, वो दर्शकों का मन जीतती है। जब पात्रों के साथ भावनात्मक जुड़ाव होता है। सफलता के लिए लुभावना स्क्रिप्ट जरूरी है, लेकिन अभिनेताओं के प्रदर्शन, आकर्षक संवाद, अच्छा संगीत भी जरूरी है। दबंग और राधे से लेकर अंतिम तक सभी फिल्मों की कहानी पुलिस की है और संदेश है। यही स्क्रिप्ट का जादू है। फिल्म में रोमांचकारी एक्शन दृश्य और आकर्षक संवाद भरे हुए है, सभी को कुछ न कुछ प्रदान करती है।

■ विमला

कांग्रेस ने जारी की 61 प्रत्याशियों की सूची, 24 महिलाओं को टिकट

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में तीन दशक से सत्ता का वनवास भोग रही कांग्रेस 18वीं विधानसभा के गठन के दौरान बेहद गंभीर है। उत्तर प्रदेश में 2022 के विधानसभा चुनाव में 403 सीट पर अकेले लड़ रही कांग्रेस ने रविवार को 61 प्रत्याशियों की सूची जारी की है। इसमें भी 24 महिलाओं को प्रत्याशी बनाया गया है। कांग्रेस ने 403 सीट में 40 प्रतिशत महिलाओं को देने की घोषणा कर रखी है। अखिल भारतीय कांगेस कमेटी के सचिव केसी वेणुगोपाल ने रविवार को 61 प्रत्याशियों की सूची जारी की है। इसमें तीसरे, चौथे, पांचवें, छठे और सातवें चरण के प्रत्याशियों के नाम हैं। कांग्रेस की यह चौथी लिस्ट में 24 महिलाएं हैं। प्रियंका गांधी ने प्रत्याशियों में 40% टिकट महिलाओं को देने का वादा किया था। कांग्रेस ने अब तक कुल 316 उम्मीदवारों की घोषणा कर दी है, जिनमें से 127 टिकट महिलाओं को दिया गया है। कांग्रेस ने अपनी 125 प्रत्याशियों की पहली लिस्ट में 50 महिलाओं को टिकट दिया था। इसके बाद 41 नामों वाली दूसरी लिस्ट में 16 और 89 प्रत्याशियों वाली तीसरी लिस्ट में 37 महिलाओं को जगह मिली थी। कांग्रेस की इस चौथी लिस्ट में 8 मुस्लिम, 12 ब्राह्मण प्रत्याशियों पर कांग्रेस ने दांव लगाया है। 403 विधानसभा में 316 विधानसभा के उम्मीदवारों का कांग्रेस ने अब तक ऐलान कर दिया है। पार्टी की राष्ट्रीय महासचिव तथा उत्तर प्रदेश की प्रभारी प्रियंका गांधी वाड्रा ने इस बार चुनाव का मोर्चा अपने हाथ में ले रखा है। उनका दावा है कि स्क्रीनिंग के बाद ही पार्टी के प्रत्याशियों का नाम फाइनल किया जा रहा है।

अयोध्या से रीता मौर्या को टिकट– कांग्रेस ने अपनी चौथी लिस्ट में अयोध्या से रीता मौर्या, गोविंदनगर से करिश्मा ठाकुर, फतेहपुर की अयाह शाह से हेमलता पटेल, कन्नौज से विनीता देवी, हमीरपुर से राज कुमारी, श्रीनगर से चांदनी, बिसवां से वंदना भार्गव, खलीलाबाद से शबीहा खातून समेत 24 महिलाओं को कैंडिडेट बनाया है।

उन्नाव में कांग्रेस ने जंगबहादुर सिंह को बनाया प्रत्याशी– उन्नाव की बांगरमऊ, सफीपुर, मोहान, और उन्नाव सदर सीट पर प्रत्याशी घोषित करने के बाद कांग्रेस ने रविवार को भगवंत नगर के उम्मीदवार की भी घोषणा कर दी। पार्टी ने यहां से वरिष्ठ कांग्रेस नेता, पूर्व जिलाध्यक्ष और पूर्व जिला पंचायत सदस्य जंग बहादुर सिंह को उम्मीदवार बनाया है। जंगबहादुर सिंह पहले भी उन्नाव सदर और हड़हा सीट से अपनी किस्मत आजमा चुके हैं। रविवार को कांग्रेस केंद्रीय चुनाव समिति की तरफ से पार्टी के सचिव मुकुल वासनिक द्वारा जारी सूची में उनके नाम की घोषणा की गई है। अभी भी कांग्रेस द्वारा पुरवा विधानसभा सीट पर किसी उम्मीदवार के नाम की घोषणा नहीं की गई है।

उपमुख्यमंत्री दिनेश शर्मा ने समाजवादी पार्टी पर बोला हमला, कहा माफिया के लिए बाबा का बुलडोजर तैयार

सम्भल। चुनाव प्रचार में तेजी लाने के उद्देश्य से सम्भल पहुंचे उपमुख्यमंत्री ने प्रबुद्ध वर्ग के लोगों के साथ बैठक करते हुए सपा और कांग्रेस पर जमकर हमला बोला। उन्होंने प्रदेश सरकार की कानून व्यवस्था को बेहतर बताते हुए कहा कि कोई भी चिंता न करे, क्योंकि माफिया के लिए बाबा जी का बुलडोजर तैयार खड़ा हुआ है और इस बार बुलडोजर की संख्या बढ़ा दी गई है। नगर के मुहल्ला बरेली सराय स्थित प्रेम शंकर वाटिका में आयोजित कार्यक्रम में उपमुख्यमंत्री दिनेश शर्मा ने कहा कि मैं अब पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हूं। लोगों से बात भी कर रहा हूं पिछले चुनाव से भी ज्यादा समर्थन इस बार मिल रहा है। मैं एक गांव में गया तो एक मुस्लिम बुजुर्ग ने मुझे आवाज देकर अपने पास बुलाया और कहा कि आप हमारे घर क्यों नहीं आए। उसके बाद उनके पास गया तो उन्होंने कहा कि यह मेरा घर नहीं है बल्कि मोदी जी का घर है। केंद्र व प्रदेश

सरकार ने योजनाओं का लाभ देते हुए किसी के साथ पक्षपात नहीं किया और योजनाओं का लाभ सभी को मिला है। उन्होंने कहा कि एक पत्रकार ने मुझसे पूछा कि यह 80-20 का क्या मतलब है तो मैंने उनसे बताया कि आप ही सर्वे में दिखा रहे हो कि 84 फीसद लोग केंद्र सरकार से संतुष्ट है तो फिर 16 फीसद ही लोग हमसे संतुष्ट नहीं है अब वह भी हमारे साथ आ रहे हैं। जो भी फीसद है उनमें से चार फीसद पहले ही हमारे साथ आ चुके हैं। उन्होंने कहा कि अब मुफ्त बिजली देने का वादा सपा सरकार में आने के लिए कर रही है। जब उन्हें मुफ्त बिजली देनी थी तो जब उनकी सरकार थी तो तब क्यों नहीं दी। जब तो बिजली आती थी तो समाचार बनता था और अब बिजली चली जाए तो तब समाचार बनता है। जब प्रदेश में भाजपा की सरकार बनी तो माफिया प्रदेश छोड़कर भाग गए थे, लेकिन अब सपा ने उन्हें बुलाकर टिकट दे दिया है, लेकिन चिंता न करे बाबा जी का बुलडोजर तैयार खड़ा है।

बाराबंकी में अवैध खनन की नोटिस देने पर सींचपाल को हत्या की धमकी, पुलिस ने दर्ज किया मुकदमा

बाराबंकी। अवैध रूप से रजबहा में मिट्टी खनन कर रहे आरोपित को विभागीय नोटिस देना सींचपाल को महंगा पड़ा। नोटिस मिलने पर भड़के आरोपित ने सींचपाल को फोन कर अभद्रता की और हत्या की धमकी दे डाली। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने मुकदमा लिखा है। देवा के चौकी गौरसादिकपुर महोलिया बाराब के अभिषेक कुमार सिंह नहर विभाग में सींचपाल के पद पर तैनात हैं।

अभिषेक ने कोतवाली देवा में दी तहरीर में लिखा है कि रजबहा महोलिया से अवैध रूप से मिट्टी खनन करने वालों को विभागीय कार्रवाई की नोटिस जारी की गई थी। नोटिस मिलने पर देवा के ही नयापुरवा मजरे गोपालपुर पोस्ट इस्माईलपुर में रहने वाले शिवकेश यादव ने सींचपाल अभिषेक को फोन कर अभद्र भाषा का प्रयोग किया और अपने बाबा के कहने पर नोटिस देने का आरोप लगाया। यही नहीं इसके लिए उसे हत्या की धमकी भी दी। मामले में तहरीर देकर सींचपाल ने देवा कोतवाली में शिवकेश पर मुकदमा लिखाया है।

उत्तर प्रदेश में कल चुनाव प्रचार करेंगे पीएम मोदी, वेस्ट यूपी में संबोधित करेंगे वर्चुअल रैली

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव 2022 में भारतीय जनता पार्टी के स्टार प्रचारक प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सोमवार को प्रचार अभियान की कमान संभालेंगे। पीएम मोदी 31 जनवरी को वर्चुअल रैली करेंगे। जिसके प्रभाव में पांच जिलों के 21 विधानसभा क्षेत्र रहेंगे। भारतीय जनता पार्टी ने इसके लिए इंतजाम कर लिया है। इसके तहत कुल सौ स्थानों पर लोग प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संबोधन को सुन सकेंगे। उत्तर प्रदेश के चुनाव प्रचार में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी उतर रहे हैं। प्रदेश में दस फरवरी को होने वाले पहले चरण के मतदान से पहले पहले प्रधानमंत्री मोदी 31 जनवरी को एक वर्चुअल रैली को संबोधित करेंगे। प्रधानमंत्री मोदी की रैली प्रदेश के पांच जिलों बागपत, शामली, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर और गौतमबुद्ध नगर (दादरी/जेवर) को कवर करेगी। इसमें 21 विधानसभा क्षेत्र शामिल हैं। निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशों को ध्यान में रखते हुए इस रैली का आयोजन इस तरह किया जाएगा कि एक सौ स्थानों पर लोग प्रधानमंत्री का भाषण सुन सकेंगे। हर स्थान पर पांच सौ लोग जुटेंगे।

इस तरह रैली के दौरान 50 हजार लोगों की प्रत्यक्ष उपस्थिति होगी। रैली के लिए एलईडी स्क्रीन लगाए जाएंगे और प्रचार वाहनों को भेजा जाएगा, ताकि लोग प्रधानमंत्री का भाषण सुन सकें। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सोमवार को दोपहर 1:30 बजे से जन चौपाल के माध्यम से पश्चिमी उत्तर प्रदेश के शामली, मुजफ्फरनगर, बागपत सहारनपुर एवं गौतमबुद्ध नगर के मतदाताओं को संबोधित करेंगे। वह भाजपा के प्रत्याशियों के पक्ष में छोटी-छोटी वर्चुअल सभाएं करेंगे।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संबोधन को जिले की सभी छह विधानसभाओं में सुना जाएगा। इसके लिए 29 स्थानों पर एलईडी स्क्रीन लगाई जाएंगी। इन सभी स्थानों पर साढ़े आठ हजार से अधिक लोग प्रधानमंत्री की बातें सुनेंगे। भाजपा ने जिले के सभी 29 मंडलों में इस कार्यक्रम के लिए कार्ययोजना तैयार की है। सभी छह विधानसभा के लोगों को बुलाया जाएगा। हर स्थल पर कोरोना गाइडलाइन का पालन करते हुए 300 लोगों को बुलाया जाएगा। इसके लिए प्रशासन से अनुमति ली गई है। जिससे कि जिले में साढ़े आठ हजार लोग पीएम मोदी का संबोधन सुन सकेंगे।

बेचैनी से ही गुजारी जेल में पहली रात

मैनपुरी। तिहरे हत्याकांड के मुख्य आरोपी मनीष यादव को फांसी की सजा सुनाए जाने के बाद जेल में उसकी पहली रात बेचैनी में गुजरी। उसने किसी बंदी और बंदी रक्षक से बात तक नहीं की। उसकी कड़ी निगरानी के लिए विशेष रूप से दो बंदी रक्षकों को बैरक के बाहर तैनात किया गया है।तिहरे हत्याकांड को अपने दो रिश्तेदारों की मदद से अंजाम देने वाले मनीष यादव निवासी जलालपुर, थाना करहल को शुक्रवार को फास्ट ट्रेक कोर्ट (द्वितीय) जज तुरन्नुम खान ने फांसी की सजा सुनाई थी। मनीष ने एक अक्तूबर 2012 को पिता सुखराम, सौतेली मां सुषमा और सौतेले भाई अभिषेक की हत्या कर दी थी। हत्याकांड को अंजाम देने में मनीष के रिश्तेदार वीरेंद्र यादव तथा कमलेश थी शामिल थे। फांसी की सजा होने के बाद मनीष को मैनपुरी जेल, वीरेंद्र को कन्नौज जेल, कमलेश को इटावा जेल भेजा गया।मनीष को फांसी की सजा के बाद जब पुलिस जेल लेकर पहुंची तो वह गुमसुम रहा। जेल के प्रवेश द्वार पर औपचारिकताएं पूरी होने के बाद उसको विशेष बैरक में रखा गया। फांसी की सजा होने के कारण विशेष बैरक की सुरक्षा बढ़ा दी गई। बैरक के बाहर दो बंदी रक्षकों की स्थायी रूप से ड्यूटी लगाई गई। जेल में पहुंचने के बाद मनीष ने किसी से कोई बात नहीं की। वह बैरक में काफी देर तक टहलता रहा। बाद में अपने बिस्तर पर जाकर लेट गया। शनिवार की सुबह भी उसने किसी से कोई बात नहीं की। मनीष यादव को फांसी की सजा होने के कारण विशेष बैरक में रखा गया है। उसकी कड़ी निगरानी के लिए बैरक के बाहर दो बंदी रक्षक स्थायी रूप से तैनात किए गए हैं। जो उसकी हर गतिविधि पर नजर रखे हुए हैं।

पुण्यतिथि पर महात्मा गांधी को किया नमन

बस्ती। राष्ट्रपिता मोहनदास करमचंद गांधी को उनके 74 वीं पुण्य तिथि पर याद किया गया। रविवार को सोशल क्लब अध्यक्ष अमर सोनी के संयोजन में क्लब सदस्यों, समाजसेवियों ने गांधी कला भवन स्थित बापू की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया। सोशल क्लब अध्यक्ष अमर सोनी ने कहा कि 30 जनवरी 1948 को महात्मा गांधी की हत्या कर दी गई किन्तु उनके विचार आज समूचे विश्व को प्रेरणा दे रहे हैं। बापू के विचार सदैव प्रासंगिक बने रहेंगे। मण्डल अध्यक्ष अनिल कुमार पाण्डेय ने कहा कि महात्मा गांधी ने देश को आजाद कराने में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। यह किसी ने नहीं सोचा था कि आजाद भारत में उनकी हत्या कर दी जायेगी। उनकी प्रासंगिकता युगों तक बनी रहेगी। क्लब संरक्षक अरविन्द श्रीवास्तव गोला ने कहा कि महात्मा गांधी व्यक्ति नहीं वरन विचार हैं। भारत सहित पूरी दुनियां उनके बताये शांति, अहिंसा, प्रेम का अनुसरण करे तो अनेक समस्याओं का स्वतः समाधान हो जाय।

मैनपुरी : पुलिस ने मुठभेड़ में तीन शातिरों को किया गिरफ्तार, एटीएम कार्ड बदल कर करते थे धोखाधड़ी

मैनपुरी। जिले में स्वाट और साइबर सेल की टीम ने शनिवार को मुठभेड़ के दौरान तीन शातिर बदमाशों को गिरफ्तार कर लिया। पकड़े गए बदमाश कई वर्षों से लोगों का एटीएम कार्ड बदल कर उनके खाते से रुपये निकालते आ रहे थे। इनसे कई एटीएम कार्ड, 75 हजार नगद, तमंचा, चाकू, बाइक बरामद हुए हैं।

शनिवार को एसपी अशोक कुमार राय ने प्रेसवार्ता में बताया कि आए दिन एटीएम कार्ड बदल कर खाते से रुपये निकाले जाने की घटनाएं सामने आ रही थीं। इस पर उन्होंने साइबर सेल प्रभारी विक्रम सिंह को कार्रवाई के निर्देश दिए थे। सूचना पर स्वाट/साइबर सेल की टीम ने थाना कुरावली पुलिस के साथ गैलानाथ पुल के पास मौजूद तीन शातिरों की घेराबंदी की। उन्हें जब पकड़ने का प्रयास किया तो उन्होंने पुलिस टीम पर फायरिंग करना शुरू कर दिया। बचाव करते हुए स्वाट और साइबर सेल की टीम ने तीनों को गिरफ्तार कर लिया।

एसपी ने बताया कि पकड़ा गया शातिर वसीम निवासी चिरचिटा थाना सलेमपुर जनपद बुलंदशहर गैंग का सरगना है। वह गैंग के अन्य साथी अकरम और इंता निवासी नूरपुर, टप्पल अलीगढ़ के साथ वारदात को अंजाम देता था। यह लोग एटीएम पर आने वाले लोगों को अपना शिकार बनाते थे। उनका एटीएम कार्ड बदल कर खाते से रुपये निकाल लेते थे। साइबर सेल की टीम के एक्सपर्ट विजय सिंह, सरयू कुमार, महीपाल, गौरव, मनोज कुमार ने शातिरों को ट्रैस किया। इसके बाद स्वाट टीम और कुरावली पुलिस के साथ इन्हें पकड़ा जा सका। एसपी ने बताया कि शातिरों के कब्जे से 59 एटीएम कार्ड, 75 हजार रुपये की नकदी, एक तमंचा-कारतूस, एक बाइक और दो छुरे बरामद हुए हैं। कुरावली पुलिस द्वारा आरोपियों को जेल भेजा गया है।

एसपी ने बताया कि पकड़े गए शातिर अपराधी गैर राज्यों में भी वारदात अंजाम देते थे। मध्य प्रदेश, राजस्थान के अलावा कई अन्य राज्य में घटनाएं की हैं। इन लोगों ने मैनपुरी, एटा, अलीगढ, गाजियाबाद, नोएडा, भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, भरतपुर, आगरा, अलीगढ़ आदि स्थानों पर वारदात करना भी कबूल किया है। 14 दिसंबर 2021 को कुरावली के मकबूलपुर निवासी गुंजन का एटीएम बदल कर इन लोगों ने ही रुपया निकाला था। कस्बा के किशनपुर गांव निवासी ज्योतिका के खाते से भी रुपया निकाला था। दोनों ही मामले दर्ज किए गए थे। कई अन्य महत्वपूर्ण जानकारियां मिलीं हैं। जिन पर टीम काम कर रही है।

नौकरी दिलाने के नाम पर 4 लाख 50 हजार वसूलने का आरोप, मुकदमा दर्ज

बस्ती। नौकरी दिलाने के नाम पर चार लाख पचास हजार रुपए लेने और बाद में मुकर जाने का मामला सामने आया है। कोतवाली थाना क्षेत्र के ताडीजोत निवासी रजनीश कुमार पाण्डेय पुत्र संजय कुमार पाण्डेय ने कोतवाली थाने में ओरीजोत निवासी दिवाकर सोनकर पुत्र राम प्रसाद सोनकर के विरूद्ध भादवि की धारा 420 और 406 के तहत नामजद मुकदमा दर्ज कराया है। कोतवाली पुलिस को दिये तहरीर में रजनीश कुमार पाण्डेय ने कहा है कि वह लखनऊ में रहकर मेडिकल की पढाई करता है और बस्ती आना जाना लगा रहता है। इस दौरान उसका परिचय ओरीजोत निवासी दिवाकर सोनकर से हुआ। उसने नौकरी दिलाने के नाम पर कुल चार लाख पचास हजार रुपए लिया। अलग-अलग स्थानों पर एक लाख 50 हजार नकद एवं तीन लाख रजनीश ने खाते से दिया। रजनीश के अनुसार बाद में दिवाकर नौकरी दिलाने से मुकर गया और पैसा मांगने पर झूठे मुकदमें में फंसा देने की धमकी देने लगा।

कोरोना के नए मामलों में आई कमी ठीक होने वालों की संख्या बढ़ी

मैनपुरी। जिले में कोरोना के नए संक्रमितों की संख्या तेजी से घट रही है। वहीं ठीक होने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। शनिवार को जिले में डीआईओएस सहित 11 कोरोना संक्रमित मिले। जबकि 54 कोरोना संक्रमितों की द्वितीय रिपोर्ट निगेटिव प्राप्त हुई। जिले में एक्टिव केस की संख्या घटकर 167 रह गई है।

एक जनवरी से तेजी के साथ जिले में पनपी कोरोना की तीसरी लहर की गति जनवरी के अंत तक थमती हुई नजर आ रही है। एक्टिव केसों की संख्या तेजी के साथ कम हो रही है। शनिवार को जिले के अलग-अलग क्षेत्रों में जिला विद्यालय निरीक्षक (डीआईओएस) मनोज कुमार वर्मा सहित 11 नए कोरोना संक्रमित मिले। सभी को होम आइसोलेट किया गया है। जिले में कोरोना संक्रमित चल रहे 54 लोगों की कोरोना की द्वितीय जांच कराई गई जो निगेटिव पाई गई है। सीएमओ डॉ. पीपी सिंह ने बताया कि कोविड-19 से बचाव की जरूरत है। सभी लोग कोविड-19 की गाइड लाइन का पालन करें। बिना कार्य के घरों से बाहर न निकलें। किसी प्रकार की दिक्कत होने पर जांच अवश्य कराएं। नए संक्रमितों को सीएमओ के निर्देश पर होम आइसोलेट किया गया है।

टीकाकरण के कार्य को किया जाए और तेजः सीएमओ– मैनपुरी। सीएमओ डॉ. पीपी सिंह ने शनिवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र किशनी का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान व्यवस्थाएं ठीक मिलीं। सीएमओ ने चिकित्साधीक्षक को निर्देश दिए कि टीकाकरण की गति और तेज की जाए। सीएमओ डॉ. पीपी सिंह शनिवार की दोपहर सीएचसी किशनी पहुंचे। सीएमओ ने यहां व्यवस्थाओं को निरीक्षण किया। काउंटर पर पहुंचकर दवाइयों की जांच की। यहां पहुंचे मरीजों से भी उपचार को लेकर जानकारी जुटाई। टीकाकरण की जानकारी लेने के बाद सीएमओ ने चिकित्साधीक्षक डॉ. अजय भदौरिया को निर्देश दिए कि कोविड-19 टीकाकरण की गति को और तेज किया जाए। आशा और एएनएम की मदद से टीकाकरण का कार्य समय से पूरा किया जाए।

बागपत में लूट के विरोध में युवक को घोंपा था चाकू, नहीं पकड़े गए अपराधी

बागपत। बागपत में लूट के विरोध पर युवक की गर्दन में चाकू घोंपने के मामले में पुलिस आरोपित युवक को गिरफ्तार नहीं कर पाई है। घटना से गांव में तनावपूर्ण शांति है। पुलिस बल गांव में तैनात है। घायल युवक की हालत में सुधार है। ग्राम फैजपुर-निनाना निवासी युवक संदीप की गर्दन में शनिवार सुबह गांव के संप्रदाय विशेष के युवक फिरोज ने चांदी की चेन व हजारों रुपये की नगदी की लूट के विरोध पर चाकू घोंप दिया था। संदीप मेरठ के मेडिकल कालेज में भर्ती है। उनकी हालत में सुधार है। संदीप व फिरोज आपस में दोस्त बताए जाते हैं। वही घटना से बाद ही हिंदू संगठन के कार्यकर्ता गांव में पहुंचे थे। उन्होंने पीड़ित परिवार से मुलाकात कर पुलिस से आरोपित युवक के खिलाफ कार्रवाई की मांग की थी। घटना से गांव में तनावपूर्ण शांति है। जिम्मेदार लोग अमन-चैन कायम की बातें कर रहे हैं। वहीं सुरक्षा की दृष्टि से गांव में पुलिस बल तैनात है।

प्रशासनिक उपेक्षा के शिकार प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र को चालू किए जाने की मांग

रतनपुरा, मऊ। ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा, ग्रामीण क्षेत्रों के लिए चलाया गया मिशन है, जो स्वस्थ जीवन शैली को प्रोत्साहित करने हेतु चलाया गया है। इस का लक्ष्य ग्रामीण क्षेत्रों में पुरुषों, महिलाओ और बच्चों को सुलभता से स्वास्थय संबंधी सुविधा उपलब्ध करना है। साथ ही संक्रामक व गैर संक्रामक बीमारियों को रोकना और नियंत्रण करना इसका लक्ष्य है। इसी को ध्यान में रखकर के रतनपुरा विकासखंड मुख्यालय पर 22 फरवरी 1953 को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र की स्थापना की गई थी। जिसका शिलान्यास तत्कालीन नियोजन उपमंत्री फूल सिंह द्वारा किया गया था। तब से यह प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र क्षेत्र के मरीजों को निरंतर सेवा दे रहा था। जबकि सरकार का यह नैतिक दायित्व है कि वह सभी को नियमित ढंग से स्वास्थ्य सेवाएं दे। सरकार की यह योजना फलीभूत हुई, और पिछले साढ़े 6 दशकों तक यह अस्पताल अपनी निरंतर सेवाएं देता रहा है। इस अस्पताल में इलाज कराने के लिए लोग दूर-दूर से आते रहे हैं। जिससे तीन जनपद के नागरिक स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ लेते रहे, जिसमें मऊ जनपद के रतनपुरा विकासखंड के नागरिक जहां भरपूर स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ लेते रहे। वही गाजीपुर जनपद के सूरवत पाली, अवरा

कोल तथा बलिया जनपद के बाहरपुर, भीमपुरा, अतरौली, पकवा इनार, सरायभारती इत्यादि गांव के लोग अपना इलाज कराने के लिए इस अस्पताल में आते रहे हैं। परंतु पिछले 5 वर्षों से यह अस्पताल वीरान बना हुआ है। इसका कारण यह है कि जब से 33 शैय्या सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की अवस्थापना हुई है, उसके बाद से इस अस्पताल की सेवाएं प्रभावित होती चली गई, और एक दिन इसे अचानक बंद कर दिया गया। इसके बाद ग्रामीणों द्वारा इसे चालू करने के लिए आंदोलन किया गया। तब जाकर के राज्य सरकार द्वारा यहां पर डॉ फैयाज अहमद चिकित्सा अधिकारी की नियुक्ति की गई परंतु उन्हें भी अस्पताल हुक्मरानों के असहयोग का सामना करना पड़ा, जिसके चलते उन्होंने अपना बोरिया बिस्तर समेट कर के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में अपने आप को विलीन कर लिया। तब से अस्पताल बंद पड़ा हुआ है। यहां पर केवल बुधवार के दिन स्वास्थ्य कार्यकताओं द्वारा टीकाकरण के कार्य को अंजाम दिया जाता है। बताया जाता है कि अस्पताल जब चालू हालत में थे, तब रतनपुरा प्रखंड के किसी भी क्षेत्र में जब दुर्घटना होती थी, तो लोग सीधे यहां उपचार कराने के लिए आते थे। इस अस्पताल में एक चिकित्सा अधिकारी एक फार्मासिस्ट एक वार्ड बॉय तथा एक स्वीपर के जरिए इसे पुनर संचालित किया जा सकता है। इसी मांग को लेकर के इसी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र से सेवानिवृत्त हुए वरिष्ठ लिपिक रामआशीष पांडेय ने उत्तर प्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री, स्वास्थ्य मंत्री, स्वास्थ्य महानिदेशक, मुख्य चिकित्सा अधिकारी तथा जिलाधिकारी को पत्र लिखकर इस चार शैय्या वाले अस्पताल को तत्काल खोले जाने की मांग की। ताकि क्षेत्रीय लोगों को इस अस्पताल से तात्कालिक स्वास्थ्य सेवाएं मिलनी प्रारंभ हो जाए। वीरान एवं प्रशासनिक उपेक्षा के शिकार प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र को पुनर्जीवित करने की मांग करने वालों में प्रमुख रूप से उत्तर प्रदेश सरकार में माटी कला बोर्ड के सदस्य हरेंद्र कुमार प्रजापति, भारतीय जनता पार्टी के जिला महामंत्री रामाश्रय मौर्य, मंडल अध्यक्ष दुर्गेश कुमार वर्मा, दुर्गा प्रसाद जायसवाल, पुनीत कुमार सिंह डिंपल, जयप्रकाश पटेल, स्वामीनाथ पटेल इत्यादि प्रमुख है। जिन्होंने तत्काल प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र को खोले जाने की पुरजोर वकालत की है।

मेदांता हॉस्पिटल की टीम ने द्वारा एसएनएच में निःशुल्क जांच शिविर का हुआ आयोजन

मऊ। शारदा नारायन हॉस्पिटल में रोटरी क्लब मऊ एव एसएनएच के संयुक्त तत्वाधान में आज एक निःशुल्क जांच शिविर का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन रोटरी क्लब मऊ अध्यक्ष एव शारदा नारायन हॉस्पिटल के चेयरमैन डा. संजय सिंह, डा. एकीका सिंह, क्रिटिकल केयर हेड डा. सुजीत सिंह मेदांता हॉस्पिटल गुड़गांव कार्डिओलॉजी स्पेशलिस्ट डा. एसके तनेजा एवं न्यूरोलॉजी स्पेशलिस्ट डा. अर्शदीप कौर द्वारा दीप प्रज्वल कर किया गया। शिविर में कुल 200 मरीजो का निःशुल्क बीपी, शुगर, ईसीजी एव सांस की जांच की गयी। रोटरी क्लब मऊ के अध्यक्ष डा. संजय सिंह ने बताया की प्रत्येक माह मेदांता हॉस्पिटल एव शारदा नारायन हॉस्पिटल के संयुक्त तत्वाधान में ऐसे शिविर का आयोजन यहां होता रहेगा और ये हमारा कर्तव्य बनता है की जो लोग बाहर जाके इलाज कराने में सक्षम नहीं होते है उन्हें हम एक बेहतर स्वास्थ सुविधा यहाँ अपने जनपद में उपलब्ध कराये। आगे डॉ सिंह ने बताया की शारदा नारायन हॉस्पिटल द्वारा जो मरीज आर्थिक रूप से कमजोर थे उन्हें निःशुल्क दवाये भी वितरित की गयी है। इस अवसर पर मेदांता हॉस्पिटल की चिकित्सीय टीम, रोटरी क्लब मऊ के सचिव सचिन्द्र सिंह, रोटेरियन डॉ अरविन्द, गौरव सिंह आदि लोग मौजूद रहे।

नंबर वन एश्ले बार्टी पहली बार बनीं ऑस्ट्रेलियन ओपन चैंपियन

फाइनल मुकाबले में कॉलिन्स को एकतरफा अंदाज में 6-3, 7-6 से हराया

ऑस्ट्रेलिया का 44 साल का इंतजार खत्म

मेलबर्न (एजेंसी)। विश्व की नंबर एक महिला टेनिस खिलाड़ी ऑस्ट्रेलिया की एश्ले बार्टी ने शनिवार को यहां ऑस्ट्रेलिया का 44 साल लंबा इंतजार खत्म करते हुए देश के लिए ग्रैंड स्लेम टेनिस टूर्नामेंट ऑस्ट्रेलियन ओपन के महिला एकल का खिताब जीता। बार्टी ने फाइनल में अमेरिका की डेनियल कॉलिन्स को एकतरफा अंदाज में 6-3, 7-6(2) से हराकर पहली बार ऑस्ट्रेलियन ओपन के महिला एकल का खिताब जीता।

ऑस्ट्रेलिया के लिए आखिरी बार दिग्गज महिला टेनिस खिलाड़ी क्रिस ओ'नील ने 1978 में यह खिताब जीता था। बार्टी ने इस जीत के साथ दुनिया की नंबर 27 की खिलाड़ी कॉलिन्स के खिलाफ अपने रिकॉर्ड को भी सुधारा। उनका कॉलिन्स के खिलाफ अब 4-1 का रिकॉर्ड हो गया है। बार्टी का यह पहला ऑस्ट्रेलियन ओपन खिताब है। 2022 ऑस्ट्रेलियन ओपन के फाइनल में पहुंचने के सफर तक उन्होंने अपने पिछले सभी 11 मैच जीते हैं। पिछले अक्टूबर में इंडियन वेल्स के बाद से उनकी एकमात्र हार लिंज सेमीफाइनल में एलिसन रिस्के से सेवानिवृत्ति के माध्यम से आई थी। वह नवंबर में बिली जीन किंग कप फाइनल में अपराजित रहीं थी और ऑस्ट्रेलियन ओपन 2022 उनका सीजन का पहला टूर्नामेंट है।

बार्टी का यह तीसरा ग्रैंडस्लैम खिताब

बार्टी ने अपना तीसरा ग्रैंडस्लैम खिताब जीता। उन्होंने इससे पहले दो ग्रैंड स्लैम रौलां गैरो (फ्रेंच ओपन) 2019 और विंबलडन 2021 खिताब जीता था। वह गुरुवार को सातवीं वरीयता प्राप्त अमेरिका की मेडिसन कीज को एकतरफा अंदाज में 6-1, 6-3 से हरा कर 1978 में क्रिस ओ'नील के बाद ऑस्ट्रेलियन ओपन के महिला एकल के फाइनल में पहुंचने वाली पहली ऑस्ट्रेलियाई महिला खिलाड़ी बनीं थी। उल्लेखनीय है कि बार्टी ने ग्रैंड स्लैम खिताब मैच तक पहुंचने तक कोर्ट में सिर्फ छह घंटे और छह मिनट बिताए हैं और छह मैचों में अब तक सिर्फ 21 गेम गंवाए हैं जो 2013 में अमेरिका की सेरेना विलियम्स द्वारा यूएस ओपन के फाइनल तक के सफर में 16 गेम गंवाने के बाद किसी भी खिलाड़ी द्वारा किसी ग्रैंड स्लैम खिताब मैच तक पहुंचने के लिए हार की सबसे कम संख्या है। सेरेना ने इसके अलावा 2012 में यूएस ओपन के फाइनल में पहुंचने तक 19 और रौलां गैरो 2013 के फाइनल में पहुंचने तक 21 गेम हारे थे, जबकि उनकी हमवतन वीनस विलियम्स विंबलडन 2009 में यूएस ओपन के फाइनल तक 20 गेम हारीं थी। वहीं दूसरी ओर अपने से बेहतर खिलाड़ी सातवीं वरीयता प्राप्त पोलैंड की इगा स्वियाटेक को हराकर अपने पहले ग्रैंड स्लैम फाइनल में पहुंचीं अमेरिका की डेनियल कॉलिन्स का इससे पहले सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 2019 ऑस्ट्रेलियन ओपन के सेमीफाइनल में पहुंचना था, जिसमें वह हार गई थी।

यह एक सपना सच होने जैसा है: बार्टी

एश्ले बार्टी ने खिताब जीतने के बाद कहा कि यह सिर्फ एक सपना सच होने जैसा है। मुझे ऑस्ट्रेलियाई होने पर बहुत गर्व है। उन्होंने कहा, यह मेरे पसंदीदा अनुभवों में से एक रहा है। आप लोग असाधारण से कम नहीं हैं। आपने मुझे आराम दिया और मुझे अपना सर्वश्रेष्ठ टेनिस खेलने के लिए मजबूर किया। पुरस्कार वितरण समारोह में बार्टी के पारिवारिक सदस्यों सहित रॉड लेवर, इवोन गुलागोंग कावले, क्रिस ओ'नील, जूडी डाल्टन और अन्य कई ऑस्ट्रेलिया दिग्गज टेनिस खिलाड़ी मौजूद रहे। सभी ने उन्हें अपने पहने ऑस्ट्रेलियन ओपन खिताब के लिए शुभकामनाएं दीं। महान ऑस्ट्रेलियाई टेनिस खिलाड़ी रॉड लेवर ने ट्वीट में कहा, तीन अलग-अलग सतहों पर ग्रैंड स्लैम चैंपियन बनना, वाकई बार्टी पूर्ण खिलाड़ी हैं और मैं आज आपके लिए बहुत खुश हूं। घर पर जीतने जैसा कुछ नहीं है। बधाई ऑस्ट्रेलियन ओपन 2022 चैंपियन। इस पल के लिए यहां होना और ऑस्ट्रेलिया के साथ जश्न मनाना अद्भुत है।

फ्रेंच ओपन से भी बाहर हो सकते हैं जोकोविच

फ्रांस अपने कोविड-19 टीकाकरण नियमों को सख्त कर रहा है जिससे नोवाक जोकोविच पर फ्रेंच ओपन से भी बाहर होने का खतरा मंडरा रहा है। फ्रांस में खेलों के स्थलों में प्रवेश के लिए 15 फरवरी से नियमों में और सख्ती हो जायेगी जिसमें जिसने भी कोरोना वायरस का टीकाकरण नहीं करवाया हो उसे पिछले चार महीनों का कोविड-19 पॉजिटिव नहीं आने का सबूत देना होगा। जोकोविच ने टीकाकरण नहीं कराया है जिसके कारण वह ऑस्ट्रेयिन ओपन से बाहर हो गए थे।

ऑस्ट्रेलिया ओपन के फाइनल में मेदवेदेव - नडाल के बीच होगी जोरदार टक्कर

डेनियल मेदवेदेव और राफेल नडाल के बीच आज ऑस्ट्रेलिया ओपन का खिताबी मुकाबला खेला जाएगा। 2022 के पहले ग्रैंड स्लैम का फाइनल खेलने जा रहे नडाल इतिहास रचने से एक जीत दूर है। फेडरर और जोकोविच के समान नडाल के नाम 20 ग्रैंड स्लैम खिताब हैं। और यदि वह फाइनल में जीत जाते हैं तो वह 21 ग्रैंड स्लैम जीतने वाले दुनिया के पहले टेनिस खिलाड़ी होंगे। इससे पहले रूस के मेदवेदेव पर ऑस्ट्रेलियन ओपन के सेमीफाइनल मुकाबले के दौरान भड़कने के लिए 12 हजार अमेरिकी डॉलर का जुर्माना लगाया गया है। चार सेट की जीत के दौरान, मौजूदा यूएस ओपन चैंपियन ने चेयर अंपायर जैम कैंपिस्टल पर चिल्लाते हुए अपशब्द कहे थे।

बेन कूपर ने लिया अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास

एम्स्टर्डम। नीदरलैंड के अनुभवी ऑलराउंडर बेन कूपर ने शनिवार को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने की घोषणा की। कूपर ने दक्षिण अफ्रीका और अफगानिस्तान के खिलाफ हाल ही में नीदरलैंड्स के वनडे सुपर लीग मैचों के लिए भी खुद को अनुपलब्ध रखा था, लेकिन बाएं हाथ के बल्लेबाज के महज 29 साल की उम्र में संन्यास लेने की खबर नीदरलैंड के लिए यकीनन एक झटका है। कूपर टी-20 प्रारूप में नीदरलैंड्स के शीर्ष रन-स्कोरर हैं। उन्होंने अपने आठ साल लंबे अंतरराष्ट्रीय करियर में 58 टी-20 मैचों में 28 के औसत से 1239 रन बनाए हैं। 2013 में कनाडा के खिलाफ नीदरलैंड के लिए अपना वनडे पदार्पण करने के बाद से कूपर ने नीदरलैंड के लिए कुल 126 मैच खेले हैं।

भारतीय ग्रैंडमास्टर अर्जुन ने जीता चैलेंजर्स वर्ग का खिताब

नई दिल्ली। भारतीय ग्रैंडमास्टर अर्जुन एरिगैसी ने टाटा स्टील शतरंज टूर्नामेंट के चैलेंजर्स वर्ग का खिताब जीत लिया है। 18 वर्षीय अर्जुन ने 12 दौर के मुकाबले के बाद 9.5 अंकों के साथ बाजी अपने नाम की।

अर्जुन ने जीत के साथ ही अगले साल 2023 में होने वाले टाटा स्टील मास्टर्स टूर्नामेंट के लिए भी क्वॉलीफाई कर लिया है। भारतीय खिलाड़ी ने नीदरलैंड्स में खेले जा रहे टूर्नामेंट के 12वें दौर के मुकाबले वियतनाम के थाई डैन वैन गुयेन के साथ ड्रॉ खेला। उन्होंने एक दौर का मुकाबला शेष रहते खिताब पर कब्जा जमाया। अर्जुन ने टूर्नामेंट में 7 जीत और 5 ड्रॉ के साथ शानदार प्रदर्शन किया। वह इस जीत के साथ ही विश्व रैंकिंग के शीर्ष 100 खिलाड़ियों की सूची में शामिल हो गए हैं। अर्जुन टाटा स्टील शतरंज टूर्नामेंट के चैलेंजर्स वर्ग का खिताब जीतने वाले चौथे भारतीय खिलाड़ी हैं। उनसे पहले पी हरिकृष्णा, बी अधिबन और विदित गुजरती ने यह उपलब्धि हासिल की थी।

पाक के पूर्व तेज गेंदबाज शोएब अख्तर ने आधुनिक क्रिकेट पर निशाना साधते हुए कहा

तेंदुलकर इस दौर में खेलते तो एक लाख रन बना लेते

नई दिल्ली। पाकिस्तान टीम के पूर्व तेज गेंदबाज शोएब अख्तर ने मॉर्डन डे क्रिकेट पर निशाना साधा है। इसके पीछे का कारण ये है कि शोएब अख्तर अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के मौजूदा नियमों से खुश नहीं हैं, क्योंकि ये नियम बल्लेबाजों के पक्ष में हैं। शोएब अख्तर ने इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल को लपेटने का काम किया है, क्योंकि क्रिकेट के खेल को आईसीसी ने बल्लेबाजों के अनुकूल बना दिया है।

तीन डीआरएस, दो नई बॉल और बाउंसरों पर प्रतिबंध लगा रखा है। अख्तर ने अपने यूट्यूब चैनल पर एक और बड़ा दावा करते हुए कहा कि भारत के महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर अगर इस दौर में खेलते तो एक लाख रन बना लेते। उन्होंने कहा, आपके पास दो नई गेंदें हैं। आपने नियम सख्त कर दिए हैं। आप आजकल बल्लेबाजों को बहुत फायदा देते हैं। अब आप तीन रिव्यू (डीआरएस) की अनुमति देते हैं। अगर सचिन के जमाने में हमारे पास तीन रिव्यू होते तो वह 1 लाख रन बना लेते। पाकिस्तानी दिग्गज ने आगे कहा कि उन्हें तेंदुलकर पर दया आती है, क्योंकि उन्होंने तीन अलग-अलग पीढ़ियों के सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजों के खिलाफ खेला। हालांकि, अख्तर ने तेंदुलकर को बहुत मुश्किल बल्लेबाज भी बताया। उन्होंने कहा, मुझे वास्तव में उन पर दया आती है। मुझे सचिन पर दया आती है कि वह शुरू में वसीम अकरम और वकार यूनिस के खिलाफ खेले, उन्होंने शेन वार्न के खिलाफ खेला, फिर उन्होंने ब्रेट ली और शोएब अख्तर का सामना किया, और बाद में उन्होंने अगली पीढ़ी के तेज गेंदबाजों के खिलाफ खेला। इसलिए मैं उन्हें बहुत टफ बल्लेबाज कहता हूं। उन्होंने कहा, आजकल बहुत बल्लेबाजी के अनुकूल क्रिकेट है। इससे पहले, एक बल्लेबाज के रूप में, आप भी तेज गेंदबाजों का आनंद लेते थे, जो आपके बाल उड़ते हुए, बाउंसर करते हुए आपके पास आते थे। ये बातें उन्होंने भारतीय टीम के पूर्व मुख्य कोच से बात करते हुए कहीं।

भारत अंडर-19 विश्व के सेमीफाइनल में पहुंचा

बांग्लादेश को पांच विकेट से हराया

एंटीगुआ। भारतीय युवा टीम ने आईसीसी अंडर-19 विश्व 2022 के क्वॉर्टर फाइनल मुकाबले में बांलादेश को पांच विकेट से हराकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया।

भारतीय टीम के लिए कौशल तांबे ने छक्का जड़कर टीम को जीत दिलाई। 111 रन का पीछा करते हुए भारतीय टीम ने 117 रन पर पांच विकेट खोकर जीत दर्ज की। भारत के लिए कप्तान यश धुल ने नाबाद 20 रन व कौशल तांबे ने नाबाद 11 रन बनाए। इनके अलावा हरनूर सिंह (0), अंगकृष रघुवंशी (44), शेख रशीद (26) और सिद्धार्थ यादव (6) रन का योगदान दिया। भारत ने टॉस जीत कर पहले गेंदबाजी करते हुए गत विजेता बांग्लादेश की बल्लेबाजी की बखियां उधेड़ दी। तेज गेंदबाज रवि कुमार के सात ओवर में 14 रन पर तीन और लेफ्ट आर्म स्पिनर विक्की ओस्तवाल के नौ ओवर में 25 रन पर दो विकेट के शानदार प्रदर्शन और अन्य गेंदबाजों के योगदान से बांग्लादेश को 37.1 ओवर में महज 111 रन पर रोक दिया। बांग्लादेश की तरफ से निचले क्रम के बल्लेबाज एसएम महरोब ने सर्वाधिक 30 रन बनाए। उनके अलावा महफिजुल इस्लाम 2 रन, इफ्ताखेर हुसैन इफ्ति एक रन, प्रांतिक नवरोज 7 रन, अरिफुल इस्लाम 9 रन, कप्तान रकीबुल हसन 7 रन और आइच मोल्ला 17 रन बनाकर रन का योगदान दिया।

मिशेल स्टार्क व गार्डनर बने सर्वश्रेष्ठ ऑस्ट्रेलियाई महिला व पुरुष क्रिकेटर

स्टार्क की पत्नी एलिसा हीली तीसरी बार बनीं वनडे प्लेयर ऑफ द ईयर

प्रमुख पुरस्कार विजेता खिलाड़ी

बेलिंडा क्लार्क पुरस्कारः	एशले गार्डनर
एलन बॉर्डर मेडलः	मिशेल स्टार्क
पुरुष टेस्ट प्लेयर ऑफ द ईयरः	ट्रेविस हेड
महिला वनडे प्लेयर ऑफ द ईयरः	एलिसा हीली
मेन्स वनडे प्लेयर ऑफ द ईयरः	मिशेल स्टार्क
महिला टी20 प्लेयर ऑफ द ईयरः	बेथ मूनी
पुरुष टी20 प्लेयर ऑफ द ईयरः	मिशेल मार्श

सिडनी। इंग्लैंड के खिलाफ घरेलू एशेज सीरीज में शानदार प्रदर्शन करने वाले ऑस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज मिशेल स्टार्क और महिला टीम की एशले गार्डनर को सर्वश्रेष्ठ ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट पुरस्कारों से नवाजा गया है, जो 2021 के लिए देश के प्रमुख पुरुष और महिला खिलाड़ी बनकर उभरे हैं। स्टार्क को वनडे प्लेयर ऑफ द ईयर का अवार्ड भी दिया गया था। उन्होंने ऑलराउंडर मिशेल मार्श को एक अंक से हराकर प्लेयर ऑफ द ईयर मेडल जीता।

स्टार्क की पत्नी और स्टार विकेटकीपर बल्लेबाज एलिसा हीली को तीसरी बार वर्ष की सर्वश्रेष्ठ वनडे क्रिकेटर का पुरस्कार मिला। स्टार्क दिग्गज ग्लेन मैकग्राथ, ब्रेट ली, मिशेल जॉनसन और पैट कमिंस के बाद इस सम्मान को हासिल करने वाले पांचवें ऑस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज बने। पिछले साल जनवरी में भारत के खिलाफ घरेलू सीरीज के निराशाजनक अंत के बाद, ऑस्ट्रेलियाई टेस्ट टीम में स्टार्क पर सवाल खड़े हो रहे थे। लेकिन एशेज में मौका मिलने के बाद, उन्होंने एक यादगार वापसी की, स्टार्क ने पांच टेस्ट मैचों में 25.36 से 19 विकेट लिए। कुल मिलाकर, स्टार्क ने पिछले साल में सभी प्रारूपों में 24.4 के औसत से 43 विकेट लिए। महिला टीम से ऑलराउंडर गार्डनर ने बेथ मूनी पर सात वोटों के अंतर से बेलिंडा क्लार्क पदक जीता।

नए लुक में नजर आए वॉशिंगटन सुंदर

नई दिल्ली। भारत के स्पिन बॉलिंग ऑलराउंडर वॉशिंगटन सुंदर ने शनिवार को सोशल मीडिया पर अपनी एक नई तस्वीर से सभी चौंका दिया। इस नई तस्वीर में सुंदर ने बालों का मुंडन करवा रखा है। इस तस्वीर में वह एक बड़ी चट्टान पर बैठे हुए हैं। उन्होंने पूरी तरह तमिल कपड़े पहने हुए हैं। इस तस्वीर के साथ उन्होंने सुपरस्टार रजनीकांत की फिल्म शिवाजी द बॉस की फिल्म का डायलॉग साझा किया है। उन्होंने तमिल में लिखा है जिसका हिंदी में अर्थ है- क्यों हिला डाला ना।

आनंद का अर्धशतक व रूपेश ने झटके चार विकेट

भोपाल। दैनिक भास्कर ने टाइम्स ऑफ इंडिया को छह विकेट से हराकर 27वें आईईएस-डिजिआना इंटर प्रेस क्रिकेट टूर्नामेंट के एलीट ग्रुप के फाइनल में प्रवेश कर लिया है। एलीट ग्रुप में फाइनल में पहुंचने वाली दूसरी टीम पीपुल्स है। वहीं प्लेट ग्रुप के सेमीफाइनल में नेशनल स्पोर्ट्स टाइम्स (एनएसटी) ने डिजिआना को तीन रनों से हराया। इस जीत से एनएसटी भी फाइनल में प्रवेश कर गया है। ओल्ड कैंपियन मैदान पर खेली जा रही इस प्रतियोगिता में दिन के पहले मैच में टीओआई ने 18 ओवर में आठ विकेट पर 128 रन बनाए। इसमें नितिन ने 45 और अक्षय ने 30 रन बनाए। भास्कर की ओर से रुपेश राय ने चार विकेट झटके। जवाब में दैनिक भास्कर ने जरूरी रन 13.5 ओवर में चार विकेट पर बना लिए। इसमें आनंद रजक ने 52, आरके युदवंशी ने 21 और रुपेश राय ने अविजित 16 रन बनाए। अक्षय को तीन विकेट मिले। दूसरे मैच में एनएसटी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 18 ओवर में नौ विकेट पर 136 रन बनाए। अरविंद पाटीदार ने 33 और जावेद हमीद ने 23 रन बनाए। धर्मेंद्र और आशीष ने 2-2 विकेट लिए। जवाब में डिजिआना टीम 18 ओवर में दो विकेट पर 133 रन बना पाई। उसकी ओर से आशीष ने 58 तथा गजेंद्र ने 41 रन बनाए।

13 फरवरी से शुरू हो सकती हैं रणजी ट्रॉफी

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने रणजी ट्रॉफी 2022 की तारीखों का ऐलान कर दिया है। पिछले साल कोरोना महामारी के कारण टूर्नामेंट का आयोजन नहीं किया गया था और इस बार इसे 13 जनवरी से शुरू करने की योजना थी, लेकिन देश में तीसरी लहर को देखते हुए इसे अनिश्चितकाल तक के लिए स्थगित कर दिया गया था। हालांकि अब बीसीसीआई अध्यक्ष सौरव गांगुली ने खुद बताया है कि रणजी ट्रॉफी 2022 की शुरुआत कब से होगी। बोर्ड प्रमुख के अनुसार, बीसीसीआई 13 फरवरी से टूर्नामेंट को शुरू करने का मन बना रहा है। उन्होंने साथ ही कहा कि टूर्नामेंट के फॉर्मेट में कोई बदलाव नहीं होगा। गांगुली ने टूर्नामेंट के शुरू होने की तारीख स्पोर्ट्स स्टार से बातचीत में कन्फर्म की। उन्होंने कहा कि सभी टीमों को 5 ग्रुप में बांटा जाएगा। हर ग्रुप में 6 टीम होगी। जबकि प्लेट ग्रुप में 8 टीमें होंगी। गांगुली ने कहा, हम मिड- फरवरी से रणजी ट्रॉफी शुरू करने की योजना बना रहे हैं। यह तारीख 13 फरवरी हो सकती है।

मुश्किल दौर को याद करते हुए मिशेल स्टार्क ने कहा, मैं बिलकुल भी क्रिकेट नहीं खेलना चाहता था

मेलबर्न। ऑस्ट्रेलिया का वर्ष का सर्वश्रेष्ठ पुरूष क्रिकेट पुरस्कार जीतने वाले तेज गेंदबाज मिशेल स्टार्क ने कहा कि वह एक समय ऐसी स्थिति में थे कि इस खेल को छोड़ने की कगार पर पहुंच गये थे। स्टार्क जिस काबिलियत के तेज गेंदबाज हैं, उसके हिसाब से वह उम्मीदों के अनुरूप विकेट नहीं ले पा रहे थे। वह मैदान पर काफी रन भी लुटा रहे थे। वहीं मैदान के बाहर उनके पिता भी कैंसर से जूझ रहे थे। फिर भी स्टार्क 2020-21 टेस्ट श्रृंखला में भारत के खिलाफ लचर प्रदर्शन के बावजूद क्रिकेट में बने रहने में सफल रहे। हालांकि इसके बाद कैंसर के कारण अपने पिता को गंवा दिया। स्टार्क ने एलेन बॉर्डर पुरस्कार हासिल करने के बाद फॉक्सस्पोर्ट्स डॉट कॉम डॉट एयू से कहा, निश्चित रूप से पिछला साल मैदान के अंदर और बाहर बहुत ही मुश्किल रहा। उस कठिन दौर के बारे में उन्होंने कहा, मैं शायद उस तरह का क्रिकेट नहीं खेल रहा था जो मैं खेलना चाहता था और एक समय ऐसा भी था जब मैं शायद बिलकुल भी क्रिकेट नहीं खेलना चाहता था। पर एशेज श्रृंखला में इंग्लैंड पर 4-0 की जीत के दौरान वह टीम के लिये शानदार प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों में से एक रहे। स्टार्क सभी पांचों एशेज टेस्ट खेले और उन्होंने 19 विकेट झटके। यह पुरस्कार जीतने वाले स्टार्क पांचवें गेंदबाज हैं जिससे वह पैट कमिंस, मिशेल जॉनसन, ब्रेट ली और ग्लेन मैकग्रा के साथ इस सूची में शामिल हो गये हैं।

भोपाल की माउंटेनियर ज्योति रात्रे एवं तनिश गुर्जर ने एवरेस्ट बेस केम्प पर फहराया तिरंगा

भोपाल। आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में माइनस 28 डिग्री से. की कड़ाके की सर्दी में भोपाल की माउंटेनियर ज्योति रात्रे ने 17598 फीट की ऊंचाई पर स्थित एवरेस्ट बेस केम्प पर तिरंगा फहराकर फिर एक बार अपनी हिम्मत एवं हौसले का लोहा मनवा लिया। इस बार उनके साथ भोपाल के ही उनके भतीजे तनिश गुर्जर साथ में गए थे। श्रीमती ज्योति रात्रे भोपाल की 53 वर्षीय माउंटेनियर हैं। इसके पूर्व गत वर्ष यूरोप की सबसे ऊंची चोटी माउंट एल्ब्रूस 18510 फीट पर विजय प्राप्त करनेवाली भारत की सर्वाधिक आयु की महिला होने का गौरव प्राप्त कर चुकी हैं। ज्योति का सपना विश्व के सातों महाद्वीपों की सबसे ऊंची पर्वत चोटियों को फतह करने का है जिसमें से वे दो पर विजय प्राप्त कर चुकी हैं। मध्य प्रदेश शासन एवं अन्य प्रायोजकों से इसके लिए आर्थिक सहयोग की अपेक्षा है।

नोबल स्कूल बना सैम लीग चैम्पियन

भोपाल। सैम ग्लोबल यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित इंटर स्कूल टेनिस बाल क्रिकेट प्रतियोगिता सैम क्रिकेट लीग का फाईनल मुकाबला नोबल स्कूल, भोपाल और कृष्णा वैली, मंडीदीप के बीच खेला गया, जिसमें नोबल स्कूल ने प्रशांत के 53 रनों की मदद से 4 विकेट के नुकसान पर 102 रन बनाये।

कृष्णा वैली की ओर से अंचित ने 2 विकेट लिए। 103 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी कृष्णा वैली की टीम 4 विकेट के नुकसान पर 77 रन बना सकी। यह मैच नोबल स्कूल ने 25 रनों से जीत कर सैम क्रिकेट लीग 2022 के खिताब पर कब्जा जमाया। इस आयोजन के समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण के मुख्य अतिथि रामेश्वर शर्मा, विधायक हुजुर विधानसभा द्वारा विजेता टीम-नोबल स्कूल को 11,000 रुपए नगद एवं ट्रॉफी और उपविजेता कृष्णा वैली स्कूल को 7,000 रुपए नगद एवं ट्रॉफी प्रदान की गई। इस प्रतियोगिता में मैक्सिमम सिक्सर प्रशांत (नोबल), बैस्ट बैट्समैन स्वयं (नोबल), बैस्ट बालर अंचित (कृष्णा वैली), मैन ऑफ द सिरीज प्रशांत (नोबल) एवं अन्य पुरस्कार वितरित किये गये। इस आयोजन में अतिथि के रूप में प्रदीप पाटीदार, भाजपा मंडल अध्यक्ष, अनिकेत पाण्डे विधायक प्रतिनिधि, अशोक नंदा, चेयरमैन, इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल विशेष तौर पर उपस्थित रहे। सैम ग्रुप के वाईस चेयरमैन अविराज चावला ने प्रतियोगिता में भाग लेने वाली सभी टीमों को बधाई दी।

डीजीपी इलेवेन 44 रनों से जीता

भोपाल। रबीन्द्रनाथ टैगोर यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित तृतीय आरएनटीयू चैम्पियन्स ट्रॉफी 2022 के गवर्नमेंट ग्रुप में डीजीपी इलेवेन व नगर निगम इलेवेन के बीच मैच खेला गया। डीजीपी ईलेवेन के बल्लेबाज प्रज्ञा बलरे के 31 गेंद पर 65 रन, संदीप के 21 गेंद पर 34 रन की मदद से 20 ओवर में 7 विकेट खोकर 215 रनों का विशाल स्कोर खड़ा किया। नगर निगम इलेवेन के गेंदबाज फरहाद हसन 4 ओवर में 30 रन देकर 4 विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी नगर निगम ईलेवेन के बल्लेबाज रवि नरवारा के 28 गेंद पर 56 रन की मदद से 18.5 ओवर में आउट होकर 171 रन ही बना सकी। डीजीपी इलेवेन के गेंदबाज शुभम चौहान व विपिन ने 3-3 विकेट झटके। डीजीपी इलेवेन ने यह मैच 44 रनों से जीत लिया। डीजीपी इलेवेन के गेंदबाज शुभम चौहान को शानदार गेंदबाजी के लिए विश्वविद्यालय के उपकुलसचिव ऋत्विक चौबे और स्पोर्ट ऑफिसर सतीश अहिरवार के हाथों मैन ऑफ द मैच दिया गया।

मतदान कर्मियों के प्रथम प्रशिक्षण को लेकर अधिकारियों के साथ डीएम ने की बैठक

भदोही। मतदान कार्मिकों के प्रथम प्रशिक्षण के लिए शनिवार को जिला निर्वाचन अधिकारी व जिला मजिस्ट्रेट आर्यका अखौरी ने प्रभारी अधिकारियों के साथ कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक की। डीएम ने समीक्षा के दौरान अधिशासी अधिकारी नगर पालिका परिषद भदोही व प्रभारी अधिकारी को निर्देश दिया कि सेंण्ट थॉमस स्कूल ज्ञानपुर में साफ-सफाई, भूतल, पेयजल व्यवस्था, प्रत्येक दिन मुख्य सड़क से लेकर गेट तक दोनों तरफ चूना का छिड़काव करायें एवं जगह-जगह पर डस्टबीन रखवाएं, तथा टैंकर पानी की व्यवस्था सुनिश्चित कराए।

उन्होंने अधिशासी अभियंता लोक निर्माण विभाग व प्रभारी अधिकारी को टैण्ट, फर्नीचर एवं प्रकाश की व्यवस्था, वैक्सीनेशन सेन्टर हेतु पण्डाल, कोविड हैल्प डैस्क, मेडिकल टीम के पण्डाल, वैक्सीनेशन प्रमाण पत्र हेतु काउण्टर बनाने का निर्देश दिया। स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा के दौरान मतदान कार्मिकों के प्रशिक्षण के दिन कोविड-19 के संबंध में पोस्टर एवं बैनर आदि प्रशिक्षण स्थल पर लगाना, प्रत्येक मतदान कार्मिक एवं अन्य अधिकारी व कर्मचारी की थर्मल स्कैनिंग की व्यवस्था, प्रत्येक पाली में 720 मतदान कार्मिक, अतः आवश्यकतानुसार मास्क की व्यवस्था, कुल कार्मिक 4207 है। जिला पंचायत राज अधिकारी को निर्देश दिया कि सभी प्रशिक्षण पालियों का वीडियोग्राफी एवं सीडी तैयार कराकर सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी को उपलब्ध करायें। जिला निर्वाचन अधिकारी ने प्रधानाचार्य सेंण्ट थॉमस स्कूल ज्ञानपुर को निर्देशित किया कि प्रत्येक कक्ष में पीपीटी के संचालन हेतु प्रोजेक्टर एवं अन्य सामाग्रियों को चेक कराकर क्रियाशील अवस्था में सुनिश्चित कराएं। प्रत्येक कक्ष में पीपीटी चलाने के लिए अपने अध्यापक या आपरेटर को कक्षवार नियुक्त करना, जिससे पीपीटी चलाने में कोई दिक्कत न हो साथ ही उपकरण की सुरक्षा बनी रहे। जनरेटर चेक करा लिया जाए, सभी कमरों में जनरेटर एवं विद्युत कनेक्शन को चेक करा लें, जिससे निर्वाध रूप से विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित की जाएं। डीएम ने सभी अधिकारियों को निर्देशित किया कि किसी भी स्तर पर लापरवाही क्षम्य नही होगी। बैठक के बाद अपर जिलाधिकारी न्यायिक अनिल कुमार सिंह ने सम्बन्धित अधिकारियों के साथ सेंण्ट थॉमस स्कूल ज्ञानपुर का स्थलीय निरीक्षण कर अधिकारियों को निर्देश दिया कि प्रशिक्षण हेतु सुदृढ़ ढ़ंग से सभी मूलभूत सुविधाएं मुहैया करायी जाए।

इस मौके पर उप निदेशक कृषि अरविंद कुमार सिंह, परियोजना अधिकारी मनोज कुमार राय, जिला विद्यालय निरीक्षक नन्दलाल, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी भूपेन्द्र नारायण सिंह, जिला पूर्ति अधिकारी सीमा सिंह, जिला सूचना अधिकारी डॉ.पंकज कुमार एवं सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहें।

एसपी ने थाना चौरी का किया वार्षिक निरीक्षण

भदोही। पुलिस अधीक्षक डॉ. अनिल कुमार ने शनिवार को थाना चौरी का वार्षिक निरीक्षण किया गया। थाना कार्यालय व परिसर आदि का निरीक्षण के दौरान उन्होंने संबंधितों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिया। एसपी ने थाने का निरीक्षण के दौरान थाना कार्यालय के विभिन्न रजिस्टरों, अभिलेखों के रख-रखाव, माल-खाना, शस्त्रागार व महिला हेल्प-डेस्क आदि का अवलोकन किया। उसके बाद उन्होंने थाना परिसर का भ्रमण कर परिसर, बैरक, मेस व शौचालय आदि की साफ-सफाई का निरीक्षण कर सम्बन्धित को आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया। थाना परिसर में खड़े वाहनों के नियमानुसार निस्तारण कराने तथा विवेचकों को लंबित विवेचनाओ के समयबद्ध निस्तारण के लिए निर्देशित किया गया। साथ ही आगामी विधानसभा चुनाव के दृष्टिगत पुलिस की तैयारियों व कार्रवाई व निर्गत आदेशों-निदेशों के शत-प्रतिशत अनुपालन के लिए सख्त निर्देश दिए गए। इस मौके पर थानाध्यक्ष चौरी, पीआरओ व वाचक पुलिस अधीक्षक तथा थाना चौरी के अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

वैक्सीन का सत्यापन कर रहे शिक्षक को युवकों ने पीटा, तीन पर केस दर्ज

बदलापुर (जौनपुर)। कोतवाली क्षेत्र के नरेंद्रपुर गांव में शनिवार को कोविड-19 टीकाकरण के सत्यापन का कार्य कर रहे शिक्षक की गांव के कुछ युवकों ने पिटाई कर दी। जिसका वीडियो वायरल होते ही पुलिस हरकत में आ गई। घटना से आक्रोशित शिक्षकों ने थाने पर पहुंचकर आरोपितों के गिरफ्तारी की मांग की।

क्षेत्र के देवरिया गांव निवासी रारी कला प्राथमिक विद्यालय के सहायक अध्यापक राजबहादुर यादव की ड्यूटी नरेंद्रपुर गांव में टीकाकरण के सत्यापन के लिए लगाई गई थी। निर्धारित समय पर पहुंचकर वह एएनएम के साथ टीकाकरण कार्य का सत्यापन कर रहे थे। इसी बीच गांव के कुछ युवक पहुंचकर शिक्षक से घर पर चलकर सत्यापन व टीकाकरण करने की बात कहने लगे। जब शिक्षक ने कहा कि हमारी ड्यूटी जहां लगी है वहीं सत्यापन करेंगे।

इसी बात को लेकर युवकों ने शिक्षक की पिटाई शुरू कर दी। जिसका वीडियो इंटरनेट मीडिया पर वायरल हो गया। थोड़ी देर में सीएचसी के अधीक्षक डा. संजय दुबे मौके पर पहुंचकर घटना की जानकारी ली। उधर, खबर लगते ही खंड शिक्षा अधिकारी नरेंद्रदेव मिश्र सहित शिक्षकों की भीड़ थाने पर पहुंची और सभी कार्रवाई किए जाने की मांग करने लगे। शिक्षक द्वारा दी गई तहरीर के आधार पर पुलिस संजय तिवारी, आयुष तिवारी व पवन तिवारी पर केस दर्ज कर आवश्यक कार्रवाई में जुट गई है।

पूर्व मंत्री रंगनाथ मिश्र ने हाथी की रफ्तार धीमी देख पकड़ा कमल

भदोही। पूर्व मंत्री रंगनाथ मिश्र से शनिवार को बसपा से इस्तीफा दे दिया। वे अब भाजपा में शामिल हो गए। 17 साल बाद उनकी भाजपा में वापसी हुई है। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह ने उनको भाजपा की सदस्यता ग्रहण कराई। विधानसभा चुनाव के समय पूर्व मंत्री रंगनाथ मिश्र का भाजपा में शामिल होने से अब कयास लगाए जा रहा है कि वे भाजपा की टिकट से भदोही विधानसभा से चुनाव लड़ सकते हैं। उनके भाजपा में शामिल होने के बाद भदोही से भाजपा विधायक रविंद्र नाथ त्रिपाठी की मुश्किले बढ़ गई।

पूर्व मंत्री रंगनाथ मिश्र पहले भाजपा में ही थे। उन्होंने भाजपा की टिकट से 1993, 1996 व 2002 में औराई विधानसभा से चुनाव लड़ा था। 1993 व 1996 में उनको जीत हासिल हुई थी। लेकिन 2002 के विधानसभा चुनाव में वे हार गए थे। उसके बाद 2005 में वे बसपा में शामिल हो गए थे। 2005 के उपचुनाव व 2007 के विधानसभा चुनाव में वे बसपा के टिकट से

मैदान में उतरे और जीत हासिल की। रंगनाथ मिश्र भाजपा और बसपा की सरकार में मंत्री रहे। औराई विधानसभा सुरक्षित हो जाने के बाद बसपा ने 2012 का विधानसभा चुनाव उनको मिजार्पुर से लड़ाया। लेकिन वे चुनाव हार गए। 2017 के विधानसभा चुनाव में बसपा ने उनके भदोही विधानसभा से अपना प्रत्याशी बनाया। उस चुनाव में भी उनको सफलता नहीं मिली थी। 2019 के लोकसभा चुनाव में सपा-बसपा के साथ गठबंधन हुआ। भदोही लोकसभा सीट बसपा के खाते में गई तो बसपा ने पूर्व मंत्री रंगनाथ मिश्र पर दांव खेला। लेकिन उनको हार का सामना करना पड़ा। लगातार हार के बाद वे घर वापसी करने की कोशिश में लगे रहे। चुनाव के समय उन्होंने बसपा से इस्तीफा दे दिया और भाजपा में शामिल हो गए। उन्होंने अपने इस्तीफे में कहा कि 2012 में सत्ता से विमुख होने के बाद दल लगातार अपने सैद्धांतिक वसूलों से भटकते चला गया। पार्टी के तमाम कार्यकर्ता दल से अलग हो गए। दलित, पिछड़ा, अतिपिछड़ा और सामान्य वर्ग आज बसपा में उपेक्षित महसूस कर रहा है। बचे हुए कार्यकताओं की पूर्व रूप में उपेक्षा हो रही है। इसी कारण से दल में रहकर अपने लोगों के हक की आवाज उठाना मुश्किल हो रहा है। जिसके चलते आज मैं बसपा की प्राथमिक सदस्यता से त्यागपत्र देता हूं।

हिंद मजदूर किसान पंचायत ने पुण्यतिथि पर दी स्व. जार्ज फर्नांडिस को श्रद्धांजलि

भदोही। हिंद मजदूर किसान पंचायत द्वारा पूर्व केंद्रीय मंत्री स्व.जार्ज फर्नांडिस की चौथी पुण्यतिथि नगर के बकुचिया मोहल्ले में मनाई गई। जहां पर उनके चित्र पर मजदूर नेताओं ने माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर संगठन के प्रदेश अध्यक्ष हसनैन अंसारी ने कहा कि शोषणविहीन समाज की स्थापना के लिए लोहिया के तीन सूत्र थे। वोट, फावड़ा और जेल। यह संसदीय लोकतंत्र, रचनात्मक काम और संघर्ष के प्रतिक है। जिसे जार्ज फर्नांडिस प्रभावी ढंग से अपने आचरण में लाने में सफल रहे। उन्होंने बैंकों से कर्ज लेने में गरीबों को होने वाली मुश्किलों को दूर किया। बांबे लेबर को-ऑपरेटिव बैंक की स्थापना की। मुंबई के 50 हजार से अधिक टैक्सी चालकों को टैक्सी मालिक बनाने में मदद की। उन्होंने कहा कि जार्ज लोकतंत्र, मानवाधिकार, स्वदेशी के पक्ष में और उपनिवेशवाद, गैरबराबरी, परिवारवाद, भ्रष्टाचार, शोषण तथा अन्याय के विरुद्ध संघर्षों में साढ़े पांच साल जेल में काटे। 1974 की एतिहासिक रेल हड़ताल ने उन्हें विश्व स्तर के मजदूर नेता के रूप में स्थापित कर दिया। श्री अंसारी ने कहा कि आपातकाल में सोशलिस्ट पार्टी के अध्यक्ष रहते हुए उन्होंने गिरफ्तारी संघर्ष किया। आपातकाल के दौरान बरोड़ा डायनामाइट केस में राजद्रोह के अभियुक्त के तौर पर 1977 में चुनाव मुजफ्फरपुर से जेल से ही लड़कर जीते। जेपी के बाद लोग जार्ज फर्नांडिस को याद करते हैं। इस मौके पर छेदी गौरिया, मोइद्दीन, मंगरु, मो.हारून, शेर अली, विपत, नेहालुद्दीन, सरफराज अहमद, हसमुद्दीन, कन्हैयालाल आदि मौजूद रहे।

बीसी सखी नियुक्त होने ग्रामीणों को मिलेगी सहूलियतः सूरज सिंह

प्रखर खेतासराय (जौनपुर)। उत्तर प्रदेश सरकार ने महिलाओं को रोजगार उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से अनेक योजना की शुरूआत की है इसमें एक नाम बैंकिंग कॉरेस्पॉन्डेंट सखी (बीसी सखी योजना) योजना रखा गया है। इस योजना के द्वारा महिलाओं को उत्तर प्रदेश सरकार रोजगार का एक बड़ा अवसर प्रदान कर रही है। विकास खण्ड मार्टीनगंज क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम पंचायत आमगांव में रविवार को एक बीसी सखी कार्यालय का शुभारंभ समाजसेवी ने फीता काटकर किया।

समाजसेवी सूरज सिंह ने ग्राम पंचायत आमगांव में बीसी कार्यालय का शुभारंभ करते हुए कहा ग्रामीणों को सहूलियत मिलेगी। बीसी सखी नियुक्त होने से अब गांवों के लोगों की बैंकिंग की सुविधा मिल सकेगी। बीसी सखी को पार्दर्शितापूर्व एवं भ्रष्टाचार मुक्त तरीके से अपने कार्यों का निर्वहन करने की भी सीख दी। मनरेगा मजदूर की मजदूरी, पीएम किसान सम्मान निधि, दिव्यांग, विधवा, वृद्धा पेंशन के लाभार्थियों को गांव में ही बैंकिंग की सुविधा मिलेगी। इस अवसर पर ग्राम प्रधान बब्लू यादव, डा. रामचन्द्र मौर्य, श्रवण मौर्य, आकाश सिंह, परमात्मा मौर्य आदि लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम के नियुक्त बीसी सखी बिनीता मौर्या ने आगन्तुको के प्रति आभार व्यक्त की।

एसडीएम व कोर्ट का फर्जी मुहर व हस्ताक्षर बनाने का राजफाश

जौनपुर। प्रशासन की नाक के नीचे कलेक्ट्रेट गेट पर फर्जी मुहर व हस्ताक्षर बनाने वाले का राजफाश हो गया। यह कार्रवाई ज्वाइंट मजिस्ट्रेट हिमांशु नागपाल के नेतृत्व में शनिवार को छापेमारी के दौरान की गई। इस दौरान करीब 220 मुहर बरामद हुए। इस दौरान संबंधित थाने लाइन बाजार व सदर कोतवाली में 420 का मुकदमा दर्ज कराकर कार्रवाई की जा रही है। कलेक्ट्रेट गेट के सामने एक गुमटी पर लेखपाल किसी काम से गए तो वहां देखा कि एसडीएम कार्यालय की मुहर पड़ी है। देखा तो एक पत्र पर मुहर भी लगाई गई थी।

इसके बाद उसने तुरंत जानकारी एसडीएम सदर व ज्वाइंट मजिस्ट्रेट हिमांशु नागपाल को दिया। संज्ञान में लेते हुए हिमांशु नागपाल ने पुलिस के साथ गुमटी की जांच की। इस दौरान 200 मुहर मिली। यह बिना परमिशन के एसडीएम, थाने, कोर्ट की बनाई गई थी। जहां में पता चला कि यह मुहर लगाने के बाद फर्जी हस्ताक्षर करा दिया जाता है। इसके बाद उस दुकानदार को पुलिस के हवाले कर दिया गया। उन्होंने नखास में पहुंचकर भी एक दुकानदार पर छापेमारी की, जहां से भी 20 मुहर मिली। प्रशासन की इस कार्रवाई से फर्जी मुहर बनाने वालों में खलबली मच गई है।

यूपी में जंगलराज कायम, कानून व्यवस्था ध्वस्त : अरविन्द पटेल

दोषियों पर जल्द से जल्द किया जाए कार्रवाई

जौनपुर। जिले में सरदार सेना सामाजिक संगठन के द्वारा जिला मुख्यालय पर प्रशासनिक अधिकारी को ज्ञापन सौंपा गया इस दौरान जिलाध्यक्ष अरविन्द कुमार पटेल ने कहा कि आरआरबी-एनटीपीसी रिजल्ट में हुए धांधली को लेकर अभ्यर्थियों के प्रदर्शन के बीच उत्तर प्रदेश के प्रयागराज व बिहार प्रान्त के विभिन्न जगहों पर जो पुलिस प्रशासन द्वारा छात्रों के साथ घातक रवैया किया गया वह निदंनिय और दुर्भाग्यपूर्ण है। इस मुद्दे को लेकर सरदार सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. आर. एस. पटेल के निर्देश पर सरदार सेना कार्यकताओं द्वारा महामहिम राष्ट्रपति को संबोधित प्रदेशव्यापी ज्ञापन सौंपने का कार्य किया गया।जिलाध्यक्ष अरविन्द कुमार पटेल ने कहा कि यूपी के प्रयागराज में हॉस्टल में घुसकर दरवाजा तोड़कर छात्रों के साथ जो ताडंव किया गया वह बर्दाश्त नहीं है। जिलाध्यक्ष ने कहा कि उत्तर प्रदेश पूरी तरह से जंगल राज कायम हो गया है कानून नाम की कोई चीज ही नहीं रह गई है

आपको ज्ञात हो कि उत्तर प्रदेश व बिहार में सबसे ज्यादा युवा हैं और यहां बेरोजगारी की दर भी सबसे ज्यादा है। सरकारें उनके लिए नौकरियों का वादा करती तो हैं लेकिन जब वे नौकरी की मांग को लेकर सड़कों पर उतरते हैं तो सरकारों द्वारा उन पर लाठियां बरसायी जाती है। सरदार सेना ने शुक्रवार को बिहार बंद के आह्वान का समर्थन भी किया था। इसलिए इस मुद्दे को लेकर सरदार सेना सामाजिक संगठन द्वारा सरकार से निम्न पांच मांग किया जा रहा है।

1. आरआरबी-एनटीपीसी रिजल्ट में हुए धांधली की तत्काल जांच किया जाय
2. आरआरबी एनटीपीसी अभ्यर्थियों पर हुए हिटलरशाही पुलिसिया लाठीचार्ज पर योगी-मोदी जवाब दो
3. अभ्यर्थियों के कट आफ के साथ पुनः रिजल्ट जारी किया जाय
4. ग्रुप डी में 2 परीक्षा पीटी एंव मेंस का तुगलगी वापस लिया जाय
5. रेलवे के निजीकरण पर तत्काल रोक लगाई जाय

वहीं दूसरी तरफ विगत 21 जनवरी दिन शुक्रवार उत्तर प्रदेश के जनपद बुलंदशहर में छतारी थाना अन्तर्गत धौरऊ गांव में हुए 16 वर्षिय पिंकी लोधी के साथ सामूहिक दुष्कर्म के बाद हत्या मामले में पुलिस द्वारा मामले की लिपापोती करने को लेकर सरदार सेना ने महामहिम राज्यपाल महोदय को संबोधित 3 सूत्रीय ज्ञापन सौंपा। जानकारी हेतु आपको बता दें कि दिनांक 21 जनवरी दिन शुक्रवार को समय शाम 03.00 बजे पशुओं हेतु खेत में चारा काटने गयी 16 वर्षिय किशोरी को 4 बदमाशों ने अगवा करके उसके साथ सामूहिक दुष्कर्म के पश्चात गोली मारकर हत्या कर दी। जिसमें गांव के ही सौरव शर्मा पुत्र राजेश शर्मा, शिवम शर्मा पुत्र महेन्द्र शर्मा निवासी धौरऊ तथा दो अज्ञात व्यक्तियों का नाम शामिल है। उसका अपहरण करके सामूहिक दुष्कर्म के बोद गोली मारकर हत्या कर दिया। यहां तक कि पुलिस मामले को दबाने में लगी है। महोदय उत्तर प्रदेश में व्याप्त जंगलराज चरम सीमा पर हैं बेटियां बिल्कुल सुरक्षित नहीं हैं। इस मुद्दे को लेकर सरदार सेना द्वारा निम्न 3 मांग किया जाता है।

1. बालात्कारियों को जल्द से जल्द सजा-ए-फांसी दी जाय, 2. मृतक के परिवार को उचित मुआवजा दिया जाय, 3. परिवार के कम से कम एक सदस्य को सरकार नौकरी दी जाय।इस दौरान धीरज कुमार यादव, अवधेश कुमार मौर्य,अमर बहादूर चौहान,रविशंकर यदुवंशी,मोहन विश्वकर्मा सहित कई लोग मौजूद रहे

संक्षिप्त खबरें

एम्बुलेंस चालक ने रास्ते में कराया प्रसव

प्रखर पिंडरा वाराणसी। एक बार एम्बुलेंस कर्मियों ने अपने अनुभव से प्रसव पीड़ित महिला का एम्बुलेंस में सुरक्षित प्रसव कराया। बताते है कि फूलपुर के रघुनाथपुर निवासी आजाद की गर्भवती पत्नी मनीषा को प्रसव पीड़ा होने पर एम्बुलेंस से पीएचसी ले जा रहे थे तभी रास्ते में रात्रि साढ़े 11 बजे प्रसव पीड़ा तेज होने पर परिजनों की मदद से एम्बुलेंस चालक सोमेंद्र सिंह व श्रीप्रकाश यादव ने सुरक्षित प्रसव कराया। प्रसव के दौरान पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई। जिससे दम्पति में खुशी दिखी।

पीएम की मन की बात को भाजपा कार्यकर्त्ताओं ने सुना

प्रखर खेतासराय(जौनपुर)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के रेडियो पर प्रसारित 'मन की बात' को स्थानीय बीजेपी कार्यकताओं ने भाजपा नेता संजय विश्वकर्मा के प्रतिष्ठान पर बैठकर सुना। पीएम का संबोधन शिक्षा, कोरोना, गणतंत्र दिवस सहित कई टॉपिक पर रहा। महीने की अंतिम रविवार को होने वाला मन की बात का यह 85 वा एपिसोड था। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति के विविध रंगों और आध्यात्मिक शक्ति ने हमेशा से दुनियाभर के लोगों को अपनी ओर खींचा है.. इस मौके पर मुख्य रूप से व्यापार मण्डल अध्यक्ष संजय विश्वकर्मा, सभासद मनीष गुप्ता, जगदम्बा पांडेय, आदर्श श्रीवास्तव, सत्यम गुप्ता, अनिल प्रजापति,राजकेशर, हरिओम बरनवाल,आकाश विशवकर्मा, आकाश सोनी,अतुल गुप्ता,नौशाद ,शिवा बरनवाल समेत अन्य लोग उपस्थित रहे।

तेंदूई के गोरखनाथ ने धोबिया पाट मारकर बनाया

प्रखर मिजार्मुराद वाराणसी। क्षेत्र के पतेरवा (तेंदुई) गांव में स्व.रामराज पांडेय, रामदेव पहलवान , बिजुली पहलवान व रामदुलार के स्मृति में विराट कुश्ती दंगल का उदघाटन रविवार को आराजी लाइन ब्लॉक के ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि डा.महेंद्र सिंह पटेल ने फीता काटते हुए पहलवानों का हाथ मिलाकर शुभारम्भ किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डा.महेंद्र सिंह पटेल ने कहा कि ग्रामीण परिवेश में ऐसे कुश्ती का आयोजन समय-समय पर होने से पहलवानों का मनोबल बढ़ता है। देश का गौरव आज पहलवानों के कन्धे पर है जो शासन -प्रशासन के बीच रहकर अपनी कुश्ती का प्रदर्शन करते है। यह देश के लिए गौरव की बात है।कुश्ती दंगल में बीस हजारी कुश्ती गोरखनाथ पाल (तेंदुई) व विजय कुमार (मुगलसराय) के बीच हुआ। जिसमें गोरखनाथ ने धोबिया पाट मारकर चित करते हुये तेंदुई का गौरव बढ़ाया। वही कुश्ती दंगल में मंगलाबीर, जगापट्टी,डीएलडब्ल्यू,मुर्दहा, तेन्दुई, ककरहिया, चौबेपुर,डुहिया, छाहि, मुंगवार, कछवां, मिजार्पुर,चक्का,चमाव सहित आदि जगहों के सैकड़ो पहलवानों की कुश्ती हुयी। जिसमें अधिकतर कुश्तीयां बराबरी पर रही।सबसे बड़ी कुश्ती बीस हजार की हुयी । दंगल में चंद्रबली पटेल,मुन्ना पटेल, गयादीन पांडेय,अवधेश यादव,घनश्याम यादव ग्राम प्रधान जगापट्टी, हंसराज गिरी, हीरालाल पाल, रामधनी यादव, गुड्डन यादव , राहुल यादव सहित आदि लोगों का सहयोग सराहनीय रहा।कुश्ती संयोजक राजकुमार पाण्डेय व मुन्ना पटेल ने आये हुए पहलवानों व अतिथियों का माल्यार्पण कर साफा बांधकर सम्मानित किया।संचालन राजकुमार पांडेय ने किया।

पचहत्तर करोड़ बार सूर्य-नमस्कार का लक्ष्य पूरा

प्रखर जौनपुर। अखिल भारतीय स्तर पर किये जानें वाले पचहत्तर करोड़ बार सूर्य-नमस्कार को करनें का लक्ष्य हासिल करनें के उपरांत इस अभियान में लगे योग प्रशिक्षकों का स्वागत और अभिनन्दन रविवार को किया गया। पतंजलि योग समिति के प्रान्तीय सह प्रभारी और सूर्य-नमस्कार के राज्य समन्वयक अचल हरीमूर्ति के नेतृत्व में पचहटियां स्थित हरीमूर्ति वाटिका में इस अभियान में लगे योग प्रशिक्षकों को संबोधित करते हुए बताया गया की लक्ष्य को हासिल करनें के उपरांत भी सूर्य-नमस्कार को हम सभी को जन जन तक निरन्तर पहुंचाते रहना है, और जब भी कोई व्यक्ति इसे अपने जीवनशैली का हिस्सा बना लेगा तो उसके शरीर के हर तंत्र बहुत ही सुगमतापूर्वक कार्य करना शुरू कर देते हैं। श्री हरीमूर्ति ने बताया कि आसनों का समूह सूर्य-नमस्कार तब और भी प्रभावी हो जाता है, जब इसके साथ नियमित और निरन्तर भस्त्रिका, कपालभाति, अनुलोम-विलोम, भ्रामरी और उद्गीथ प्राणायामों के साथ कम से कम दस मिनट तक मेडिटेशन को किया जाये। इस मौके पर भारत स्वाभिमान के जिला प्रभारी शशिभूषण,डा हेमंत, शंभूनाथ, ज्ञान प्रकाश, गुरुनाथ, नन्दलाल, प्रेमचंद, डा ध्रुवराज, इन्द्रभान, संतोष, विकास, आशुतोष, रविन्द्र,स्वदेश, श्रीप्रकाश, सतीश सहित अन्य साधक उपस्थित रहे।

सरदार सेना प्रमुख ने कहा यूपी के प्रयागराज में हॉस्टल में घुसकर दरवाजा तोड़कर छात्रों के साथ जो ताडंव किया गया वह बर्दाश्त नहीं है

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी । आरआरबी-एनटीपीसी रिजल्ट में हुए धांधली को लेकर अभ्यर्थियों के प्रदर्शन के बीच उत्तर प्रदेश के प्रयागराज व बिहार प्रान्त के विभिन्न जगहों पर जो पुलिस प्रशासन द्वारा छात्रों के साथ घातक रवैया किया गया वह निदंनिय और दुर्भाग्यपूर्ण है। इस मुदे को लेकर सरदार सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. आर. एस. पटेल के निर्देश पर सरदार सेना कार्यकताओं द्वारा महामहिम राष्ट्रपति को संबोधित प्रदेशव्यापी ज्ञापन सौंपने का कार्य किया गया। सरदार सेना प्रमुख ने कहा कि यूपी के प्रयागराज में हॉस्टल में घुसकर दरवाजा तोड़कर छात्रों के साथ जो ताडंव किया गया वह बर्दाश्त नहीं है।

आपको ज्ञात हो कि उत्तर प्रदेश व बिहार में सबसे ज्यादा युवा हैं और यहां बेरोजगारी की दर भी सबसे ज्यादा है। सरकारें उनके लिए नौकरियों का वादा करती तो हैं लेकिन जब वे नौकरी की मांग को लेकर सड़कों पर उतरते हैं तो सरकारों द्वारा उन पर लाठियां बरसायी जाती है। वाराणसी जनपद में भी सरदार सेना के जिलाध्यक्ष डा. आर. के. वर्मा के नेतृत्व में राजातालाब तहसील में एसडीएम महोदय को राष्ट्रपति को संबोधित पांच सूत्रीय ज्ञापन सौंपा तथा कहा कि सरदार सेना ने शुक्रवार को बिहार बंद के आह्वान का समर्थन भी किया था। इसलिए इस मुदे को लेकर सरदार सेना सामाजिक संगठन द्वारा सरकार से निम्न पांच मांग किया जा रहा है।

1. आरआरबी-एनटीपीसी रिजल्ट में हुए धांधली की तत्काल जांच किया जाय`

2. आरआरबी एनटीपीसी अभ्यर्थियों पर हुए हिटलरशाही पुलिसिया लाठीचार्ज पर योगी-मोदी जवाब दो`

3. अभ्यर्थियों के कट आफ के साथ पुनः रिजल्ट जारी किया जाय`

4. ग्रुप डी में 2 परीक्षा पीटी एंव मेंस का तुगलगी वापस लिया जाय`

5. रेलवे के निजीकरण पर तत्काल रोक लगाई जाय`

वहीं दूसरी तरफ विगत 21 जनवरी दिन शुक्रवार उत्तर प्रदेश के जनपद बुलंदशहर में छतारी थाना अन्तर्गत धौरऊ गांव में हुए 16 वर्षिय पिंकी लोधी के साथ सामूहिक दुष्कर्म के बाद हत्या मामले में पुलिस द्वारा मामले की लिपापोती करने को लेकर सरदार सेना ने महामहिम राज्यपाल महोदय को संबोधित 3 सूत्रीय ज्ञापन सौंपा। जानकारी हेतु आपको बता दें कि दिनांक 21 जनवरी दिन शुक्रवार को समय शाम 03.00 बजे पशुओं हेतु खेत में चारा काटने गयी 16 वर्षिय किशोरी को 4 बदमाशों ने अगवा करके उसके साथ सामूहिक दुष्कर्म के पश्चात गोली मारकर हत्या कर दी। जिसमें गांव के ही सौरव शर्मा पुत्र राजेश शर्मा, शिवम शर्मा पुत्र महेन्द्र शर्मा निवासी धौरऊ तथा दो अज्ञात व्यक्तियों का नाम शामिल है। उसका अपहरण करके सामूहिक दुष्कर्म के बोद गोली मारकर हत्या कर दिया। यहां तक कि पुलिस मामले को दबाने में लगी है। महोदय उत्तर प्रदेश में व्याप्त जंगलराज चरम सीमा पर हैं बेटियां बिल्कुल सुरक्षित नहीं हैं। इस मुद्दे को लेकर सरदार सेना द्वारा निम्न तीन मांग किया जाता है -1. बालात्कारियों को जल्द से जल्द सजा-ए-फांसी दी जाय, 2. मृतक के परिवार को उचित मुआवजा दिया जाय, 3. परिवार के कम से कम एक सदस्य को सरकार नौकरी दी जाय।

इस अवसर पर संगठन के जिला उपाध्यक्ष अजीत पाल जी, जिला उपाध्यक्ष युवा संघ वैभव गौड़ , महेंद्र वर्मा जिला कोषाध्यक्ष , अमन वर्मा जिला उपाध्यक्ष, रामप्यारे पटेल जिला महासचिव दिनेश पटेल जिला महासचिव प्रदीप पटेल जिला उपाध्यक्ष तथा हम सबके गार्जियन स्वरूप बड़े भैया नरेंद्रल उपस्थित रहे।

आर एस एम टी और इंडियन बैंक के बीच 15 -15 ओवर का खेला गया क्रिकेट मैच

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। स्वच्छता खेलोत्सव और मतदान जागरूकता के अंतर्गत रविवार को आर एस एम टी और इंडियन बैंक के बीच 15 -15 ओवर का क्रिकेट मैच खेला गया। सबसे पहले महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर दो मिनट का मौन रखकर उन्हें नमन करते हुए श्रीद्धाञ्जली दी गई। पहले बैटिंग करते हुए आर एस एम टी ने 111 रन बनाए। जिसके जवाब में इंडियन बैंक 95 रनों पर आल आउट हो गई। मैच के मुख्य अतिथि इंडियन बैंक के चीफ मैनेजर श्री राजेन्द्र सिंह और अति विशिष्ठ अतिथि अंतर्राट्रीय फुटबॉलर मुस्ताक अली , यू पी एस ए के सचिव और उत्तर प्रदेश फुटबॉल टीम के मैनेजर सत्येन्द्र बहादुर ,डॉ मेजर अरविन्द कुमार सिंह जी,और इंडियन बैंक के

वरिष्ठ ब्रांच मैनेजर राम अवतार ,चीफ मैनेजर राजीव तिवारी ,जनार्दन यादव, राकेश चंद्रा, प्रभात यादव,इंडियन बैंक,राष्ट्रीय खिलाड़ी राजेश दोहरी ,सुधेन्दु राय सहित अनेको खेल प्रेमी मौजूद रहे। मैन ऑफ मैच और बेस्ट बैट्समैन का खिताब संजय सिंह को मिला। बेस्ट बॉलर का खिताब इंडियन बैंक के आदी को मिला जिन्होंने 3 विकेट झटके। आर एस एम टी के प्रभारी प्रो.अमन गुप्ता ने अतिथियों का स्वागत और उन्हें स्मृति चिन्ह प्रदान किया।आर एस एम टी क्रिकेट टीम के कप्तान और प्रतियोगिता के संयोजक अनुराग सिंह ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।इस अवसर पर आनंद मोहन, विनय कुमार, सुजीत, महेश, राणा, शिवम, बिमल, सौरभ, नीरज आदि सभी शिछकगण और बैंक कर्मी भी योगदान देते हुए मौजूद रहे।

शाहगंज से आजमगढ़ तक जल्द दौड़ेगी इलेक्ट्रिक ट्रेन

प्रखर शाहगंज (जौनपुर)। जौनपुर जनपद की सबसे बड़ी तहसील शाहगंज से मंडल मुख्यालय आजमगढ़ के बीच रेलवे का विद्युतीकरण जांच में दुरूस्त पाया गया है। जल्द ही इस रूट पर इलेक्ट्रिक इंजन का संचालन होने लगेगा। पूर्वोत्तर और उत्तर रेलवे का बड़ा जंक्शन स्टेशन है शाहगंज रेलवे स्टेशन ।

यह स्टेशन पड़ोसी जनपद आजमगढ़, अंबेडकर नगर, सुल्तानपुर और अयोध्या मंडल मुख्यालय से एकदम सटा हुआ है। यहां प्रतिदिन डेढ़ दर्जन ट्रेनों का ठहराव और हजारों की संख्या में यात्रियों का आवागमन होता है।

पूर्वोत्तर रेलवे परिमंडल के संरक्षा आयुक्त मो. लतीफ खान ने आजमगढ़-शाहगंज के बीच विद्युतीकरण का निरीक्षण किया। उसके बाद 110 किलोमीटर की रफ्तार से विद्युत ट्रेन दौड़ा गई, जिसने 41 मिनट में 57 किलोमीटर दूरी तय कर ली। रेल संरक्षा आयुक्त ने सबसे पहले

जनपद आजमगढ़ रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया। विद्युत उपकेंद्र, वायर, पैदल उपरिगामी पुल, प्लेटफार्म क्लियरेंस आदि को देखा। उन्होंने पाया कि सभी कार्य मानक के अनुरूप हैं। मंडल रेल प्रबंधक वाराणसी रामाश्रय पांडेय, मुख्य विद्युत इंजीनियर एके शुक्ला, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण) राजीव कुमार, राहुल श्रीवास्तव स्टेशन अधीक्षक डीबी सिंह मौजूद रहे। उसके बाद संरक्षा आयुक्त टावर वैगन से आजमगढ़-फरिहा ब्लाक सेक्शन का निरीक्षण किया। आजमगढ़-फरिहा रेल खंड पर ओवर हेड विद्युत लाइन क्रासिंग का माप किया। फरिहा स्टेशन का निरीक्षण किया और विद्युतीकरण का काम देखा। सरायमीर के पावर सब स्टेशन पहुंचे पर जाकर बिजली का काम देखा। खुरासन रोड रेलवे स्टेशन और शाहगंज के पावर सब स्टेशन पहुंचे पर जाकर विद्युतीकरण के काम की जांच की। विद्युतीकरण के अनुरूप समपार फाटकों बूम लॉक व हाइट गेजों का परीक्षण किया।

आईटीबीपी जवानों के साथ खेतासराय पुलिस ने अतिसंवेदनशील गांवों में किया रुट मार्च

प्रखर खेतासराय (जौनपुर)। विधानसभा चुनाव के मद्देनजर चुनाव आयोग ने भयमुक्त मतदान के लिए रुट मार्च तेज कर दिया है। अतिसंवेदनशील बूथों पर शांतिपूर्ण मतदान के लिए सोमवार को कई गांवों में आईटीबीपी जवानों की तीन प्लाटून के साथ खेतासराय पुलिस ने फ़्लैग मार्च किया। भरोसा दिलाया कि भयमुक्त मतदान करें, अराजकतत्वों पर पैनी निगाह है उन्हें चिन्हित कर कार्रवाई की जा रही है। रविवार की दोपहर आईटीबीपी के डीएसपी दिनेश नीघि व एसओ श्रीप्रकाश रॉय के साथ केंद्रीय सशत्र पुलिस बल और स्थानीय पुलिस के जवान जमदहा, सीधा व जैगहा में फ़्लैग मार्च किया। पुलिस ने लोगों से अपील करते हुए कहा कि बिना किसी प्रलोभन और बिना भय के मतदान करें। ग्रामीणों को आश्वस्त किया कि अराजकतत्वों की गतिविधियों के बारे में जरूर अवगत कराएं, पुलिस प्रशासन आपके साथ खड़ा है। यह रुट मार्च गांव के विभिन्न मार्ग से होते हुए अन्य गांवों के लिए रवाना हो गई। एसओ श्रीप्रकाश रॉय ने मीडियाकर्मियों से बातचीत करते हुए कहा कि चुनाव को भय मुक्त कराने के लिए अराजकतत्वों को चिन्हित किया जा रहा है, मतदान में खलल डालने वालों पर कड़ी कार्यवाही की जाएगी। चुनाव आयोग की कवायद का कितना असर पड़ेगा ये तो आने वाला समय बताएगा लेकिन भारी पुलिस बल के साथ चक्रमण गांवों में तरह तरह की चर्चाओ को जन्म दे रही है। समाचार लिखें जाने तक केंद्रीय सशत्र पुलिस बल के जवानों का रूट मार्च जारी रहा।

भारी पुलिस बल को देखकर ग्रामीण हुए भयभीत- खेतासराय। तय कार्यक्रम से आधे घण्टे पूर्व खेतासराय थाने की पुलिस बल जमदहा बाजार पहुँची तो लोग एकबारगी में सकते में आ गए, आखिर इतनी भारी संख्या में पुलिस क्यों इकट्ठा है? चूंकि यह गांव सुरक्षा की दृष्टि से बेहद अतिसंवेदनशील है। लोग तरह तरह की चचाएं शुरू कर दी।जब तीन सेक्शन आईटीबीपी के जवानों के साथ थोड़ी देर में पहुँचे,उन्हें बताया गया कि विधानसभा चुनाव के मद्देनजर नजर रुट निकाला जा रहा है,तब जाकर लोगों ने राहत की सांस लिया।

एसपी के निर्देशन में दुर्गागंज थाना क्षेत्र में फ्लैग मार्च

भदोही। पुलिस अधीक्षक के निर्देशन व थानाध्यक्ष दुगार्गंज के नेतृत्व में केंद्रीय बल सहित स्थानीय पुलिस द्वारा थाना दुगार्गंज क्षेत्र में शनिवार को फ्लैग मार्च किया गया। फ्लैग मार्च कर जवानों ने आमजन को सुरक्षा का एहसास कराया। उत्तर प्रदेश आगामी विधानसभा निर्वाचन-2022 को शांतिपूर्ण एवं सकुशल संपन्न कराए जाने को दृष्टिगत रखते हुए पुलिस अधीक्षक डॉ.अनिल कुमार जिले के सभी थानों को निर्देश दिया है। एसपी के निर्देशन में थानाध्यक्ष दुगार्गंज रामदरश के नेतृत्व में असिस्टेंट कमांडर सीआरपीएफ राजेश श्रीवास मय पुलिस बल एवं पैरामिलिट्री फोर्स (सीआरपीएफ) के साथ थाना दुगार्गंज क्षेत्र अंतर्गत थाना स्थानीय से बाजार दुगार्गंज, नवलपुर, करनपुर, रेलवे स्टेशन सरायकंशराय, हरदुआ, रामनगर चौराहा, भागीरथीपुर, गोपीपुर से थाना दुगार्गंज तक फ्लैग मार्च व एरिया डोमिनेशन किया गया।

भाकियू जिला कार्यकारिणी की मासिक बैठक संपन्न

प्रखर अहरौरा मिजार्पुर। भारतीय किसान यूनियन जिला इकाई मिजार्पुर कार्यकारिणी की बैठक जिला कोषाध्यक्ष स्वामी दयाल सिंहजीके आवास पर हुई जिसकी अध्यक्षता प्रभात सिंह ने किया और संचालन जिला महासचिव वीरेंद्र सिंह ने किया जिसमें संगठन के विस्तार पर चर्चा की गई और घाटमपुर ग्राम इकाई का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष पवनेंद्र कुमार बिंद को मनोनीत किया गया साथ साथ क्षेत्र की समस्याओं को रखा गया जो निम्न है

1. जनपद के धान क्रय केंद्रों पर जहा 1कांटे लगे हैं 300 और 2 कांटे पर 600 कुंतल खरीद का मानक रखा गया था ,जो अब कम खरीद किया जा रहा है।

2. ग्राम घाटमपुर से बरबकपुर गेट तक निकास की नाली अवरुद्ध हैं उसकी सफाई कराई जाए।

3.सिंचाई खंड चुनार अंतर्गत भागवत ब्रांच से निकली नाली कुलावा नंबर 4 कुदारन से घाटमपुर सरहद तक शक्तिनगर वाराणसी स्टेट हाईवे से सटा नाली पूर्ण रूप से अवरुद्ध है जो एक मात्र सिंचाई का साधन हैं, जिससे किसानों के सिंचाई नहीं हो पाती है, इसकी सफाई कराई जाए।

4. जनपद के सभी तहसीलों पर राष्ट्रीय नेतृत्व के अहवाहन पर 31/01/ 2022 को विश्वासघात दिवस के रूप में मनाते हुए राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपा जाएगा।

5. जनपद के क्रय केंद्रों पर बोरे के अभाव में खरीदारी नहीं हो पा रही है, आवश्यकतानुसार बोरे की व्यवस्था की जाए।

6. जनपद में 2019 20में23 किसानों का2324.600 कुंटल धान का मूल्य 4265641रू का भुगतान नहीं हो पाया है ,इस संबंध में 15 दिसंबर 2021 के ज्ञापन में ही यह बात दर्शाई गई थी जिसका अभी तक निस्तारण नहीं हो पाया है किसानों के धान खरीद का बकाया भुगतान अविलंब कराया जाय।

7. जिन किसानों का धान खरीद का नंबर लगा हुआ है उसका खरीद सुनिश्चित कराया जाए।

जिसमें प्रदेश सचिव सिद्धनाथ सिंह, प्रदेश सचिव प्रहलाद सिंह, जिलाध्यक्ष कंचन सिंह फौजी, जिला महासचिव वीरेंद्र सिंह, जिला कोषाध्यक्ष स्वामी दयाल सिंह ,युवा जिलाध्यक्ष राजेश कुमार सिंह, जिला उपाध्यक्ष अवधेश सिंह, किसान सेना नायक परशुराम मौर्य ,धर्मेंद्र सिंह तहसील अध्यक्ष चुनार, राम सूरत सिंह, मोहम्मद अलाउद्दीन, महेंद्र सिंह, ब्लॉक अध्यक्ष नारायणपुर रामबृक्ष सिंह, अजय सिंह, अरविंद सिंह तहसील सचिव, मुकुट धारी सिंह ,विश्वनाथ सिंह, पंचम सिंह ,कमलेश कुमार सिंह, प्रकाश लाल, हौसला प्रसाद सिंह, चंदन सिंह ,सुजीत कुमार सिंह, कुलदीप सिंह, अमरनाथ ,लक्ष्मण, घूरे लाल, चंद्रभान,जैसलाल।

भाजपा हवाई चप्पल वालो को हवाई जहाज में सफर कराने के नाम पर दिया धोखा भाजपा के कार्यकर्ता खुद हवाई चप्पल पर आ गये - शशि प्रताप सिंह

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। सुभासपा को प्रदेश प्रवक्ता शशि प्रताप सिंह ने पीसीएफ प्लाजा नदेसर कैंप कार्यालय पर किया पत्रकार वार्ता पत्रकार वार्ता के दौरान शशिप्रताप सिंह ने बताया कि सुभासपा का मतलब सुभ+सपा=सुभासपा । सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी पूरे प्रदेश में गठबंधन के साथ 403 विधानसभा चुनाव पर मजबूती से लड़ रही है सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी दो दर्जन सीटों पर अपना प्रत्याशी उतारेगी यह आपसी तालमेल है बनारस जिले में 2 सीट हमारे प्रत्याशी लड़ेंगे अजगरा और शिवपुर 6 सीट पर गठबंधन के प्रत्याशी लड़ेंगे लेकिन हम लोग 08 सीट अपना सीट समझ कर बूथ स्तर पर बूथ को मजबूत करने के लिए डोर टू डोर काम कर रहे हैं भारतीय समाज पार्टी अपने मुद्दे पर अडिग है और उसी मुद्दे पर वह चुनाव लड़ेगी `गठबंधन की सरकार घरेलू बिजली 300 यूनिट मुफ्त गरीबो को देने के लिये बचनबद्ध है,जातिवार जनगणना 6 महीने में शुरू करेगी ,गरीबो की इलाज फ्री में हो सरकारी प्राइवेट हॉस्पिटल में इसका कानून बनाएगी। अनिवार्य शिक्षा लागू होगा सभी को स्कूल जाना ही होगा। सरकारी और प्राइवेट स्कूल का एक मानक तय किया जाएगा सरकारी के लिये ट्रैक्टर और समरसेबुल पंप पर से राजकीय टैक्स कम किया जाएगा।पुरानी पेंसन व्यवस्था फिर से लागू किया जाएगा। 65 साल के ऊपर वाले को निःशुल्क तीर्थ यात्रा का कानून लाया जाएगा।महिला बेटी को सभी सरकारी बसों में यात्रा करने

स्कुलो को भी सभी सुविधाओं से सृजित किया जाएगा`1 से 12 तक निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा कानून लागू किया जाएगा। महिला बेटी की सुरक्षा के लिये महिला पुलिस महिला थाना को बढ़या जाएगा।किसान के लिये खाद पर सब्सिडी की व्यवस्था कर सस्ता तथा न्यूनतम मूल्य पर सिचाई के लिये विजली दिया जाएगा। किसानों पर 50 प्रतिशत की छूट की व्यवस्था बनाई जाएगी। सरकारी रिक्त पदों को तत्काल नियुक्ति कर भरा जाएगा।प्रधान जिलापंचायत नगरनिगम बीडीसी के चुनाव में महिला 50 प्रतिशत भागीदारी सुनिश्चित किया जाएगा।बृद्धा दिव्यांग विधवा पेंसन 500 से बढ़ाकर 1500 किया जाएगा।किसान खेत मे आकस्मिक मौत पर 6 लाख का बीमा किया जाएगा।सूखा बाढ़ राहत सहयोग किसानों के खाते में सीधे भेजा जाएगा।पुलिस विभाग को बॉडर प्रतिबंध हटाया जाएगा।सभी स्कूलों के अंदर मेडिकल चिकित्सा अनिवार्य किया जाएगा लड़कियों को साइकिल, लैपटॉप, एंडोरिराइड मोबाइल भी हाई स्कूल के बच्चों को दिया जाएगा। शशि प्रताप सिंह ने बताया कि भाजपा हवाई चप्पल वालो को हवाई जहाज में सफर कराने के नाम पर धोखा दिया भाजपा के कार्यकर्ता खुद हवाई चप्पल पर आ गये पूरे उत्तर प्रदेश की जनता इनको हवाई जहाज से सड़क पर लाने का काम कर दिया है 10 मार्च तक इनलोगो की घर वापसी तय है कोरोना काल में इन लोगों ने आम जनमानस को जिस तरह पैदल चलाकर मारने का काम किया उसी तरह जनता भी इनको पैदल चला रही है आज गृह मंत्री मुख्यमंत्री सब पैदल हो गए है घर घर हाथ जोड़ रहे है। ऐसा काम ही मत करो कि घर घर हाथ जोड़ना पड़े।

हार्दिक पटेल पहुंचे वाराणसी केंद्र सरकार से लेकर योगी सरकार को दी बड़ी चुनौती कहा- वापस जाने का समय आ गया है

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। हार्दिक पटेल पहुंचे वाराणसी केंद्र सरकार से लेकर योगी सरकार को दी बड़ी चुनौती कहा- वापस जाने का समय आ गया है` कांग्रेस के गुजरात प्रदेश अध्यक्ष हार्दिक पटेल रविवार को प्रयागराज से वाराणसी पहुंचे, जिसके बाद काशी विश्वनाथ मंदिर में दर्शन करने के साथ-साथ चौक स्थित गली में जाकर गुजराती व अन्य समाज के लोगों से उन्होंने मुलाकात की । धर्म के सवाल पर हार्दिक पटेल ने कहा कि - गुजरात में उनके घर में राम जी की मूर्ति है जहां गोरखनाथ मंदिर से भी ज्यादा भक्त वहां पर आते हैं। कोविड नियमों की उड़ रही धज्जियां पर उन्होंने कहा कि इस समय चुनाव नहीं कराने चाहिए थे , क्यूंकि चुनाव प्रचार के दौरान कोविड नियमों का पालन कर पाना मुमकिन नहीं कानून व्यवस्था पर बोलने से बचते नजर आए हार्दिक ने यह भी कहा कि स्मार्ट सिटी के साथ-साथ स्मार्ट विलेज पर भी सरकार को ध्यान देना चाहिए ।

वाराणसी में कांग्रेस पदाधिकारियों से मुलाकात को अहम बताते हुए कहा कि पीएम बनारस के बारे में जो कहते है उसको देखने के लिए यहाँ आया हूं लेकिन यहां की जमीनी हकीकत कुछ और ही है ,केवल दिखावा हुआ है इसके अलावा यूपी की जनता बहुत दुखी है और आने वाले चुनाव में इसका हिसाब जनता जरूर लेगी।

संक्षिप्त खबरें

कांग्रेस पार्टी के वादे जुमले नहीं होते : लालता चौधरी

लालता चौधरी नें घर-घर जा कर किया जनसंपर्क

प्रखर जौनपुर। कांग्रेस पार्टी के द्वारा किये गये सभी वादे पूरे होते है मैं मौजूदा सरकार की तरह जुमला नही देते उक्त बातें केराकत मण्डल अध्यक्ष व भावी 372 विधानसभा केराकत प्रत्याशी लालत चौधरी नें जनता से जनसम्पर्क के दौरान कही ! केराकत विधानसभा प्रत्याशी लालता चौधरी नें कहा कि कांग्रेस सरकार आने पर सभी बेरोजगारों, नौजवानों, माताओं बहनों,किसान भाइयों को हमारी पार्टी द्वारा दिये गये लिखित घोषणा पत्र के अनुसार सभी वादा पूरा किया जायेगा ! मौजूदा सरकार में किसानों का जहाँ बुरा हाल है वहीं भ्रष्टाचार चरम पर है सरकार बस अखबारों में विकास कर रही है जमीन पर कुछ नही ! लालता चौधरी नें महिलाओं से पूछा कि सरसो का तेल कितने रुपए। गैस सरकार ने फ्री दी है पर 1000 का सिलेंडर कौन भरवाएगा इस लिए आप सभी केराकत विधानसभा के लोग एक होकर सात मार्च को होनें वाले मतदान में बढ़चढ़ कर हिस्सा लें और कांग्रेस पार्टी की सीट निकालें। सुरेंद्र प्रताप यादव के नेतृत्व में कई गावों में जन सम्पर्क किया गया। इस मौके पर डाक्टर अमरबली भाष्कर, मोहम्मद इकबाल शेख, किशोर मिस्त्री, धर्मराज चक्रवर्ती, जय प्रकाश यादव, मनी यादव, राम चन्दर, बच्चन लाल,लालता प्रशाद निषाद, पप्पू भाई, उपस्थित रहे।

बारात में आए युवक की बाइक चोरी

प्रखर बलिया। कोतवाली थाना क्षेत्र के तुलसी उत्सव वाटिका कदम चौराहा के पास से बरात में सम्मिलित होने आए बिहार के सिवान जिले के एक युवक की स्प्लेंडर बाइक की चोरी कर ली गई। बताते चलें कि युवक अपनी बुआ की लड़की की शादी में आया हुआ था। शादी संपन्न होने के बाद जब वह अपने बाइक के पास पहुंचा तो वहां उसकी बाइक नहीं दिखी काफी खोजबीन के बाद बाइक नही मिला। वही युवक धर्मेंद्र कुमार सोनी ने ऑनलाइन एफ आई आर दर्ज कराई है।

निष्पक्ष मतदान व शांति व्यवस्था के लिए सिंधोरा पुलिस ने निकाला फ्लैग मार्च

प्रखर पिंडरा वाराणसी। विधान सभा चुनाव को पुलिस प्रशासन द्वारा निष्पक्ष चुनाव के लिए कमर कस ली है। रविवार को सिंधोरा थाना क्षेत्र के विभिन्न बाजारो व कस्बो में भ्रमण कर लोगों को निष्पक्ष और निर्भीक होकर मतदान करने के लिए प्रेरित किया। सीआरपीएफ के प्लाटून कमांडर रविकांत हलधर, सिंधोरा इंस्पेक्टर सुनील सिंह के नेतृत्व मे गरखडा, जाठी, हिरामनपुर, बरवा, सहमलपुर, झझौर, ओदार,राजपुर, मुर्दी, गरथमा , महँगाव, भरतपुर, रूपचन्दपुर, व सिंधोरा तक निकले फ्लैग मार्च के दौरान लोगों को निर्भीक होकर मतदान करने के साथ अराजक तत्वों के बाबत सूचना देने की अपील की और आम जनमानस में सुरक्षा का एहसास कराया गया । दर्जनो पुलिसकर्मी , सीआरपीएफ के जवान के अलावा क्षेत्रों के एक दर्जन से अधिक उप निरीक्षक शामिल रहे।

महाराजा सुहेलदेव जयंती समारोह 5 की

प्रखर पिंडरा वाराणसी। प्रान्त स्तरीय महाराजा सुहेलदेव राजभर जयंती समारोह आगामी 5 फरवरी को खालिसपुर स्थित सुहेलदेव राजभर पंचायत भवन पर सुबह 10 बजे से होगी। इस दौरान गीत संगोष्ठी के साथ समाज के मेधावी छात्रों का सम्मान होगा। उक्त जानकारी आयोजक राजकुमार राजभर ने दी।

पति के साथ दवा लेने जा रही महिला को ट्रक ने रौंदा

प्रखर जौनपुर। सड़क हादसे में एक महिला की दर्दनाक मौत हो गई। महिला बाइक पर पति के साथ इलाज कराने के लिए जा रही थी और फिसलकर नीचे गिरी और ट्रक के नीचे जा पहुंची। दुर्घटना में महिला गंभीर रूप से घायल हो गई थी जिसे इलाज के लिए जिला अस्पताल लाया गया। उपचार के दौरान महिला ने दम तोड़ दिया। जौनपुर के विशेषरपुर मोहल्ले के निवासी गुड्डू रविवार की सुबह अपनी पत्नी आरती को इलाज के लिए ककोरगहना ले जा रहे थे। बाइक सवार दंपति अपनी लेन में बाइक चलाते हुए जा रहे थे। तभी अचानक पत्नी आरती अनियंतत्रित होकर बाइक से नीचे सड़क पर गिर गई। पीछे से तेज रफ्तार से आ रहे ट्रक के नीचे चली गई। आरती गंभीर रूप से घायल हो गई। इस दौरान मौके पर स्थानीय लोगों की भीड़ जुट गई। गंभीर रूप से घायल आरती देवी को इलाज के लिए जिला चिकित्सालय लाया गया। उपचार के दौरान ही आरती देवी ने दम तोड़ दिया। दुर्घटना की सूचना पर परिजन अस्पताल पहुंच गए। मौत की सूचना से परिवार में कोहराम मचा हुआ है। मृत आरती देवी चार बच्चों की मां है। इस संदर्भ में पूछे जाने पर थाना प्रभारी लाइन बाजार अखिलेश मिश्र ने बताया की महिला के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। मृतक के परिजनों द्वारा यदि ट्रक चालक के खिलाफ लिखित तहरीर मिलती है तो मुकदमा दर्ज कर विधिक कार्यवाई की जाएगी।

प्रखर पूर्वांचल
RNIUPHIN/2016/68754
मुद्रक प्रकाशक 'पंकज सिंह' के लिए सम्पादक 'अरूण सिंह'
द्वारा 'गायत्री प्रिंटिग प्रेस'
सकलेनाबाद नियर दुर्गा चौक, गाजीपुर पिन कोडः 233001
से छपवाकर कनेरी गाजीपुर से प्रकाशित
सम्पादकीय कार्यालयः 9/10, टैगोर मार्केट, कचहरी, गाजीपुर पिन कोडः 233001
सम्पर्क सूत्रः 0548-2223833, +91-8858563779 +91-9450208067, +91-9452844802
सभी विवाद गाजीपुर न्यायालय के अधीन होगें।
ताजा खबर पढ़ने के लिए लॉगइन करें हमारी वेबसाइट
https://prakharpurvanchal.com
Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com
सांध्य दैनिक प्रखर पूर्वांचल अखबार के सभी पद अवैतनिक हैं